वर्ष 12 अंक 34

दिसम्बर, 2015

जनेपन्यास
JNPT

अभिव्यक्ति

(जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास की गृह पत्रिका)

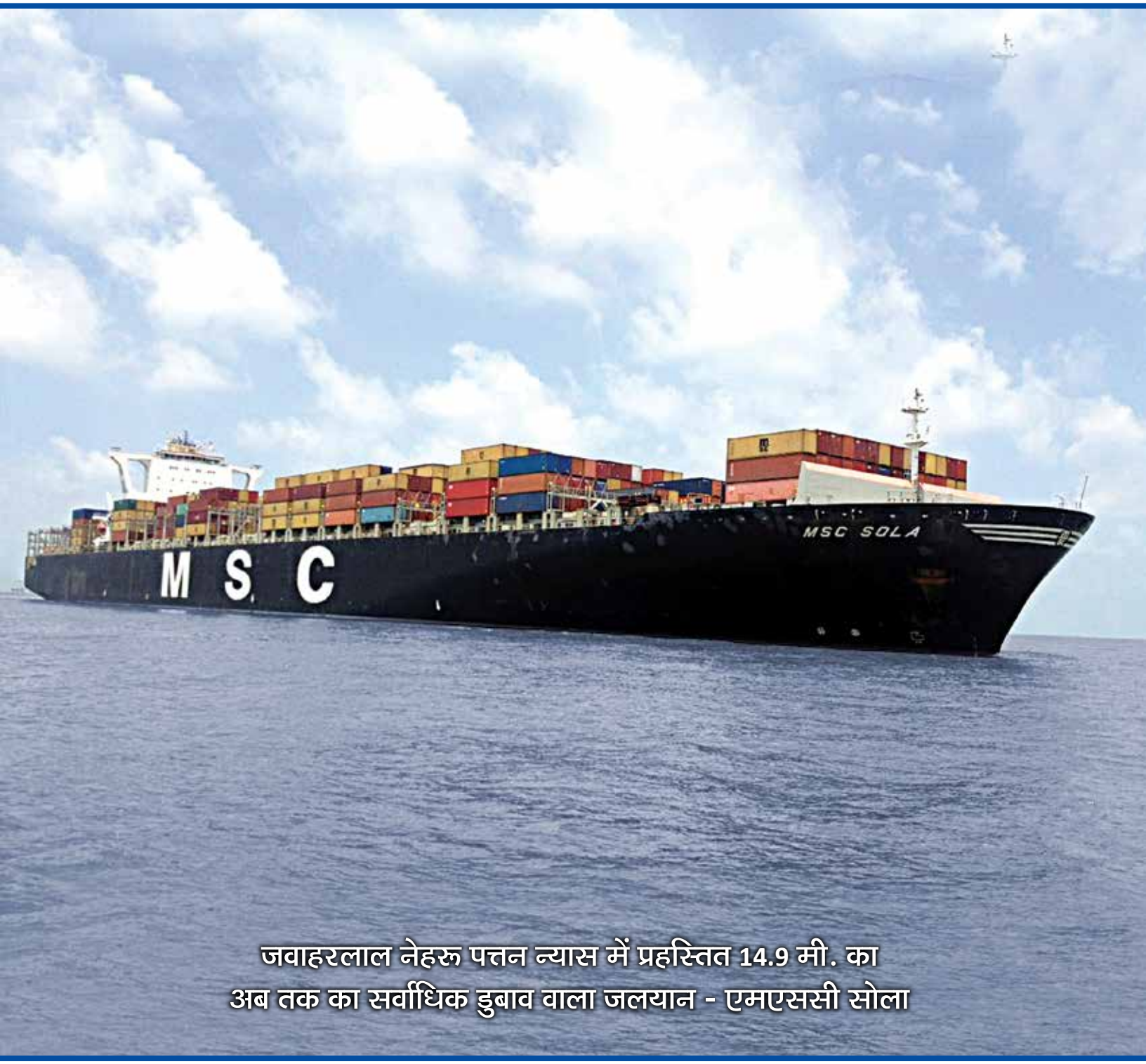

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में प्रहस्तित 14.9 मी. का
अब तक का सर्वाधिक डुबाव वाला जलयान - एमएससी सोला

जनेप न्यास के चौथे कंटेनर टर्मिनल के शिलान्यास के अवसर पर आयोजित समारोह की झलकियाँ

✿ नमामि गंगे ✿

पुनाति कीर्तिता पापं दृष्टा भद्रं प्रयच्छति ।
अवगाढा च पीता च पुनात्यासप्तमं कुलम् ।।

(महाभारत, वनपर्व - 85/93)

अर्थ - गंगा अपना नाम उच्चारण करने वाले के पापों का नाश करती हैं, दर्शन करने वालों का कल्याण करती हैं तथा स्नान-पान करने वालों की सात पीढ़ियों तक को पवित्र करती हैं ।)

संरक्षक

श्री अनिल डिग्गीकर,
आई.ए.एस.
अध्यक्ष

श्री नीरज बंसल, *आई.आर.एस.*
उपाध्यक्ष

मार्गदर्शक

श्री डी. नरेश कुमार
मुख्य प्रबंधक (प्रशासन) एवं सचिव

श्री एन. के. कुलकर्णी
प्रबंधक (प्रशासन) तथा
राजभाषा अधिकारी

सम्पादक

सन्तोष कुमार पाठक
सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

उप-सम्पादक

रोहित त्रिपाठी

सहायक सम्पादक मंडल

संजय पाटिल
अब्दुल गफ्फार शेख

टाइप सेटिंग

मनोहर जनार्दन म्हात्रे

अस्वीकरण

अभिव्यक्ति में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। आवश्यक नहीं कि जवाहरलाल नेहरू पत्तन प्रशासन उनसे सहमत हो।

- सम्पादक

अंदर के पृष्ठों पर

02 हिंदी दिवस, 2015 के अवसर पर भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी का अभिभाषण

04 अध्यक्ष की कलम से...
05 सम्पादकीय
07 पत्तन समाचार
14 प्राकृतिक आपदाएँ
16 खाँसी
18 पोर्ट कम्यूनिटी सिस्टम
20 हिन्दी पखवाड़ा उत्सव और उसमें पुरस्कृत रचनाएँ:

26 प्रश्नगत पूरी करो कहानी
27 मत परिवर्तन
29 जीवन का मूल्य
30 दुनिया झुकती है
32 प्रश्नगत कहानी का शेष भाग

33 आस्था और अंधविश्वास
39 भविष्य में धरती....
46 फुहार
47 आपके पत्र

हिंदी दिवस 2015 के अवसर पर
माननीय राष्ट्रपति श्री प्रणब मुखर्जी का अभिभाषण

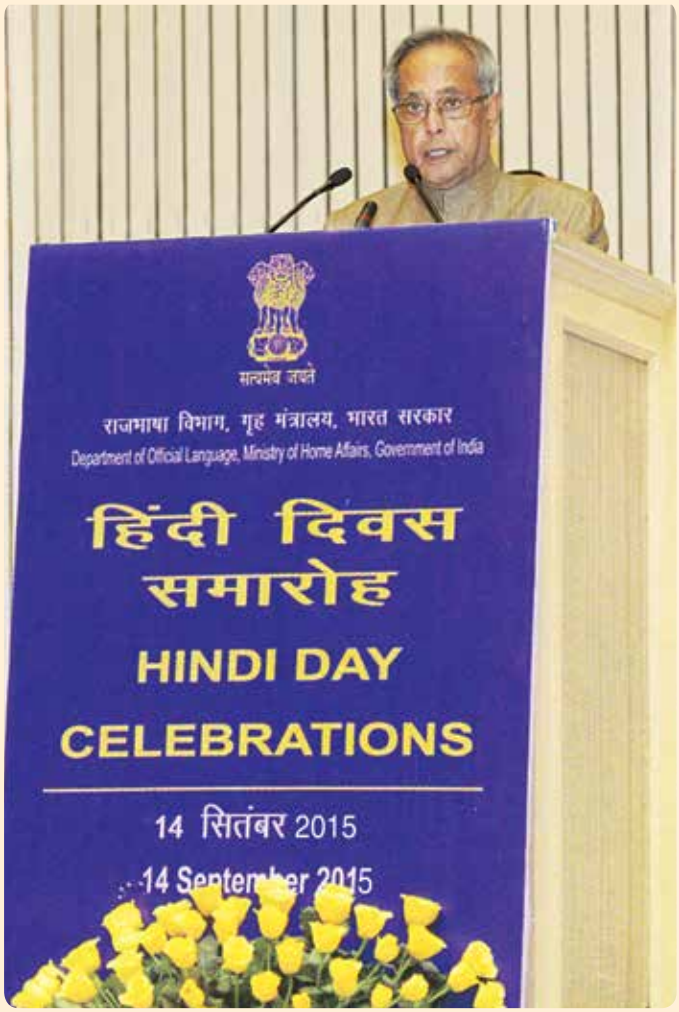

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा विज्ञान भवन, नई दिल्ली में हिंदी दिवस 2015 मनाया गया । इस समारोह में भारत के माननीय राष्ट्रपति, श्री प्रणव मुखर्जी मुख्य अतिथि थे । माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा इस अवसर पर दिया गया भाषण कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण और राजभाषा हिंदी के प्रयोग को बल देने वाला है । इसलिए इस अंक में उसे पाठकों के लिए प्रस्तुत किया जा रहा है ।

● सम्पादक

देवियो और सज्जनो,

1. हिंदी दिवस दो हजार पंद्रह के पावन अवसर पर मैं सभी हिंदी सेवियों और देशवासियों का हार्दिक अभिनंदन करता हूं।

2. चौदह सितंबर उन्नीस सौ उनचास का दिन स्वतंत्र भारत के इतिहास में बहुत महत्त्वपूर्ण है। इसी दिन संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था। इस अवसर पर आयोजित समारोह में हर वर्ष राजभाषा हिंदी की प्रगति में योगदान देने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं को सम्मानित किया जाता है। मैं इस वर्ष सम्मानित होने वाले सभी पुरस्कार विजेताओं को अपनी ओर से बधाई देता हूं।

3. स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर आज तक हिंदी ने अनेक महत्त्वपूर्ण पड़ाव पार किए हैं। हिंदी को भारतीय चिंतन और संस्कृति का वाहक माना गया है। यह हमारे पारंपरिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक कड़ी भी है। हिंदी जन-आंदोलनों की भाषा रही है। आचार्य विनोबा भावे ने अपने ऐतिहासिक भू-दान आंदोलन की सफलता का श्रेय हिंदी को दिया था। महात्मा गांधी ने स्वतंत्रता संग्राम को जन-आंदोलन बनाया था, जिसमें हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का बहुमूल्य स्थान था।

देवियो और सज्जनो,

4. भारत एक सौ बाईस भाषाओं और सोलह सौ बोलियों वाला एक विशाल देश है। मेरा मानना

है कि इस देश में हमारा लोकतंत्र तभी फल-फूल सकता है जब हम अपनी बात जनता तक उसकी भाषा में पहुंचाएं। भारत की सभी भाषाएं इसके लिए सक्षम हैं। इन सभी भाषाओं के बीच हिंदी एक संपर्क भाषा है। हमारा यह प्रयास होना चाहिए कि हिंदी का प्रयोग ज्ञान-विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी में भी बढ़े ताकि देश की प्रगति में ग्रामीण जनता सहित सभी की भागीदारी सुनिश्चित हो सके। इसके लिए यह भी जरूरी है कि तकनीकी ज्ञान के साहित्य का सरल अनुवाद हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में उपलब्ध हो। मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि हमारे कार्यालयों में संचार एवं प्रौद्योगिकी में हिंदी का प्रयोग बढ़ रहा है।

5. विश्व में तेजी से बदलते आर्थिक तथा वित्तीय परिवेश में आज हिंदी की अपनी एक अलग छाप है। दुनिया भर के देशों में रह रहे भारतीय मूल के करोड़ों प्रवासी संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का प्रयोग कर रहे हैं। इससे हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नई पहचान मिली है। भारत सरकार द्वारा हर साल आयोजित प्रवासी भारतीय दिवस द्वारा भी इस दिशा में अहम भूमिका निभाई जा रही है। हाल ही में भोपाल में आयोजित विश्व हिंदी सम्मेलन में हिंदी के प्रचार और प्रसार पर चर्चा हुई। मुझे उम्मीद है कि इस तरह के आयोजनों से हिंदी के विस्तार को और अधिक बढ़ावा मिलेगा।

देवियो और सज्जनो,

6. आज संयुक्त राष्ट्र जैसी संस्थाओं में भी हिंदी की गूंज सुनाई देने लगी है। पिछले वर्ष सितंबर माह में हमारे प्रधानमंत्री द्वारा संयुक्त राष्ट्र महासभा में हिंदी में अभिभाषण दिया गया था। इसके बाद ही दिसंबर माह में संयुक्त राष्ट्र ने इक्कीस जून को 'अंतरराष्ट्रीय योग दिवस' घोषित करने का ऐतिहासिक निर्णय लिया। यह इस बात का प्रतीक है कि विश्व मंच पर भारत का महत्त्व बढ़ा है। मुझे विश्वास है कि हम सबके प्रयासों से हिंदी को शीघ्र ही संयुक्त राष्ट्र की आधिकारिक भाषा का दर्जा भी प्राप्त हो सकेगा।

7. अंत में, मैं पुनः उन सभी पुरस्कार विजेताओं को बधाई देता हूं जिन्हें आज हिंदी में सराहनीय कार्य करने के लिए सम्मानित किया गया है। आइए, हम सब एकजुट होकर हिंदी के प्रसार को और अधिक गति प्रदान करें।

धन्यवाद,
जय हिंद

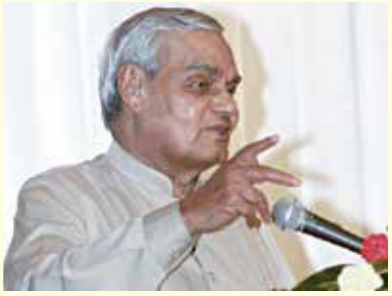

हमें जनता और प्रशासन के बीच एक अटूट रिश्ता बनाने के लिए हिन्दी को सशक्त माध्यम बनाना होगा और नई सदी की अपेक्षाओं के अनुरूप हिन्दी को ढालना होगा कि यह देश की प्रगति में अपनी अहम भूमिका निभा सके।

– अटल बिहारी वाजपेयी

अध्यक्ष की कलम से.....

मुझे हार्दिक प्रसन्नता है कि जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास की गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का 34वां अंक प्रकाशित होने जा रहा है। इसके द्वारा मुझे आप सभी से जुड़ने का यह पहला अवसर भी मिल रहा है।

हमारी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के माध्यम से आप जने पत्तन की विकास यात्रा के साक्षी रहे हैं। मुझे यह बताते हुए बहुत प्रसन्नता हो रही है कि इसी प्रगति यात्रा में जने पत्तन ने एक और मील का पत्थर स्थापित करते हुए 4.47 मिलियन टीईयू का प्रहस्तन करके सर्वाधिक प्रहस्तन का कीर्तिमान स्थापित किया है। साथ ही, पत्तन के अपने कंटेनर टर्मिनल ने अगस्त 2015 में 131,991 टीईयू के प्रहस्तन का कीर्तिमान स्थापित किया। यह कीर्तिमान 2006 में स्थापित 131,234 टीईयू के कीर्तिमान से भी अधिक है। इससे जनेप न्यास को भारत में एक विश्वस्तरीय मैरीटाइम हब के रूप में स्थापित होने में सहायता मिलेगी।

सूचना सुरक्षा के प्रबंधन के लिए आईएसओ - 27001:2013 का प्राप्त होना भी इसी दिशा में एक बड़ा कदम है।

अपनी तकनीकी और व्यापारिक प्रगति के साथ-साथ जनेप न्यास राजभाषा हिन्दी की प्रगति के क्षेत्र में भी अपना कार्य आगे बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है। इसलिए मुझे यह भी सूचित करते हुए हर्ष हो रहा है कि पत्तन को वर्ष 2015-16 के लिए राजभाषा कीर्ति पुरस्कारों में प्रथम पुरस्कार मा. राष्ट्रपति महोदय के करकमलों से प्राप्त हुआ है तथा पोत परिवहन मंत्रालय की राजभाषा शील्ड योजना में द्वितीय पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

यह सब हमारे कर्मचारियों और अधिकारियों के सम्मिलित और अथक प्रयासों का ही परिणाम है, जिसके लिए वे सभी अभिनंदन के पात्र हैं।

मैं आशा करता हूँ कि हमारे प्रयासों को आप सभी का समर्थन निरंतर प्राप्त होता रहेगा।

अनेक शुभकामनाओं के साथ,

अनिल डिग्गीकर, भा.प्र.से.
अध्यक्ष
जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास

राजभाषा हिन्दी की प्रगति और उसकी संवैधानिक स्थिति को एक मजबूत आधार देने के लिए केंद्र सरकार ने जहां अनेकों उपाय किए हैं वहीं उसने अपने कार्यालयों के विभिन्न स्तरों पर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां गठित करने जैसा भी एक कारगर उपाय किया है। ये समितियां किसी अधीनस्थ कार्यालय से लेकर मंत्रालयीन कार्यालय तक हिन्दी की प्रगति करने में सहायक सिद्ध हुई हैं। इसके अलावा सभी छोटे बड़े शहरों में राजभाषा विभाग द्वारा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां भी गठित की गई हैं। इनके कार्य व्यवहार के बारे में कई आदेश भी सरकार द्वारा जारी किए गए हैं। किन्तु उन सबका सार यही है कि नगर के सभी कार्यालयों के प्रधान अधिकारी छह महीने में एक बार किसी एक कार्यालय में एकत्र हों तथा राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, द्वारा कार्यालयीन कार्य हिन्दी में करने के लिए प्रति वर्ष जारी किए जाने वाले वार्षिक कार्यक्रम को आधार मानकर अपने कार्यालयों में हुई हिन्दी की प्रगति का आकलन करें। राजभाषा अधिनियम, 1963 और उसके अंतर्गत बनाए गए राजभाषा नियमों एवं इनके स्पष्टीकरण के लिए राजभाषा विभाग द्वारा जारी किए गए बहुत से निदेशों को ध्यान में रखते हुए यह देखें कि नगर के सभी कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग की स्थिति क्या है।

इसके अलावा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों का एक और उद्देश्य मुझे नजर आता है कि जैसे अनेक छोटे-छोटे कार्यालयों में राजभाषा कार्यान्वयन के बहुत ही सीमित साधनों को देखते हुए यह विचार किया जाए कि वहाँ भी राजभाषा के प्रावधानों का अनुपालन कैसे हो। इतना ही नहीं यह भी जरूरी है कि आपस में हिन्दी संबंधी सूचनाओं के संचार के लिए भी एक उचित व्यवस्था हो जिससे कि अनावश्यक व्यय न हो तथा वास्तव में हिन्दी की प्रगति हो।

इस दिशा में हमने मुंबई उपक्रम नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति में रहते हुए एक चौपाल के आयोजन द्वारा आपसी सहयोग की पहल की थी। उस समय हमने हिन्दी पुस्तकों की खरीद को विचार-विमर्श का केन्द्र बिन्दु बनाया और यह कहा कि हम प्रति वर्ष हिन्दी की बहुत सी पुस्तकें खरीदते हैं जो कहानी, उपन्यास, निबंध, नाटकों और कविताओं की होती हैं जिनकी खरीद से इतना लाभ नहीं होता जितना कि यदि कामकाज से संबन्धित हिन्दी के संदर्भ ग्रन्थों की खरीद हो और उनको रिफ़र करके कार्यालय के कर्मचारी अपना दिन प्रति दिन का कार्य हिन्दी में कर सकें। किन्तु यह तब तक नहीं हो सकता जब तक कि सब एक दूसरे को यह जानकारी साझा न करें कि किस प्रकार के हिन्दी के संदर्भ ग्रंथ कहाँ

उपलब्ध हैं। और यही नहीं इस प्रकार का एक सम्मिलित सहयोग प्रत्येक दिशा में हो तभी हम कार्यालयों में हिन्दी की सार्थक प्रगति करके उसे आंकड़ों के मकड़जाल से बाहर निकाल सकते हैं। इस विषय में तब चौपाल के सभी सदस्य हमसे सहमत थे। पर जैसा कि हमारे यहाँ आमतौर पर होता है नतीजा कुछ नहीं रहा। हिन्दी की प्रगति सब चाहते हैं किन्तु काम करना अथवा परिश्रम करना कोई नहीं चाहता। आज जो भाषाएँ विश्व में कामकाज के हर क्षेत्र में अपना परचम लहरा रही हैं उनके पीछे उनके लोगों का बहुत बड़ा समर्पण और बलिदान रहा है। वैसी स्थिति यदि हमारे यहाँ भी हो तो राजभाषा हिन्दी को राष्ट्रभाषा और विश्वभाषा बनने में देर नहीं लगेगी।

मैं नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठकों में अपने वरिष्ठ अधिकारियों के साथ तथा कभी उनके बहुत व्यस्त होने पर अकेले भी भाग लेने हमेशा जाता रहा हूँ और यह देखकर मुझे बहुत दुख होता है कि नराकास की बैठक बस अब एक औपचारिकता बन कर रह गई है। यह बैठक कार्यालय समय में अब दोपहर 3.00 बजे आयोजित होती है। फिर 3.30 बजे तक यह प्रारम्भ होती है। इसके बाद समिति के अध्यक्ष तथा क्षेत्रीय राजभाषा कार्यालय से पधारे गणमान्य अधिकारियों का गुलदस्तों से स्वागत होता है और यह होते-होते शाम के 4.00 बज जाते हैं। फिर नराकास के मा. अध्यक्ष एक लिखा-लिखाया पर्चा पढ़कर बैठक को संबोधित करते हैं जिससे यह साफ जाहिर होता है कि वे राजभाषा कार्यान्वयन को समय नहीं दे पाते हैं और न इसमें उनकी कोई रुचि है। वे इसकी अध्यक्षता करते हैं क्योंकि ऐसा करने के लिए उनकी ज़िम्मेदारी निश्चित की गई है। बहुदा तो वे अनुपस्थित ही रहते हैं। अब कार्यसूची का अगला मद होता है पिछली बैठक में लिए गए निर्णयों पर की गई कार्रवाई की समीक्षा जिसकी कि पुष्टि

सर्वसम्मति से तत्काल हो जाती है और सभी कार्यालयों में छह महीने में हुए राजभाषा हिन्दी के कामकाज की समीक्षा जिसके अंतर्गत राजभाषा विभाग से आए अधिकारी पहले तो यह देखकर ही परेशान हो जाते हैं कि नराकास के सभी सदस्य कार्यालयों की हिन्दी तिमाही प्रगति रिपोर्टें ही समिति कार्यालय को प्राप्त नहीं हुई हैं और जो हुई भी हैं तो उनमें राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3 (3) तथा हिन्दी पत्राचार के आंकड़ों को लेकर बहुत ही संशय की स्थिति रहती है। इसलिए मैं कभी-कभी सोचता हूँ कि आखिर यह अँधेरा कब छँटेगा और कब सभी राजभाषा के प्रावधानों से अवगत होकर इसे सम्पूर्ण सहयोग के साथ आगे बढ़ाएँगे जिससे कि यह कम से कम केंद्रीय सरकार के कार्यालयों की राजभाषा के पद पर तो पूरी तरह प्रतिष्ठित हो जाए। फिर भी, आज जो मेरे संपादकीय का विषय है कि नराकास की बैठकों में सुधार लाकर कैसे हिन्दी की प्रगति के लिए इसे कारगर बनाया जाए, उस पर मेरे निम्नलिखित सुझाव हैं :

1) जो कार्यालय नराकास का संयोजक बने वह छमाही बैठक का पूरा खर्चा स्वयं वहन करे और सदस्य कार्यालयों से कोई किसी प्रकार का अंशदान नहीं मांगे। इसके लिए जरूरी है कि केन्द्र सरकार क्षेत्र के ऐसे कार्यालय को समिति का संयोजक नियुक्त करें जिनकी आमदनी बहुत अच्छी हो और वे इस कार्य के लिए व्यय भार वहन कर सकें।
2) जो नराकास का सदस्य कार्यालय अपने यहाँ हिन्दी की प्रगति के लिए कोई कार्यक्रम या प्रतियोगिता आयोजित करना चाहे वह उसका पूरा खर्चा उठाए तथा नराकास कार्यालय से किसी प्रकार की धनराशि की मांग न करे।
3) नराकास का संयोजक कार्यालय अपने यहाँ की पत्रिका में ही नराकास की गतिविधियों को स्थान दे और पत्रिका के नाम पर सदस्य कार्यालयों से धनवसूली की दुहाई न दे।
4) समिति की बैठक ब्योरेवार रूप से पूरे दिन दो सत्रों में आयोजित हो। दोपहर के पहले सत्र में पूरी तरह राजभाषा कार्यान्वयन का मुद्दा निपट जाए और दोपहर के बाद के सत्र में आपसी सहयोग और राजभाषा हिन्दी की प्रगति के रास्ते में किसी कार्यालय को क्या-क्या कठिनाइयाँ पेश आ रहीं हैं तथा उनके निराकरण में दूसरे कार्यालय क्या सहयोग अथवा मार्गदर्शन दे सकते हैं जिससे कि वे उस कठिनाई से उबर जाएँ, मात्र यही चर्चा होनी चाहिए। साथ ही, पूरी बैठक के दौरान नराकास के अध्यक्ष तथा अन्य कार्यालयों के कम से कम ऐसे उच्चस्तरीय अधिकारी अवश्य मौजूद रहने चाहिए जो अपने कार्यालय के निर्णय ले सकने वाले अधिकारी हों।
5) नराकास तथा सदस्य कार्यालयों के बीच धनराशि का आदान-प्रदान बिल्कुल बंद हो। नराकास का संयोजक कार्यालय तथा सदस्य कार्यालय अपना-अपना होने वाला व्यय स्वयं वहन करें अन्यथा यह देखा गया है कि पिछले वित्त वर्ष की राशि शेष रहने पर भी समितियां वार्षिक अंशदान बढ़ाने का प्रस्ताव रखती हैं।

हम देखते हैं कि किस प्रकार आज अनेक लोग अपनी-अपनी हिन्दी संस्थाएँ बनाकर बड़े-बड़े होटलों में हिन्दी कार्यशालाएँ चला रहे हैं और सभी जानते हैं कि किस प्रकार यह हिन्दी के नाम पर एक बड़ा व्यापार बन गया है। किन्तु मैं सोचता हूँ कि जहाँ सरकारी नियंत्रण हो वहाँ तो केवल सब कुछ नियमपूर्वक बिना किसी स्वार्थभाव और लेनदेन के राजभाषा हिन्दी की सेवा में समर्पित होना चाहिए। वहाँ दिखावा और मात्र औपचारिकता न होकर हम सभी का पूर्ण समर्पण होना चाहिए।

मेरी कुछ इन्हीं भावनाओं और चिंताओं के साथ अभिव्यक्ति का यह 34 वां अंक हिन्दी प्रेमियों को सादर समर्पित है जिसे जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में हिन्दी दिवस के अवसर पर आयोजित हुए हिन्दी पखवाड़े की गतिविधियों को भी अन्य गतिविधियों के साथ संकलित करके प्रस्तुत किया जा रहा है। आशा है वे इस पर अपनी बेबाक राय मुझे अवश्य भेजेंगे और राजभाषा हिन्दी की प्रगति के लिए निरंतर और आजीवन प्रयत्न करते रहेंगे।

इस अंक में प्रकाशित सभी रचनाओं के लेखकों एवं कवियों के प्रति हम हृदय से अपनी कृतज्ञता अर्पित करते हैं।

■ सम्पादक

स्वच्छता अभियान

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में प्रशिक्षण केन्द्र, अतिथि गृह तथा निजी टर्मिनलों जैसे एनएसआईसीटी और जीटीआईपीएल में स्वच्छता अभियान चलाया गया। इसके अलावा पत्तन को स्वच्छ रखने हेतु जागरूकता के रूप में निम्नलिखित गतिविधियां भी की गईं-घाट की सफाई, शेड की सफाई तथा मरम्मत, पत्तन की सड़कों की मरम्मत तथा सफाई, सड़क चिह्नों तथा जेब्रा क्रॉसिंग की रंगाई, सड़कों पर पेवरब्लॉक्स तथा सीमेंट फर्निचर लगाना, बगीचों का सौंदर्यीकरण तथा सफाई, खुली जगह को टाइल्स से ढककर समतल करना, पत्तन क्षेत्र में शौचालयों का आधुनिकीकरण करना, प्रचालन क्षेत्र में शौचालयों की स्वच्छता, स्वच्छता के संदेश लगाना, अनावश्यक पेड़ पौधों तथा पोस्टरों को हटाना।

जनेप न्यास अस्पताल के वरिष्ठ उप मुख्य चिकित्सा अधिकारी डॉ. राज हिंगोरानी के मार्गदर्शन में जनेप अस्पताल में भी स्वच्छता अभियान चलाया गया। इसके अलावा पर्यावरण संरक्षण के प्रति अस्पताल की प्रतिबद्धता के रूप में वृक्षारोपण भी किया गया।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में दि. 26 से 31 अक्तूबर, 2015 के दौरान सतर्कता जागरुकता सप्ताह मनाया गया। जनेप न्यास के उपाध्यक्ष, श्री नीरज बंसल, भा.रा.से., द्वारा सभी अधिकारियों तथा कर्मचारियों को शपथ दिलाई गई। इस सप्ताह के उपलक्ष्य में विविध प्रतियोगिताओं जैसे निबंध लेखन, नारा लेखन तथा भाषण प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। ''सुशासन के साधन के रूप में निवारक सतर्कता'' इस विषय पर कार्यशाला आयोजित की गई थी। सप्ताह के अंतिम दिन पुरस्कार वितरण समारोह भी आयोजित किया गया था जिसमें श्री शिशिर श्रीवास्तव, मुख्य सतर्कता अधिकारी ने विविध प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कारों का वितरण किया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि भ्रष्टाचार के विरुद्ध सभी को अपना सर्वोत्तम योगदान देना

चाहिए तथा समाज से भ्रष्टाचार के निर्मूलन के लिए ईमानदारी तथा सत्यनिष्ठा के साथ समर्पण भाव से कार्य करना चाहिए।

विद्यालय तथा अस्पताल की उपलब्धियाँ

आईईएस जनेप विद्यालय

रसायनी में संपन्न जिलास्तरीय एथलीट प्रतियोगिता में आईईएस जनेप विद्यालय के आशीष पी. यादव (600 मी.) तथा कुमारी रुचिता एम. पाटील (हाई जम्प) का चयन हुआ था। विभागीय स्तर पर अमेघा घरत (गोलाफेंक), रुचिता पाटील (हाई जम्प) तथा आशिष यादव (600 मी. दौड) का चयन हुआ था। रिले में जय कपूर तथा निशांत पाटील तीसरे स्थान पर रहे।

सेंट मेरी जनेप विद्यालय

सतर्कता सप्ताह के दौरान आयोजित भाषण प्रतियोगिता में नवीं कक्षा की कुमारी ऋजुता मोकल को प्रथम तथा दसवीं कक्षा की कुमारी नंदिनी केलकर को दूसरा पुरस्कार प्राप्त हुआ। स्वच्छ भारत अभियान के रूप में दि. 2 अक्तूबर, 2015 को चित्रकला प्रतियोगिता तथा नाटक का आयोजन किया गया था। सोलापुर में संपन्न राष्ट्रीय स्तर की तीरंदाजी प्रतियोगिता में नवीं कक्षा के कुमार आर्यन पाटील 20 वें स्थान पर रहे और विभागीय तथा जिला स्तर पर उन्हें स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। रंगोत्सव संस्था द्वारा आयोजित राष्ट्रीय स्तर की सुलेखन तथा रंगाई प्रतियोगिता में कुमारी प्राची जे. पाटील को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। जिलास्तरीय बैडमिंटन प्रतियोगिता में कुमारी हर्षदा गावड़े को 11 तथा 13 वर्ष के आयु समूह में प्रथम स्थान पर, कुमार शैलेश

सिंह 13 वर्ष के आयुसमूह में प्रथम तथा कुमारी परिणिता मगदूम को 10 वर्ष के आयु समूह में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। जिला स्तरीय कैरम प्रतियोगिता में कुमार शिवम म्हात्रे को प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। इसके साथ ही सेंट मेरी जनेप विद्यालय ने आंतरविद्यालयीन कबड्डी प्रतियोगिता जीती।

जनेप अस्पताल:

जनेप अस्पताल में कार्यरत शिशुरोग विशेषज्ञ एवं उप-मुख्य चिकित्सा अधिकारी, डॉ. प्रशांत केलकर को विभिन्न मंचों पर तथा समितियों में वक्ता तथा विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित किया गया। हाल ही में उन्हें अक्तूबर, 2015 में बेंगलूर में संपन्न 5 वें राष्ट्रीय रुग्ण सुरक्षा सम्मेलन में पैनलिस्ट के रूप में भी आमंत्रित किया गया था।

मा. प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा चौथे कंटेनर टर्मिनल का शिलान्यास

देश के कंटेनर यातायात के सबसे बड़े प्रहस्तक जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में अपना चौथा कंटेनर टर्मिनल बननेवाला है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी ने एक शानदार समारोह में चौथे कंटेनर टर्मिनल की आधारशिला रखी। इस समारोह में महाराष्ट्र के राज्यपाल श्री सी. विद्यासागर राव, केन्द्रीय पोत-परिवहन, सड़क परिवहन तथा राजमार्ग मंत्री, श्री नितिन गडकरी, महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री श्री देवेन्द्र

फडनवीस तथा अन्य गणमान्य अतिथि उपस्थित थे। मा. प्रधानमंत्री तथा सम्माननीय अतिथियों का स्वागत श्री राजीव कुमार, पोत परिवहन सचिव तथा श्री अनिल डिग्गीकर, अध्यक्ष, जनेप न्यास ने किया।

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में स्वतंत्रता दिवस समारोह

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में 69वां स्वतंत्रता दिवस हमेशा की तरह हर्ष और उल्लास के साथ मनाया गया। श्री नीरज बंसल, आईआरएस, प्रभारी अध्यक्ष जनेप न्यास ने ध्वजारोहण किया तथा परेड का निरीक्षण किया। अध्यक्ष जी ने इस अवसर पर सभी को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं दीं। उन्होंने उन स्वतंत्रता सेनानियों के योगदान को याद किया जिन्होंने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में अपने प्राण अर्पित किए थे। उन्होंने आगे कहा कि लोगों की निरंतर सेवा हेतु सुशासन को साकार करने के लिए हमें शपथ लेने की आवश्यकता है।

इस अवसर पर अध्यक्ष जी ने पत्तन के निष्पादन तथा विकास परियोजनाओं की जानकारी देते हुए पत्तन के अधिकारियों तथा कर्मचारियों की सराहनीय सेवा की प्रशंसा की। उन्होंने पत्तन की

सुरक्षा में अपना बहुमूल्य योगदान करने के लिए केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल का भी अभिनंदन किया। इस अवसर पर अध्यक्ष जी ने पत्तन द्वारा चलाये जा रहे दो विद्यालयों के प्रतिभाशाली छात्रों का भी अभिनंदन किया। इस अवसर पर पत्तन के न्यासी, कामगार नेता, अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित थे।

जने पत्तन में महावृक्षारोपण अभियान

''हरित पत्तन'' की पहल के ही एक भाग के रूप में पिछले 30 वर्षों में पत्तन क्षेत्र में मुख्य सड़क के मध्य में तथा पत्तन की ओर जानेवाले

यातायात के रास्तों पर 17600 सजावटी पेड़ों तथा फूल झाड़ियों का रोपण पहले ही किया गया है। 20000 से अधिक के पौधों के रोपण को पूरा करने के लिए पत्तन द्वारा अगले कुछ दिनों में पत्तन क्षेत्र में 3000 से अधिक फूल के पौधे लगाए जाएंगे। कुल पौधों में से 15000 पौधों को बागबानी अनुभाग द्वारा तैयार किया गया था।

''ग्राहक से भेंट'' पहल के तहत आयोजित व्यापार सम्मेलन तथा पत्तन ग्राहकों का सम्मान

''ग्राहक से भेंट'' पहल के तहत दि. 28 अगस्त, 2015 को व्यापार सम्मेलन तथा पत्तन ग्राहकों का सम्मान समारोह आयोजित किया गया था। श्री ए. के. बोस, मुख्य प्रबंधक (यातायात) ने पत्तन की प्रगति तथा पत्तन द्वारा चलाई जा रही योजनाओं के बारे में सभी को अवगत कराया। महत्वपूर्ण भागीदारों तथा व्यापार कंपनियों जैसे, जीटीआई, एनएसआईसीटी, बीपीसीएल, मन्सा, बीसीएचएए, सीएसएलए तथा

एमएसीसीसआईए ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए तथा पत्तन को उसकी सफलता पर बधाई दी और अपने समर्थन के लिए जनेप प्रबंधन को धन्यवाद दिया। अनेक पत्तन ग्राहकों तथा भागीदारों, जिन्होंने वर्ष 2014-15 में सर्वश्रेष्ठ निष्पादन किया है, को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर मैरीटाईम समाचार पत्रों में अग्रणी डेली शिपिंग टाइम्स द्वारा जने पत्तन पर एक विशेष अंक प्रकाशित किया गया। जनेप न्यास के प्रभारी अध्यक्ष श्री नीरज बंसल, भारासे, ने टर्मिनल प्रचालकों, पत्तन उपभोक्ताओं तथा व्यापार के साथ-साथ जनेप न्यास के अधिकारियों, कर्मचारियों, न्यासियों तथा कामगार संगठनों को जनेप न्यास को नं. 1 कंटेनर पत्तन बनाने में उनके निरंतर समर्थन के लिए धन्यवाद दिया। इसके साथ ही पत्तन के कर्मचारियों को भी अनेक चुनौतियों के बावजूद पत्तन के सभी निष्पादन मानदंडों में सुधार के निरंतर प्रयासों के लिए धन्यवाद दिया। इस समारोह में अनेक व्यापार कंपनियों, भागीदारों सहित महाराष्ट्र सरकार के अधिकारी, पत्तन के पूर्व अध्यक्ष तथा न्यासी उपस्थित थे।

पत्तन में संविधान दिवस समारोह

जने पत्तन में दि. 26 नवम्बर को संविधान दिवस मनाया गया। जनेप न्यास के अध्यक्ष, श्री अनिल डिग्गीकर, भाप्रसे, द्वारा संविधान की प्रस्तावना को पढ़ा गया तथा पत्तन के सभी विभागाध्यक्षों, अधिकारियों तथा कर्मचारियों द्वारा एकत्रित रूप से उसे दोहराया गया।

रक्तदान शिबिर तथा एड्स जागरूकता सप्ताह

जने पत्तन के अस्पताल द्वारा कामगार एकता संगठना तथा रोटरी ब्लड बैंक, पनवेल के सहयोग से 26/11 के हमले के शहीदों की

स्मृति में रक्तदान शिबिर का आयोजन किया। पत्तन के उपाध्यक्ष श्री नीरज बंसल भारासे, वरिष्ठ अधिकारियों तथा कर्मचारियों सहित लगभग 65 व्यक्तियों ने रक्तदान किया। इस अवसर पर देशभक्ति तथा एकता की भावना को आत्मसात करने के उद्देश्य से सेंट मेरी जनेप विद्यालय तथा वीर वाजेकर विद्यालय के छात्रों को भी आमंत्रित किया गया था।

पुरस्कार

''कंटेनर प्रहस्तन में वर्ष का सर्वश्रेष्ठ महापत्तन'' के लिए जने पत्तन को समुद्र मंथन पुरस्कार प्राप्त हुआ है।

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास को राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2014-15 का राजभाषा कीर्ति पुरस्कार (प्रथम) प्रदान किया गया। यह पुरस्कार हिन्दी दिवस के अवसर पर भारत के माननीय राष्ट्रपति, श्री प्रणव मुखर्जी द्वारा प्रदान किया गया। इस पुरस्कार को पहले इंदिरा गाँधी राजभाषा पुरस्कार के नाम से जाना जाता था। जनेप न्यास लगातार कुल मिलाकर 09 बार यह पुरस्कार जीत चुका है।

जनेपत्तन का निष्पादन

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास के अपने कंटेनर टर्मिनल पर अगस्त, 2015 में 131,991 टीईयू कंटेनर यातायात का प्रहस्तन किया गया जो कि पत्तन के इतिहास में अब तक का सर्वाधिक प्रहस्तन है। यह कीर्तिमान स्थापित कर पत्तन ने अप्रैल, 2006 में स्थापित 131,234 टीईयू के प्रहस्तन का पुराना कीर्तिमान ध्वस्त कर दिया।

पत्तन में आईसीडी कंटेनरों की निकासी कम होने की वजह से अगस्त में आईसीडी आयात कंटेनर बड़ी संख्या में निकासी के लिए शेष थे। इससे निपटने के लिए सभी साझेदारों के साथ एक बैठक ली गई जिसके बाद सुझाए गए उपायों के परिणामस्वरूप कुल प्रलंबित मात्रा तीनों टर्मिनलों को मिलाकर 3425 टीईयू ही रह गई है।

रेल परिवहन को बढ़ावा देने के लिए जने पत्तन के न्यासी मंडल ने जनेप कं.ट. से कंटेनर वहन स्थानक तक के स्वतंत्र रेलों, जिनमें रेल साइडिंग की सुविधा है पर प्रहस्तन शुल्क में प्रति कंटेनर रु. 728 की छूट को मंजूरी दी है। यह परीक्षण आधार पर तीन महीनों की अवधि तक वैध होगा। इस पहल से न केवल भीड़ को बल्कि जने पत्तन परिसर में प्रदूषण को भी कम करने में मदद होगी।

पत्तन के तीन कंटेनर टर्मिनलों के बीच ट्रैक्टर ट्रेलरों के अंतर टर्मिनल आवागमन को अनुमति दिए जाने से टर्मिनल के द्वारों पर यातायात का दबाव बहुत कम हुआ है तथा ट्रेलरों के प्रचालन में कमी आई है तथा ईंधन की खपत और प्रदूषण में भी कमी हुई है। इसके अलावा जीटीआई और एनएसाआईसीटी को क्रमश: 6 हैक्टेयर और 5 हैक्टेयर भूमि पार्किंग के लिए भी दी गई है जिससे कि पत्तन की सड़कों पर ट्रेलर खड़े न किए जाएँ और उनकी वजह से यातायात का जमाव न हो।

पत्तन द्वारा द्रव कार्गो टर्मिनल पर मूरिंग डॉल्फिनों के निर्माण और उथले घाट पर पाइपलाइनें बिछने के बाद पत्तन एक बार में 5 द्रव कार्गो जलयानों का एक साथ प्रहस्तन करने में सक्षम हुआ है। इससे द्रव कार्गो जलयानों का घाटायन पूर्व प्रतीक्षा समय 2.56 दिन से घटकर 0.51 दिन रह गया है।

अभिनंदन

जने पत्तन के अग्निशमन अनुभाग में कार्यरत अग्निशमन जवान श्री गुरुनाथ तांडेल के सुपुत्र कुमार साई गुरुनाथ तांडेल को मार्च 2015 में हुई पूर्व माध्यमिक छात्रवृत्ति परीक्षा में कुल 300 अंकों में से 248 अंक प्राप्त हुए तथा उसे रायगड जिला ग्रामीण गुणवत्ता सूची में पाँचवा स्थान प्राप्त हुआ।

अभिव्यक्ति परिवार की ओर से कुमार साई को हार्दिक बधाई।

जने पत्तन में कार्यरत सहायक अभियंता श्री धनंजय गावडे की सुपुत्री कुमारी हर्षदा गावडे को पूर्व माध्यमिक छात्रवृत्ति परीक्षा में 300 अंकों में से 272 अंक प्राप्त हुए तथा उसे रायगड जिले में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ। इसके साथ ही रायगड जिला बैडमिंटन चैम्पियनशिप प्रतियोगिता में 11 तथा 13 वर्ष के समूह में एकल प्रतियोगिता में विजेता रही तथा 13 वर्ष के समूह में दोहरी प्रतियोगिता में भी विजेता रही।

अभिव्यक्ति परिवार की ओर से कुमारी हर्षदा को हार्दिक बधाई।

जने पत्तन में कार्यरत सहायक अभियंता श्री दीपक मयेकर के सुपुत्र कुमार तेजस दीपक मयेकर को मार्च 2015 में संपन्न दसवीं की परीक्षा में 94.2 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए तथा उसे अपने विद्यालय में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

अभिव्यक्ति परिवार की ओर से कुमार तेजस को हार्दिक बधाई।

जने पत्तन के अस्पताल में कार्यरत परिचारिका श्रीमती नंदा प्रदीप उबाले की सुपुत्री तथा सेंट मेरी जनेप विद्यालय की छात्रा कुमारी वृषाली उबाले को मार्च 2015 में संपन्न दसवीं की परीक्षा में 94.40 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए तथा विद्यालय के साथ ही उसे उरण तालुका में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।

अभिव्यक्ति परिवार की ओर से कुमारी वृषाली को हार्दिक बधाई।

जने पत्तन में कार्यरत सहायक अभियंता श्री दीपक तुपे के सुपुत्र कुमार सूरज दीपक तुपे को केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड नई दिल्ली द्वारा मार्च 2015 में ली गई दसवीं की परीक्षा में 95 प्रतिशत अंक प्राप्त हुए।

अभिव्यक्ति परिवार की ओर से कुमार सूरज को हार्दिक बधाई।

अखिल भारतीय महापत्तन बैडमिंटन चैम्पियनशिप

कामराजर पत्तन लि. (एन्नौर पत्तन) चेन्नै में मार्च, 2016 में अखिल भारतीय महापत्तन बैडमिंटन चैम्पियनशिप 2015-16 का आयोजन किया गया था। जने पत्तन की टीम ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया। वैटरन टीम चैम्पियनशिप में जने पत्तन की टीम (श्री प्रशांत मुखर्जी, श्री संजय धकिते, श्री विजय म्हात्रे, श्री भरत पाटील) को कांस्य पदक प्राप्त हुआ। जबकि वैटरन सिंगल में श्री प्रशांत मुखर्जी को रजत तथा डबल्स में श्री प्रशांत मुखर्जी तथा श्री विजय म्हात्रे को कांस्य पदक प्राप्त हुआ। इसके साथ ही सुपर वैटरन सिंगल में श्री भरत पाटील को रजत तथा डबल्स में श्री भरत पाटील तथा डी.जी.पारवे को कांस्य पदक प्राप्त हुआ। टीम के प्रबंधक श्री नरेंद्र म्हात्रे थे।

अभिव्यक्ति परिवार की ओर से टीम के सभी सदस्यों का हार्दिक अभिनंदन।

अखिल भारतीय महापत्तन सांस्कृतिक प्रतियोगिता

कांडला पत्तन न्यास में फरवरी, 2016 में अखिल भारतीय महापत्तन सांस्कृतिक प्रतियोगिता- 2015-16 का आयोजन किया गया था। इस प्रतियोगिता में जने पत्तन की सांस्कृतिक टीम ने चैम्पियनशिप प्राप्त करके पत्तन का गौरव बढ़ाया। जने पत्तन की टीम द्वारा प्रस्तुत नाटक ''बूंदे'' को सर्वश्रेष्ठ नाटक का पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके साथ ही श्री राजेश पाटील को सर्वश्रेष्ठ निर्देशक, सुश्री जाई ठाणेकर को सर्वश्रेष्ठ अभिनेत्री तथा श्री महेश तांडेल को सर्वोत्कृष्ठ संगीत का पुरस्कार प्राप्त हुआ। जबकि जने पत्तन की टीम के समूह नृत्य को दूसरा पुरस्कार प्राप्त हुआ। इसके साथ ही तबला वादन में सुश्री जाई ठाणेकर को दूसरा तथा सुगम संगीत में श्री शेखर मालवदे को निर्णायकों की पसंद का पुरस्कार प्राप्त हुआ। टीम के प्रबंधक श्री राजेश पाटील तथा मार्गदर्शक श्री प्रशांत भगत थे।

अभिव्यक्ति परिवार की ओर से टीम के सभी सदस्यों का हार्दिक अभिनंदन।

अखिल भारतीय महापत्तन एथलेटिक चैम्पियनशिप

पारादीप पत्तन न्यास में जनवरी, 2016 में अखिल भारतीय महापत्तन एथलेटिक चैम्पियनशिप 2015-16 का आयोजन किया गया था। जने पत्तन की टीम इस प्रतियोगिता में उप-विजेता रही। जने पत्तन की टीम को 4 स्वर्ण, 27 रजत तथा 17 कांस्य मिलाकर कुल 48 पदक प्राप्त हुए। 18 वर्ष के समूह में जने पत्तन की लडकियों को टीम चैम्पियनशिप प्राप्त हुई। टीम के प्रबंधक श्री अनिल चिर्लेकर तथा श्री सुनील घरत प्रशिक्षक थे।

अभिव्यक्ति परिवार की ओर से टीम के सभी सदस्यों का हार्दिक अभिनंदन।

अखिल भारतीय महापत्तन लॉन टेनिस चैम्पियनशिप

चेन्नै पत्तन न्यास में मार्च, 2016 में अखिल भारतीय महापत्तन लॉन टेनिस चैम्पियनशिप 2015-16 का आयोजन किया गया था। जने पत्तन की टीम ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया तथा मेन्स टीम चैम्पियनशिप में तीसरा पुरस्कार प्राप्त किया। जने पत्तन की मेन्स टीम के सदस्य थे - श्री विश्वास खैरनार, श्री वी सर्वनन, श्री संजय पाटील, श्री अनिल चिर्लेकर और श्री जी स्टैन्ली। इसके साथ ही सुपर वैटरन के सिंगल्स के मुकाबले में श्री श्रावण ठाकूर को रजत और डबल्स में श्री श्रावण ठाकूर तथा श्री सुनिल गोसटवार को रजत पदक प्राप्त हुआ। वैटरन सिंगल्स में श्री अनिल गणवानी को रजत तथा डबल्स में श्री अनिल गणवानी तथा श्री विश्वास खैरनार को कांस्य पदक प्राप्त हुआ। टीम के प्रबंधक श्री अरुण नाइक थे।

अभिव्यक्ति परिवार की ओर से टीम के सभी सदस्यों का हार्दिक अभिनंदन।

अखिल भारतीय महापत्तन शरीर सौष्ठव तथा भारोत्तोलन चैम्पियनशिप

विशाखापट्टनम पत्तन न्यास में मार्च, 2016 में अखिल भारतीय महापत्तन शरीर सौष्ठव तथा भारोत्तलन चैम्पियनशिप 2015-16 का आयोजन किया गया था। जने पत्तन की टीम ने इस प्रतियोगिता में भाग लिया तथा 70 कि.ग्रा.के समूह में जने पत्तन की टीम के श्री एम.एस.शिवा राव को स्वर्ण पदक प्राप्त हुआ। टीम के प्रबंधक श्री संजय पाटील थे।

अभिव्यक्ति परिवार की ओर से टीम के सभी सदस्यों का हार्दिक अभिनंदन।

प्राकृतिक आपदाएँ: आज भी एक चुनौती !

डॉ. मिलिंद भोसकर
चिकित्सा अधिकारी

25 अप्रैल 2015 - नेपाल में आए भूकंप की खबरें और तस्वीरें हम सबने पढ़ी और देखी हैं। यह भूकंप रिक्टर पैमाने पर 7.8 से 8.1 की तीव्रता का था। भूकंप के झटके चीन, भारत, बांग्लादेश और पाकिस्तान में भी महसूस किए गए। इस भूकंप में कई हज़ार लोग मारे गए, और कई लाख लोग बेघर हो गए। भूकंप में कई महत्वपूर्ण प्राचीन और ऐतिहासिक मंदिर व अन्य इमारतें भी नष्ट हुईं । इस विनाशकारी आपदा और त्रासदी से उबरने के लिए इस छोटे से देश को कई वर्ष लग जाएंगे। इसी वर्ष कुछ एक हफ्ते पहले भारत , तमिलनाडु के चेन्नई शहर में भी भारी वर्षा के कारण पूरा शहर पानी में डूब सा गया! यह एक गंभीर घटना होने की घोषणा 2015 में पेरिस के जलवायु सम्मेलन में भी की गई ।

आपदाएँ न केवल, मनुष्य और प्राणी के जीवन के लिए खतरा हैं , बल्कि यह किसी भी देश की अर्थव्यवस्था के साथ, उसकी प्राचीन धरोहर और उसके बुनियादी ढांचे में किए गए विकास को भी नुकसान पहुँचाती हैं।

आपदाएं मुख्यतया दो प्रकार से वर्गीकृत की जा सकती हैं।

प्राकृतिक आपदाएँ : भूकंप, ज्वालामुखी विस्फोट, चक्रवात, तूफान, सुनामी, सूखा तथा बाढ़ आदि ।

मानव निर्मित आपदाएँ: दंगा, भगदड़, विमान दुर्घटनाएँ, रेल दुर्घटनाएँ , आतंकवाद तथा युद्ध इत्यादि ।

यदि मनुष्य ने सही समय रहते विचार कर ठोस कदम नहीं उठाए तो भविष्य में कुछ आपदाएँ मनुष्य के लिए बड़ा ख़तरा बन सकती हैं वे इस प्रकार हो सकती हैं- ग्लोबल वार्मिंग, परमाणु युद्ध सामग्री, जल संकट, वनों की कटाई,बहुत अधिक मछ्ली पकड़ना, एंटिबायोटिक प्रतिरोधन।

यदि हम मानव निर्मित आपदाओं को रोक पाएँ तो भी प्राकृतिक आपदाओं को रोक पाना मुश्किल है, हालांकि हम इन आपदाओं को बेहतर ढंग से समझ कर इनके प्रभाव को कम कर सकते हैं और इसके लिए तैयार रह सकते हैं ।

प्राकृतिक आपदाओं के कारण, विकसित देशों की तुलना में विकासशील देशों में बहुत बड़ी मात्रा में आर्थिक नुकसान और जन जीवन अस्त-व्यस्त होता है। भारत ने भी अतीत के वर्षो में प्रकृतिक आपदाओं के कारण जान माल का बहुत बड़ा नुकसान झेला है ।

इसीलिए हर नागरिक का यह कर्तव्य है कि इन आपदाओं और उनके प्रबंधन के बारे में सही जानकारी हासिल करें। प्राकृतिक आपदाओं के खतरों से निपटने के लिए तैयार रहना ही, इन का सही प्रबंधन हो सकता है।

किसी भी आपदा की शुरुआात से अंत तक उससे समय अनुरूप तीन तरीके से बेहतर प्रबंधन करके निपटा जा सकता है।

- आपदा पूर्व प्रबंधन : इसमें जोखिम की पहचान करना तथा उसे ठीक से रोकने और उसके लिए तैयारी करने की योजना होनी चाहिए। इस प्रबंधन से कम लागत और संसाधनों से ज्यादा से ज्यादा जान माल की सुरक्षा हो सकती है।
- आपदा प्रबंधन के दौरान : इसमें आपातकालीन प्रतिक्रिया प्रदान करने की योजना होनी चाहिए। इसमें जान माल के बड़े नुकसान का ख़तरा बना रहता है।
- आपदा प्रबंधन के बाद : इसमें पुनर्वास एवं पुनर्निर्माण का काम करने की योजना होनी चाहिए । इस के लिए लंबा समय और लागत लगती है।

आपातकालीन प्रबंधन के पाँच चरण होते हैं:

- निवारण: इसमें आपदाओं से स्थायी रूप से सुरक्षा प्रदान करने के लिए योजनाओं की रूपरेखा बनाई जाती है, जिससे जान माल का कम से कम नुकसान हो, उदाहरण के लिए जैसे , भूकंप प्रतिरोधी इमारतें, अच्छी निकासी योजनाएँ आदि ।
- शमन : इसमें व्यक्तियों और परिवारों को अनावश्यक जोखिम से बचने के लिए प्रशिक्षित करना, जिससे आपदा के प्रभाव को और उसके संभावित खतरों से कम से कम किया जा सके। उदाहरण के लिए जैसे, प्रथमोपचार और आपदा शिक्षा प्रशिक्षण वर्ग।
- तैयारी : आपदा की भविष्यवाणी करना, प्रतिक्रिया के लिए तैयार रहना, उपलब्ध संसाधनोंऔर उपकरणों को तैयार रखने पर ज़ोर दिया जाता है।
- प्रतिक्रिया : इसमें पूर्व तैयारी से ज्यादा आपदा का सामना करने पर ध्यान केन्द्रित होता है।
- उबरना : इसमें आपदा प्रभावित क्षेत्र को जल्दी से जल्दी उसके पूर्व रूप में वापस लाने की योजना बनाई जाती है। उदाहरण के लिए जैसे , बिजली, रहने - खाने और साफ पानी की आपूर्ति एवं चिकित्सा जांच की उपलब्धता करने पर ज़ोर दिया जाता है।

आपदा प्रबंधन के मुख्य सदस्य और उनकी जिम्मेदारियां:

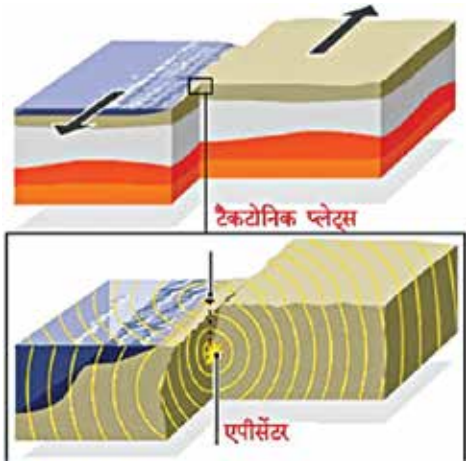

- सरकार: निधि और जरूरी संसाधनों की उपलब्धता, प्रबंधन समिति का गठन तथा नीति और नियमों का विकास करना।
- स्थानीय प्रशासन: सही और जरूरी संसाधनों का वितरण और नीति तथा नियमों का पालन करना।
- गैर सरकारी संगठन: राहत कार्य, कपड़ा, अन्न और दवाइयाँ उपलब्ध कराना।
- सिविल डिफ़ेंस: बचाव सेवाएं प्रदान करना।
- सामाजिक सहायक संगठन : मानव संसाधन उपलब्ध कराना ।
- प्राथमिक चिकित्सा समूह: प्राथमिक उपचार कार्य प्रदान करना।
- अग्निशमन दल: बचाव कार्य संभालना।
- सेना और रैपिड एक्शन फोर्स: सुरक्षा और बचाव कार्य करना ।
- पुलिस प्रशासन: सुरक्षा और बचाव कार्य सुनिश्चित करना।
- सामान्य नागरिक: इन सभी के कार्यो में मदद करना और धैर्य रखना ।

क्यों आते हैं भूकंप?

हमारी धरती मुख्य तौर पर चार परतों से बनी हुई है, इनर कोर, आउटर कोर, मैन्टल और क्रस्ट। क्रस्ट और ऊपरी मैन्टल को लिथोस्फेयर कहते हैं। ये 50 किलोमीटर की मोटी परत, कई वर्गों में बंटी हुई है, जिन्हें टैक्टोनिक प्लेट्स कहा जाता है। ये टैक्टोनिक प्लेट्स अपनी जगह से हिलती रहती हैं लेकिन जब ये बहुत ज्यादा हिल जाती हैं, तो भूकंप आ जाता है।

भारतीय उपमहाद्वीप में भूकंप का खतरा हर जगह अलग-अलग है। भारत को भूकंप के क्षेत्र के आधार पर चार हिस्सों, जोन-2, जोन-3, जोन-4 तथा जोन-5 में बांटा गया है। जोन 2 सबसे कम खतरे वाला जोन है तथा जोन-5 को सर्वाधिक खतनाक जोन माना जाता है।

उत्तर-पूर्व के सभी राज्य, जम्मू-कश्मीर, उत्तराखंड तथा हिमाचल प्रदेश के कुछ हिस्से जोन-5 में ही आते हैं। उत्तराखंड के कम ऊंचाई वाले हिस्सों से लेकर उत्तर प्रदेश के ज्यादातर हिस्से तथा दिल्ली जोन-4 में आते हैं। मध्य भारत अपेक्षाकृत कम खतरे वाले हिस्से जोन-3 में आता है, जबकि दक्षिण के ज्यादातर हिस्से सीमित खतरे वाले जोन-2 में आते हैं।

भूकंप होने की सूचना मिलने पर क्या करें:

1. अपने साथ प्राथमिक चिकित्सा किट, एक टॉर्च, अतिरिक्त बैटरियां, एक बैटरी संचालित रेडियो रखें।
2. प्राथमिक उपचार करना सीखें।
3. घर में रखे गैस और बिजली के उपकरण बंद रखें।
4. भारी वस्तुएँ, अलमारियों की ऊपरी सतह पर न रखें।
5. काँच का फ्रेम बिस्तर की दीवारों से हटा दें।
6. भूकंप के बाद, कहाँ मिलना है, इसकी योजना बनाएँ ।
7. अपने महत्वपूर्ण दस्तावेज़, कुछ नकद पैसे और आवश्यक वस्तुएँ एक बैग में तैयार रखें।

भूकंप होने पर क्या करें?

1. शांति और धैर्य बनाए रखें।
2. यदि आप घर के अंदर हो, तो अंदर ही रहें और किसी भारी मेज के नीचे बैठ जाएँ ।
3. बाहरी खिड़की और दरवाजों से दूरी रखें और इमारत के मध्य भाग में ही एकत्र हों ।
4. लिफ्ट या सीढ़ियों का उपयोग न करें।
5. यदि आप इमारत के बाहर हैं तो बाहर खुले में रहें और इमारत से दूर ही रहें ।
6. यदि आग लग जाए, तो जमीन पर रेंगते हुए बाहर का रास्ता खोजें ।
7. यदि आप कार में हैं तो तुरंत का को रोकें और अंदर ही रहें ।

भूकंप के बाद क्या करें:

1. खुद की और दूसरों की चोटों की जांच करें और जरूरत हो तो प्राथमिक उपचार प्रदान करें ।
2. घर में पानी की लाइन, गैस लाइन, बिजली के उपकरणों की जांच करें, और यदि वे क्षतिग्रस्त हों तो, इन उपकरणों को बंद ही रखें ।
3. दुर्घटनाग्रस्त इमारतों और क्षतिग्रस्त क्षेत्रों से दूर रहें ।
4. टूटे शीशे और मलबे के आसपास सावधान रहें ।
5. रेडियो और फोन पर भूकंप की खबरों को सुनते रहें ।
6. भूकंप के बाद आनेवाले झटकों से घबराएँ नहीं ।

मानव की इतनी प्रगति और अनेकों विषयों में सफलता के बावजूद, आज भी प्राकृतिक आपदाओं के सामने उसे घुटने टेकने पड़ते हैं, आज भी यह आपदाएँ एक आवाहन बनकर सामने खड़ी हैं, लेकिन मनुष्य की हर परीक्षा में, हर क्षेत्र में, हर मुश्किल पर जीत हासिल करने की चाह ही, शायद उसे किसी दिन इन प्राकृतिक आपदाओं पर विजय दिला सकेगी। ■

खांसी

खांसी स्वयं में बीमारी नहीं है, परन्तु अनेकानेक श्वास, फेफड़ों व शरीर के अन्य अंगों से संबन्धित बीमारियों का एक लक्षण है। सामान्यतया अधिकांश श्वास व फेफड़ों के रोगों में खांसी एक लक्षण हो सकता है। सामान्य जुकाम से लेकर फेफड़ों के कैंसर तक खांसी पैदा कर सकते हैं। इसलिए खांसी को हमेशा गंभीर लक्षण मानकर उचित इलाज कराना समझदारी है।

खांसी श्वसन रोग का एक आम लक्षण है। खांसी श्वसन नलियों की परत में उपस्थित संवेदी तंत्रिकाओं की उतेजना से उत्पन्न होती है और परिणाम के रूप में हवा उच्च दबाव से श्वसन नली से बाहर निकलती है। खांसी श्वसन तंत्र को धूल, गंदगी व कीटाणु से बचाने के लिए शरीर की रक्षात्मक क्रिया है। यह धूल व गंदगी श्वसन तंत्र में संक्रमण पैदा कर सकती है। खांसी आने का मतलब है कि श्वास नलियों में कुछ अवांछित कण हैं जो वहां नहीं होने चाहिए, जैसे धूल के कण या भोजन के कण इत्यादि। खांसी एक व्यक्ति द्वारा स्वेच्छा से की जा सकती है लेकिन सामान्यतया यह एक अनैच्छिक प्रक्रिया है।

खांसी के कारण

खांसी को अवधि के अनुसार दो प्रकार में वर्गीकृत किया जा सकता है। कम अवधि की खांसी: इस प्रकार की खांसी अचानक शुरू होती है पर दो तीन सप्ताह में ठीक हो जाती है। इस प्रकार की खांसी के मुख्य कारण हैं -

आम सर्दी : अप्पर रेस्पिरेटरी इन्फेक्शन, एलर्जी, ब्रोंकाइटिस, सीओपीडी, न्युमोनिया, श्वास नली में किसी वस्तु के फंस जाने से, दिल का दौरा इत्यादि।

पुरानी खांसी : इस प्रकार की खांसी तीन सप्ताह से अधिक समय तक रहती है। पुरानी खांसी के मुख्य कारणों में धूम्रपान, सीओपीडी, दमा, अस्थमा क्षय, टीबी, प्रदूषण, एलर्जी, दवाइयाँ, इत्यादि हैं।

खांसी से जुड़े लक्षण

कभी कभी खांसी के साथ बलगम या कफ भी निकलता है तो इसे गीली खांसी कहते हैं और अगर खांसी के साथ बलगम नहीं निकलता है तो उसे सूखी खांसी कहते हैं। बलगम युक्त खांसी आम तौर पर संक्रमण, न्युमोनिया या फेफड़ों के क्षय रोग आदि के कारण होती है। सूखी खांसी आम तौर पर धूम्रपान, अस्थमा, दमा या फेफड़ों के कैंसर आदि के कारण होती है। अगर खांसी के साथ बुखार, गले में दर्द या नाक से पानी आ रहा हो तो जुकाम या आम सर्दी की वजह से हो सकता है। नाक का बहना व बार-बार गला साफ करना पोस्ट नेजल ड्रिप की और संकेत करता है।

उज्वला निकालजे
स्टाफ नर्स

मौसम में बदलाव से होने वाली खांसी व साँस के साथ सीटी बजना अस्थमा को इंगित करता है। सामान्यतया अस्थमा के रोगियों में रात के समय खांसी ज्यादा आती है। छाती में जलन व एसिडिटी, खट्टी डकार आना गेस्ट्रो इंसोफेजियाम रिफ्लेक्ट्स डिजीज का संकेत है। कुछ रोगियों में खांसी धूम्रपान की वजह से होती है। कुछ ब्लडप्रेशर कम करने वाली दवाइयाँ भी खांसी का कारण हो सकती हैं। बलगम के साथ खून, फेफड़ों के क्षय रोग, फेफड़ों के केन्सर, न्युमोनिया, ब्रोन्कियेक्टेसिस व फेफड़ों में मवाद पड़ जाने से आ सकता है।

खांसी का निदान

बलगम जाँच :- यदि किसी भी व्यक्ति को दो सप्ताह से ज्यादा समय से खांसी आ रही है तो उसे तुरन्त बलगम में टीबी के कीटाणुओं की जाँच करवानी चाहिए। यह जाँच हर सरकारी स्वास्थ्य केन्द्र पर मुफ्त उपलब्ध है।

रक्त जाँच :- खून जाँच द्वारा खांसी के रोगी में संक्रमण व एलर्जी का पता लगाया जा सकता है।

एक्स-रे :- छाती के एक्स-रे से खांसी के रोगियों में क्षय रोग, दमा, न्यूमोनिया, फेफड़ों के केन्सर व ब्रोन्कियेक्टेसिस इत्यादि का पता लगाया जा सकता है।

अन्य विशेष जाँच :- फाइबर आप्टिक ब्रोंकोस्कोपी, दूरबीन द्वारा जाँच - यह जाँच फेफड़ों के कैंसर के निदान व श्वास नली में फंसी हुई वस्तु का पता लगाने में अत्यन्त सहायक है।

पी.एफ.टी. पल्मोनेरी फंक्शन टेस्ट :- इस जाँच द्वारा फेफड़ों की कार्य क्षमता का पता लगाया जाता है। यह अस्थमा एवं सीओपीडी के रोगियों में अत्यन्त उपयोगी है।

सीटी स्कैन:- फेफड़ों के कैंसर, ब्रोन्कियेक्टेसिस व आई.एल.

डी; इन्टरस्टीषियल लंग्स की बीमारियों का पता लगाने में उपयोगी है।

खांसी के उपचार

खांसी कोई बीमारी नहीं लक्षण है। खांसी का निश्चित इलाज उसके मूल कारण के निर्धारण एवं उसकी चिकित्सा पर निर्भर करता है।

श्वास नलियों में संक्रमण और न्युमोनिया का इलाज एंटीवायोटिक दवाओं के द्वारा सम्भव है। फेफड़ों के क्षय रोग का इलाज टीबी की विशेष दवाओं द्वारा किया जा सकता है। खांसी अगर अस्थमा या दमा के कारण है तो श्वसन नलियों में सूजन कम करने वाली दवाओं व श्वास की दवाओं द्वारा खांसी पर नियन्त्रण किया जा सकता है। ये दवाऐं सीओपीडी के रोगियों में भी प्रभावी हैं। इन दवाओं को इन्हेलर; मीटर्ड डोज़ इनहेलर एवं ड्राई पाऊडर इनहेलर या भाप; नेबूलाईजर द्वारा दिया जा सकता है। अगर किसी रोगी में खांसी बल्डप्रेसर; रक्तचाप कम करने वाली कुछ विषेष दवाओं की वजह से है तो इन दवाओं की जगह दूसरी दवाओं का उपयोग करने से खांसी पर नियन्त्रण किया जा सकता है। गेस्ट्रो इसोफेजियाम रिफ्लेक्ट्स डीज़ीज के रोगियों में एंटी एसिडिटी दवाओं एवं सोते समय पलंग का सिर की तरफ वाला हिस्सा ऊँचा रखने से खांसी को कम किया जा सकता है। पोस्ट नेजल ड्रिप, नाक के पीछे गले में बलगम जमने के कारण होने वाली खांसी पर नाक के स्प्रे एवं डीकन्जेस्टेन्ट दवाओं द्वारा नियन्त्रण किया जा सकता है। काली खांसी के लिए एंटी-बायोटिक; इरीथ्रोमाइसिन दवाओं द्वारा उपचार आवश्यक है। काली खांसी से बचाव के लिए बच्चों को डी.पी.टी. का टीका लगवाया जा सकता है। यदि खांसी धूल के कण, पालतू पशुओं के बालों, प्रदूषण, धुएं अथवा औद्योगिक रसायनों के कारण है तो इन सब से बचाव रख कर एवं कुछ एलर्जी की दवाओं द्वारा खांसी का उपचार किया जा सकता है।

खांसी के लक्षण आधारित उपचार

यदि खांसी का कारण पता न चलें या खांसी से रोगी को काफी असुविधा हो रही हो तो खांसी के लक्षण आधारित उपचार दिया जाता है। खांसी को दबाने के लिए कोडीन, डेक्सोमेथोरफान या बेन्जोनेटेट नामक दवाओं का उपयोग किया जाता है। ये दवाइयाँ खांसी को दबाकर रोगी को आराम देती हैं। कुछ खांसी की दवाइयाँ नशीली होती हैं अत: इनको लेते समय व्यक्ति को गाड़ी चलाने में, कोई मशीन चलाने में सावधानी बरतनी चाहिए तथा शराब का सेवन नहीं करना चाहिए।

खांसी की उपेक्षा न करें यदि :

खांसी के साथ सांस लेने में तकलीफ हो। खांसी के साथ बुखार या बलगम आ रहा हो। खांसी के साथ खून आ रहा हो। खांसी को दो सप्ताह से ज्यादा हो गए हों। खांसी की वजह से व्यक्ति को अपने नित्य के काम करने या नींद लेने में दिक्कत आ रही हो। खांसी के साथ सीने में दर्द हो। कुछ समय पहले अस्पताल में भर्ती रहे हों।

याद रखें, बिना डाक्टर की सलाह के खांसी की दवाओं का उपयोग न करें। खांसी की दवाएँ विभिन्न प्रकार की होती हैं तथा इनके उपयोग भी भिन्न होते हैं। इनमें से कुछ बलगम युक्त खांसी में उपयोगी होती हैं तथा कुछ सूखी खांसी में उपयोगी होती हैं।

खांसी होने पर क्या करना चाहिए

खांसते वक्त हमेशा मुँह व नाक को रूमाल से ढँकना चाहिए। बलगम को यहाँ वहाँ नहीं थूकना चाहिए, बलगम थूकने के लिए एक बन्द डिब्बा इस्तेमाल करना चाहिए तथा इसे उपयुक्त तरीके से फेंकना चाहिए। क्योंकि यह आपके परिवार के सदस्यों तथा दूसरे व्यक्तियों में संक्रमण फैला सकता है।

अपने डॉक्टर को हमेशा बताएँ कि:

आपको कितने समय से खांसी है। क्या आपने कुछ दवाइयाँ ली हैं तो उसके बारे में बताएँ। क्या आपकी खांसी में खून आ रहा है। क्या आपको बुखार, गले में दर्द, नाक से पानी आ रहा है? क्या आप धूम्रपान करते हैं? क्या आपको साँस लेने में तकलीफ होती है? क्या आप वर्तमान में अथवा पूर्व में किसी बीमारी से पीड़ित रहे हैं? क्या आपकी खांसी उठने बैठने, व्यायाम करने से, धूल मिट्टी से, या रात के समय अथवा अन्य किसी कारण से घटती या बढ़ती है? ■

पोर्ट कम्युनिटी सिस्टम (पी.सी.एस.)

कंटेनर राजस्व अनुभाग की कार्य प्रणाली

गणेश गं.मोकल
प्रशासनिक अधिकारी

ज.ने.प.न्यास के वित्त विभाग में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका निभानेवाला अनुभाग है - राजस्व अनुभाग। इसके बारेमें हम सोच रहे थे । आज देखते हैं कि कंटेनर राजस्व अनुभाग का भुगतान का काम कैसे चलता है? जो कंटेनर राजस्व अनुभाग का एक महत्वपूर्ण काम है।

ज.ने.प.न्यास में सभी भुगतान पी. सी. एस. से होता है । सिर्फ पहली बार जब नई शिपिंग लाइन ज.ने.पत्तन न्यास में पंजीकरण हेतु फार्म भरती है, तब उनके खाते में मांग पत्र (डिमांड ड्राफ्ट) से भुगतान होता है । और उसके बाद उनके लेखा कूट को पी.सी.एस. का पासवर्ड दिया जाता है और उसकी सहायता से वे निम्नलिखित बैंकों द्वारा ज.ने.प.न्यास के ख़ाते में रकम जमा करते हैं :-

अ. क्र.	बैंक का नाम	ज.ने.प.न्यास की लेखा संख्याएँ	आईएफएससी कोड / एमआईसिआर कोड
1.	यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उरण	498901010050217	UBIN0549894 400026110
2.	आई.डी.बी.आई. बैंक, पी.यू.बी.	238102000000727	IBKL0000238 400259076
3.	एच.डी.एफ.सी. बैंक, पी.यू.बी.	1100350000026	HDFC0000060 400240024
4.	एक्सिस बैंक, पनवेल	909020039117171	UTIBH0000036 400211009
5.	आई.सी.आई.सी. आई.बैंक, पी.यू.बी.	147905000010	ICIC0001479 400229196

पी. सी. एस. के मुख्य ध्येय निम्नानुसार हैं:

1) केंद्रीय वेब बेस्ड एप्लिकेशन तैयार करके पत्तन उपभोक्ताओं के लिए एकल खिड़की योजना का निर्माण करें एवं उसके द्वारा इलेक्ट्रोनिक संदेश भेज सकें।
2) पत्तन व्यापार में समय एवं पैसों की बचत ।
3) पत्तन क्षेत्र में बिना कागज के कार्य के लिए प्रेरणा ।
4) पत्तन कम्युनिटी के लिए ई-कॉमर्स पोर्टल का कार्यान्वयन।
5) संशोधन एवं पृथक्करण के लिए डाटा रेसपोसीटरी।

पी. सी. एस. के फायदे :

1) एकल खिड़की योजना ।
2) विविध एजेन्सीज को समान (Common) जानकारी ।
3) सूचना प्रसारण में प्रमाणबध्दता ।
4) 24 X 7 प्रस्तुतीकरण हेतु उपलब्धता (Convenience submission) ।
5) ई-मेल द्वारा समय पर सूचना ।
6) सेवा हेतु ऑनलाइन अनुरोध एवम भुगतान ।
7) रिपोर्ट करने के लिए सूचना प्रबंधन प्रणाली ।
8) पी.सी.एस. के कार्यान्वयन से भारत के पत्तन न्यासों को बिना पेपर के आदर्श पत्तन का निर्माण । यह भारत के आयात - निर्यात व्यापार में समय एवम पैसों की बचत है। इससे भारतीय व्यापार में ई-ट्रेड द्वारा एक नया प्रकरण शुरु हुआ है ।

यूआरएल : www.indianpcs.gov.in
ज.ने.प.न्यास के लिए : www.ipcs.gov.in
पी.सी.एस. मदद सेवा केंद्र : (24X7) टोल फ्री 1800-11-5055
ज.ने.प.न्यास के लिए : 022-27245187 / 022-27244099
परियोजना के प्रमुख : प्रबंध निदेशक, इन्डियन पोर्ट्स असोसिएशन
परियोजना के प्रबंधक : उप निदेशक(ई.डी.पी.), इन्डियन पोर्ट्स असोसिएशन

क्र. सं.	संदेश पहचान	संदेश	संदेश प्रारूप
क	जलयान		
1	VESPRO	वेसल प्रोफाईल	XML, TXT
2	CALINF	वोएज रजिस्ट्रेशन	XML, TXT
3	BERMAN	बर्थिंग एप्लिकेशन	XML, TXT
4	CALINV	वी.सी.एन. एलोकेशन	XML, TXT
5	BAPLIE	बे प्लान	UNEDIFACT
ख	कंटेनर		
1	COARRI	कंटेनर लोडिंग / अनलोडिंग	XML, TXT,UNEDIFACT
2	GOCOFR	गेट ओपन रिपोर्ट	XML, TXT
3	COEDOR	कंटेनर स्टौक रिपोर्ट	XML, TXT
4	COPRAR	कंटेनर लोडिंग एण्ड डिस्चार्ज ओर्डर	XML, TXT
5	COSTOR	कंटेनर स्टिंफग	XML, TXT
ग	वित्त		
1	PDABAL	पी.डी. अकाउंट बैलंस डिटेल्स	XML, TXT
2	REQVAC	असेसमेंट ऑफ चार्जेस - वेसल	XML, TXT
3	REQCAC	असेसमेंट ऑफ चार्जेस - कारगो	XML, TXT
4	REQCTC	असेसमेंट ऑफ चार्जेस - कंटेनर	XML, TXT
5	PAYSTS	पेमेंट स्टेटस	XML, TXT
घ	ट्रान्स्पोर्ट		
1	RAILRE	रेल रिसीट	XML, TXT
2	COPINO	इनलेंड वे बिल	XML, TXT
3	CONTPE	पेंडेंसी ऑफ कंटेनर	XML, TXT
4	RAILSC	ट्रेन शेड्यूल	XML, TXT
5	RMLMEM	रिमूवल मेमो फ्रॉम रैक	XML, TXT
च	कारगो		
1	RLOENT	एप्लिकेशन फॉर लॉग एंट्री	XML, TXT
2	GLOENT	लॉग एंट्री परमीशन	XML, TXT
3	MATREC	मेट रिसीट	XML, TXT
4	AGDORD	बिल फॉर लेडिंग /एजेंट डिलिवरी ऑर्डर	XML, TXT
5	STPCGO	स्टोवेज प्लान फॉर कार्गो	XML, TXT
छ	पी.एच.ओ.		
1	REQFPQ	रिक्वेस्ट फॉर फ्री ट्रेटिक	XML, TXT
2	INSCER	हेल्थ इंस्पेक्शन सर्टिफिकेट	XML, TXT
3	HLTDLR	हेल्थ डिक्लेरेशन फॉर सेल आऊट	XML, TXT
4	FREPRQ	फ्री प्रेटिक परमिशन	XML, TXT
ज	कस्टम्स		
1	CHSAI01A	आई.जी.एम.एक्नॉलेजमेंट	XML, TXT
2	CHPOI05	कैन्सलेशन ऑफ आई.जी.एम. नम्बर	XML, TXT
3	CHSAI15	कर्गो मूवमेंट अप्रूवल	XML, TXT
4	POCHE14	वेसल सेलिंग रिपोर्ट	XML, TXT
5	CHSAE02	अलॉट्मेंट ऑफ रोटेशन नम्बर	XML, TXT
झ	एम.एम.डी.	रेग्युलेटरी मेसेजेस	
1	MMDINP	एम.एम.डी. इंस्पेक्शन रिपोर्ट	XML, TXT
2	MMDVDO	एम.एम.डी. वेसल डिटेंशन ऑर्डर	XML, TXT
3	MMDVRO	एम.एम.डी. वेसल रिलीज़ ऑर्डर	XML, TXT

हिन्दी पखवाड़ा उत्सव

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास में हिंदी दिवस के अवसर पर दि. 01 सितम्बर, 2015 से दि. 15 सितम्बर, 2015 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस उत्सव के दौरान हिंदी पत्रलेखन तथा शब्दावली प्रतियोगिता, कम्प्यूटर पर हिंदी टंकण (आशुलिपिक तथा अन्य वर्ग) प्रतियोगिताएँ, हिंदी कहानी लेखन, हिंदी आशुभाषण, रोचक प्रसंग कथन, हिंदी वर्ग पहेली, हिंदी निबंध लेखन, हिंदी कविता पाठ, सही हिंदी लेखन, हिंदी अन्ताक्षरी, हिंदी भाषा-ज्ञान और हिंदी गीत गायन जैसी कुल मिलाकर 13 प्रतियोगिताएँ आयोजित की गई।

इस बार प्रारंभ की गई हिन्दी आशुभाषण प्रतियोगिता कर्मचारियों द्वारा बहुत पसंद की गई।

हिंदी पखवाड़े का मुख्य आकर्षण सामाजिक निगमित जिम्मेदारी के अंतर्गत 'भविष्य में धरती को रहने योग्य कैसे बनाएँ?'' जैसे रोचक विषय पर पत्तन के आसपास के विद्यालयों के लिए आयोजित की गई हिन्दी प्रतियोगिता थी जिसमें 18 विद्यार्थियों ने भाग लिया। इनमें से विजेता रहे विद्यार्थियों को नकद पुरस्कार, शील्ड तथा हिंदी पुस्तकें देकर माननीय उपाध्यक्ष ने सम्मानित किया जिससे वे बहुत ही प्रफुल्लित हुए।

अन्य सभी हिन्दी प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रथम पुरस्कार के रूप में रु. 4000/-, द्वितीय पुरस्कार के रूप में रु. 3000/-, तृतीय पुरस्कार के रूप में रु. 2000/- एवं प्रतियोगिता में सान्त्वना पुरस्कार के रूप में रु. 500/- के 04 पुरस्कार दिए गए। विजेता रहे 100 कर्मचारियों को 25 सितम्बर, 2015 को आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में मा.उपाध्यक्ष, श्री नीरज बंसल, आई.आर.एस., द्वारा रु. 1,43,500/- की राशि पुरस्कार के रूप में दी गई। यहाँ यह भी उल्लेखनीय है कि हिन्दी साहित्य के पठन पाठन को बढ़ावा देने के लिए प्रतिवर्ष इन पुरस्कारों की 10 प्रतिशत राशि हिन्दी पुस्तकों के रूप में विजेताओं को दी जाती है। इस वर्ष भी 10 प्रतिशत राशि अर्थात रु.17,987/- की हिन्दी पुस्तकें सभी विजेताओं को

नक़द पुरस्कार के साथ वितरित की गईं। इन पुरस्कार विजेताओं को रु. 100/- की हिन्दी पुस्तक नकद पुरस्कार के अलावा दी गई।

इसके अतिरिक्त, पत्तन न्यास में वर्ष के दौरान सर्वश्रेष्ठ राजभाषा निष्पादन के लिए भी विभागों को राजभाषा शील्ड पुरस्कार दिए गए। इसमें बड़े तथा अधिक पत्राचार वर्ग के कार्यालय में चिकित्सा विभाग को प्रथम, प्रशासन विभाग को द्वितीय, यातायात विभाग को तृतीय तथा यांत्रिकी तथा बिजली एवं वित्त विभाग को सांत्वना राजभाषा शील्ड एवं छोटे तथा कम

पत्राचार वर्ग के कार्यालयों में सतर्कता विभाग को प्रथम, समुद्री विभाग को द्वितीय तथा पत्तन योजना एवं विकास विभाग को तृतीय पुरस्कार तथा प्रबंधन सेवा को सान्त्वना पुरस्कार की शील्ड देकर मा.उपाध्यक्ष द्वारा सम्मानित किया गया। साथ ही विभागों/अनुभागों के सभी 09 हिन्दी सम्पर्क अधिकारियों को भी पूरे वर्ष अपने-अपने विभागों/ अनुभागों में राजभाषा हिंदी के कार्य को बढ़ावा देने के लिए सम्मानित किया गया।

समारोह की अध्यक्षता कर रहे मा.उपाध्यक्ष, श्री नीरज बंसल, आई.आर.एस ने अपने सम्बोधन में कहा कि इस बार ज.ने.प.न्यास को माननीय राष्ट्रपति महोदय के करकमलों से राजभाषा कीर्ति पुरस्कारों में प्रथम पुरस्कार की शील्ड मिली है तथा हमारे कार्यालय के अधिकांश कर्मचारी अहिंदी भाषी होने के बाद भी पिछले नौ वर्षों से यह महत्वपूर्ण पुरस्कार हमें मिलता रहा है। इसके लिए उन्होंने सभी कर्मचारियों तथा अधिकारियों को बधाई दी।

मा. उपाध्यक्ष ने अपने सम्बोधन में यह भी कहा कि हम सभी को अपनी मातृभाषा का प्रयोग करने में गर्व महसूस करना चाहिए। उनका कहना था कि राष्ट्रभाषा, राष्ट्रध्वज और राष्ट्रगान हमारे देश की आत्मा हैं और जितना हम इनका सम्मान करेंगे देश की आत्मा उतनी ही पुष्ट होगी। साथ ही, उन्होंने अधिकारियों/कर्मचारियों से यह अपील भी की कि वे अपने कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें जिससे कि राजभाषा कार्यान्वयन की जिस श्रेष्ठ ऊँचाई तक हम पहुँच चुके हैं उस पर बने रहें ।

संस्कृति तब तक गूंगी रहती है जब तक राष्ट्र की अपनी वाणी नहीं होती, विश्व चेतना जगाने से पहले देश में राष्ट्रभाषा की चेतना जगाएँ।

– महदेवी वर्मा

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह

हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह

हिन्दी कहानी लेखन प्रतियोगिता - 2015

इस बार जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास के हिंदी पखवाड़े में कर्मचारियों की कल्पनाशक्ति को विकसित करने के लिए हिंदी कहानी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसके लिए सभी प्रतिभागियों को निम्नलिखित रूप से बिना शीर्षक की अधूरी कहानी पूरी करके लिखने को दी गई। उसे पढ़ने के बाद जनेप न्यास के कर्मचारियों ने अपनी-अपनी कल्पनाशक्ति से उसे पूरा किया। उनमें से प्रथम, द्वितीय तथा तृतीय पुरस्कार प्राप्त कहानियों को पाठकों को पढ़ने के लिए उपलब्ध कराया जा रहा है । ये कहानियाँ कर्मचारियों की मूल रूप लिखी हुई प्रस्तुत की गई हैं । हमने उनके लेखन से छेड़छाड़ नहीं की है ।

- सम्पादक

प्रश्नगत पूरी करो कहानी

इस कथा के नायक का जन्म आज से सौ वर्ष पहले शेखावाटी के किसी कस्बे में हुआ था। पिता का देहान्त बहुत पहले हो गया था। साधारणसी सम्पन्न गृहस्थी थी। घर में माता और दो भाई थे। माता यद्यपि पढ़ी-लिखी तो नहीं थी, परन्तु बहुत ही चतुर और बुद्धिमती थी। पति के मरने के बाद दोनों पुत्रों को अच्छी शिक्षा दी। घर-गृहस्थी को भी सँभालकर रखा। दोनों भाइयों में आपस में इतना प्रेम था कि गाँव के लोग इनको राम-लक्ष्मण की जोड़ी की उपमा देते। उस समय की रीति के अनुसार दोनों के विवाह बचपन में ही हो गये थे।

एक दिन, बड़े भाई रामकिशन ने मुंबई जाकर काम करने का विचार माता के सामने रखा। यद्यपि उसकी आयु केवल बीस वर्ष की ही थी, कभी परदेश जाने का अवसर भी नहीं मिला था। यात्राएँ बीहड़ और कष्टमय थीं, परन्तु पिता का साया सिर पर था नहीं। जो कुछ पास में था, वह पिछले वर्षों में खर्च हो गया था। इसलिए भारी मन से माता ने आज्ञा दे दी।

छोटे भाई शिवजीराम और पत्नी को वृद्धा माता की सेवा के लिये घर पर छोड़कर वह मुंबई के लिये विदा हो गया। शिवजीराम के जिम्मे कुछ काम तो था नहीं, इसलिये भाई के छोटे बच्चे को खेलाता रहता और गाँव में कभी साधु-सन्त आते तो उनकी सेवा में सबसे आगे पहुँच जाता।

तीन मील दूर जंगल में एक कुआँ था। सुबह जल्दी उठकर नित्य कर्म के लिये वहाँ चला जाता। साथ में चार-पाँच सेर अनाज ले जाता, जो वहाँ पक्षियों को चुगा देता। वहाँ से आकर अपनी दो गायों को दाना-पानी खिलाता, उनके ठाण की सफाई आदि का सब काम वही करता। फिर स्नान करके नियम से राम जी के मंदिर जाता, वे उनके कुलदेवता थे।

गाँव रहकर वैद्यक और नाड़ी-परीक्षा का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर लिया था। इसलिये बचे हुए समय में गरीब रोगियों की चिकित्सा करता और बहुतों को दवा के सिवा पथ्य भी अपने पास से दे देता था।

इन सबके अलावा, उसने एक नियम यह भी बना रखा था कि गाँव में किसी की भी मृत्यु हो, वहाँ जरूर पहुँच जाता और चलावे के सारे कामों में पूरे मनोयोग से हिस्सा लेता। चाहे बैसाख-जेठ की गर्मी हो या पूस-माघ की सर्दी की रात, ऐसा कभी नहीं हुआ कि शिवजीराम ऐसे मौके पर नहीं पहुँचा हो।

उन दिनों छुआछूत का बहुत विचार था, परन्तु उसकी मान्यता थी कि मृत्यु के बाद भगवान की जोत में जोत मिल जाती है। मृतक की कोई जाति नहीं होती। इसलिये सभी के यहाँ ऐसे मौकों पर पहुँच जाता। अपने गाँव और आस-पास के देहात में सब लोग उसको शिवजी भैया कहकर पुकारते थे।

माता धार्मिक भावना की थी और उसकी प्रेरणा से ही शिवजीराम की इन कामों में रुचि हुई थी, परन्तु पत्नी और भौजाई बराबर नाराज रहतीं। वे कहतीं-सब ऊलजलूल काम तुम्हारे जिम्मे ही पड़े हैं।

कभी-कभी गाँव के संडे-मुसंडे भी बीमारी या कष्टों का बहाना करके ठग ले जाते थे। शिवजीराम के पास आकर शायद ही कोई निराश लौटा हो। बड़ा भाई तीन-चार वर्षों के अन्तराल से गाँव आता और दो-तीन महीने रहकर फिर मुंबई चला जाता। माता का देहान्त होने के बाद पत्नी और पुत्र को भी वह अपने साथ मुंबई ले गया। गाँव में अब पत्नी और बच्चों के साथ शिवजीराम अकेले रह गये।

सन 1901 ई. में मुंबई में जो महामारी हुई, उसमें रामशिकान की मृत्यु हो गयी। उसकी पत्नी और चौदह वर्ष का

पुत्र रामदयाल दोनों रोते-बिलखते अपने गाँव वापस आ गये। शिवजीराम ने तो कभी कमाया नहीं था, परन्तु अब अचानक सारा भार उस पर आ पड़ा। मुंबई न जाकर अपने कस्बे में ही गल्ले की दुकान कर ली, भतीजे को भी साथ ले जाकर काम सिखाने लगा।

दुकानदारी में जो सूझ-बूझ और चालाकी चाहिये, उसका शिवजराम में सर्वथा अभाव था। लोग उधार ले जाते, रूपया-पैसा देते नहीं। वे जानते थे, शिवजीराम कभी कचहरी जाकर अदायगी के लिये नालिश नहीं करेगा। आखिर, दो तीन वर्ष के बाद नुकसान देकर दुकान उठानी पड़ी.....

इसके आगे दर्शनीय हैं, प्रतिभागियों द्वारा पूरी करके शीर्षक सहित लिखी गई कहानियाँ।
शायद इसी को कहते हैं - मुंडे मुंडे मतिर्भिन्ना।

हिन्दी पखवाड़े में प्रथम पुरस्कृत कहानी

मत परिवर्तन

श्रीमती शर्वरी शैलेश शिरोलकर
प्रयोगशाला तकनीशियन (अस्पताल)

कहानी अब तक..... आखिर दो तीन वर्ष के बाद नुकसान देकर दुकान उठानी पड़ी ....

और अब भी शिवजीराम पर अपने भतीजे, खुद के बच्चे बीवी और भाभी की जिम्मेदारी आ पड़ी। जमीन का एक छोटासा टुकड़ा या उसके पास उसमें ही कुछ अनाज मिलता था, उससे हि गुजारा शुरु होने लगा। लेकिन खाने वाले मुहँ जादा और कमाने वाला सिर्फ एक तब भी शिवजीराम अपने नित्यकर्म जैसे पक्षियों को दाना चुगाना, गाय को दाना पानी करना आदि बड़ी मन लगाकर करता था। दिन भर मन लगाकर काम करना और रात को जल्दी सो जाना उसकी आदत सी होगई थी। एक दिन रात को अचानक घर के बाहर कुत्ते भोंकने लगे, उसे लगा शायद इस वक्त किसी को उसकी जरुरत आ पड़ी इसलिए उसे बुलाने कोई आ गया होगा या गाँव में किसी का देहांत हुआ होगा तो उसे बुलाने लोग आये होंगे इसलिए वो लालटेन लेके बाहर आ गया। बाहर बहोत अंधेरा था, कुछ भी दिखाई नहीं दे रहा था, उसने गौर से देखा तो उसे कुछ परछाईं दिखाई दी। उसने आवाज दी और पुकारा अरे भाई कौन है वहां पर ? उसकी आवाज सुन के एक अंधुकसी आवाज आई वो आवाज कराहने की थी। शायद कोई बुरी तरह से जख्मी हो गया था। उसने और पास जाके देखा तो एक इन्सान खून से लतफत बेहोशी के हालत में लड़खड़ा रहा था। उसके शरीर पर बहोत सारे जख्म थे और दर्द के मारे वो बेहोशी के हालत में था। शिवजीराम उसके पास गया तो उसने देखा कि वह चलने कि स्थिति में नहीं था। इसलिए उसने अपने भतीजे और अपने लड़के को आवाज दी। शिवजीराम कि आवाज सुनते ही दोनों घर के बाहर भाग आये फिर शिवजीराम उनकी मदद से उस आदमी को घर ले आए। शकल से वह आदमी किसी दूसरे देश का लग रहा था। शिवजीरामने अपने लड़के और भतीजे को कहा चलो अभी सो जाओ बहुत रात हो चुकी है। कल सुबह होते ही इस आदमी का नाम पता पूछते हैं और उसे मदद करते हैं।

सूरज निकलते ही शिवजीराम उस आदमी की हालत देखने आए। शिवजीराम ने घर में कुछ पेड़ पत्तीयों की दवाई का संग्रह किया था। उसने देखा कि उस आदमी के शरीर पर बहुत ही निशान थे उसकी वजह से जख्म से खून भी आया था। शिवजीराम ने अपनी पत्नी को पानी गरम करने के लिए कहा जैसे ही उसने गरम पानी लाया शिवजीराम ने गरम पानी से उसके बदन को अच्छी तरह से पौंछ डाला। उसके शरीर पर अभी काफी घाव दिखने लगे। फिर शिवजीराम को बड़ी फिक्र लग रही थी। कौन होगा वो ? कहाँ से आया होगा ? कहाँ जाना होगा उसे ? यह सब सवालों के घेरे उसके मन में थे। लेकिन शिवजीराम लगातार उसकी सेवा में रत था। यही उम्मीद के साथ कि एक दिन यह आदमी बोलने लगेगा और उसे रास्ता मिल जायेगा। दिन ब दिन शिवजीराम अपने खुद के काम संभालकर मन लगाकर उसकी सेवा करता था। जिसके कारण उसकी बीवी और भाभी उसे कोसते थे। अरे कौन है ये ? आदमी का अता ना पता आप खामखा उसे ले बैठे हो। इससे आपको क्या मिलेगा ? ना अपना कोई सगेवाला है, फिर भी आप उसकी सेवा में लीन हो। ऐसे ही दिन जाने लगे और उस आदमी की तबीयत

में कुछ कुछ बदलाव आने लगे। उसके शरीर के घाव भरने लगे। और अचानक एक दिन उस आदमी ने अपनी आँखे खोली और इधर-उधर देखा। बड़ी परेशानी के साथ वह उठने लगा। फिर भी कराहता हुआ वह सो गया। और फिर यहाँ वहाँ देखता रहा। शिवजीराम को बड़ा ही आनंद हुआ। इतने दिन उसने खयाल रखा था आज उसका यह अंजाम अच्छा देखकर उसे बहुत आनंद हुआ। उसने कहा भाई आप कहाँ से हो? आप को कहाँ जाना है? आप यहाँ पर कैसे आये? वह आदमी शिवजीराम के आँख में आँख डालके देखने लगा। शायद उसे कुछ याद ही नहीं आ रहा था। शिवजीराम ने उसे कहा भाई आप को चिंता करने की अभी कोई जरूरत नहीं है। शिवजीराम को गाँव में रहकर वैद्यक और नाड़ी परीक्षा का अच्छा ज्ञान प्राप्त हुआ था। इस वक्त वह काम आया उसका उसको बहुत ही आनंद हुआ। एक इन्सान की जान बचाकर उसने मानवधर्म का पालन किया था।

रुग्णसेवा से बड़ी ईश्वरसेवा हो ही नहीं सकती। उसकी माँ बड़ी धार्मिक विचार की थी वो भी उसे यही ज्ञान देती थी। वह कहती थी सेवा ही शक्ती है, सेवा ही साधना है, सेवा ही पूजा है, उसके विचार यही थे कि सूर्य, चंद्रमा, जल, अग्नी, वायु सब कुछ हमें देते हैं पर हमसे कुछ लेते नहीं हैं। सेवा में दान का ही भाव होना चाहिए उसके बदले कुछ पाने कि आस्था नहीं रखनी चाहिए। यह उसके माँ के विचार से वह प्रेरित था। उसने उस आदमी की सेवा का व्रत चालू रखा और एक दिन उस आदमी को होश आ गया। उसे याद आ गया कि वो कौन है उसके साथ क्या हादसा हुआ था। वो यहाँ तक कैसे आया? लेकिन उसे मन में बहुत डर लगने लगा क्योंकि वह एक दूसरे देश का फौजी था। उसे लगा अगर इन्हें पता चल जायेगा कि वह खुद दुश्मन को ही मदद कर रहा है। तो शायद उसकी जान को दोबारा खतरा हो सकता है। लेकिन उसने मन में विचार किया कि इस भगवान जैसे आदमी से झूठ क्यूं बोले? इसीने तो मुझे जीवनदान दिया है। इसलिए वह शिवजीराम को बोला, भाई आपने मेरी जान बचाकर बहुत मेहरबानी की है। मेरी अभी अभी शादी हुई है। और मेरी पत्नी जो कि गर्भवती है मेरी बेसबरी से राह देखती होगी। मेरी बुढ़ी माँ है वह अंधी है। पर वह भी मेरी राह देखती होगी। मैं आपको धोखा नहीं देना चाहता इसलिए कह रहा हूँ कि आपके शत्रुदेश का मैं एक फौजी जवान हूँ। और यह कहकर शिवजीराम के पैर पड़कर जोर जोर से रोने लगा।

शिवजीराम ने उसे उठाया और अपने साथ बिठाया और बोले पहले आप एक मनुष्य हैं और मैंने तो अपना मानवधर्म निभाया है। और उसे पूछा आप आपका धर्म निभाते हुए यहाँ तक कैसे आये? तब उसीने बोला कि जंगल में मुलुख में धोखे से घुसने के लिए हम निकल पडे थे लेकिन जंगल में मैं अपना रास्ता भुल गया। और कुछ लंगली जानवरों का शिकार बन गया था। उनसे जान बचाकर भागते भागते मैं यहाँ तक आ पहुँचा लेकिन आज आपने मुझे सही रास्ता दिखाया है आपका मैं बड़ा आभारी हूँ। आज मुझे समझा है कि दुश्मनी से ही सबकुछ हासिल नहीं किया जा सकता बल्की अच्छे व्यवहार और अच्छे कर्तव्य से हम अपना मकसद पा सकते हैं। इस मुलुख को अभी से कुछ धोखा नहीं होगा ये मेरा वादा है आपसे। कभी-कभी दुश्मनी की बजह मैत्रीपूर्ण संबंध रखकर हम सब बहुत सारी तरक्की कर सकते है। शिवजीराम को भी बहुत आनंद हो गया कि उसने एक आदमी का ही सही लेकिन मत परिवर्तन किया है और मैत्रीपूर्ण संबंध रखेन की शिक्षा दी है। उसने दूर देखा तो उसकी माँ का चेहरा उसे दिखाई दिया जो उसे गर्व से देख रही थी। ■

कविता

देश का सम्मान हिन्दी

राष्ट्रभाषा हिन्दी का विशाल तरुवट
संस्कृति सभ्यता शक्ति है अपार।
सबको दिखलाती सूरज की रोशनी
देश का सम्मान जंजीरें बहुत पुरानी।

डंके की चोटपर सत्य की पताका
घुल मिल जाती देती सबको मौका।
समता व्यापकता ममता की मूरत
स्वागत करती सबका सुन्दरता की सूरत।

समुद्री गहराई उदारता की प्रतिमुर्ति
एकता अखंडता नए जोश की स्फूर्ति।
खादी का आदर्श गांधी का सपना
नई उमंग तरंग जीवन का आइना।

उन्नति की राहपर सत्य की अनुभूति
जग में प्रेम सुगंध महक फैलाती।
सर्वगुण संपन्न अमिट मीठी प्यास
इसमें ताजगी ताकत का अहसास।

प्रो. डॉ. प्रकाश वि. जीवने
नागपुर

जीवन का मूल्य

श्रीमती बेला मनोज आगलावे
लिपिक (एम.एस.)

शिवजीराम, नाम के साथ ही भगवान राम का परम भक्त था। गांव से तीन मील दूर जंगल में रामजी का मंदिर था जहाँ वह नित्य रूप से चला जाता था। जो उनके कुल देवता थे। मंदिर जाकर अपने दुख-सुख वह भगवान से कहता तो उसे बड़ा अच्छा लगता।

भोला-भाला शिवजीराम धार्मिक वृत्ति का था। औरों जैसी चालाकी उसमें नहीं थी। जब उसकी माँ और भाई चल बसे तो उसपर अपनी पत्नी और बच्चों के साथ भौजाई और भतीजे का सारा भार पड़ा। घर चलाने के लिए उसने जो दुकान कर ली थी वह भी उसे अपने स्वभाव के कारण गँवानी पड़ी। भारी नुकसान के साथ उसे दुकान बंद ही करनी पड़ी।

अब कमाई का एक जरिया भी खत्म हो चुका था। तिस पर, शिवजीराम की पत्नी और भौजाई रोज उसे ताने देने लगीं। एक दिन तंग आकर वह तड़के सुबह घर से निकल गया। और नित्य कर्म के अनुसार राम मंदिर चला गया।

मंदिर में उस समय कोई न था। उसे न जाने क्या सूझी? वह मंदिर के पास के कुएँ की ओर बढ़ गया। इरादा उसका आत्महत्या का था। जैसे ही वह कुएँ में छलांग लगाता, अचानक पीछे से आवाज आई, ''ठहरो, रुको, ऐसा न करो, शिवजीराम ने पलटकर देखा तो एक योगी-पुरुष पीछे खड़े थे। और उसे ऐसा न करने के लिए कह रहे थे। उस योगी के चेहरे पर भव्य तेज था। जिसे देखकर शिवजीराम उसके पैरो में गिर पड़ा। और फूट-फूटकर रोने लगा। रोते-रोते उसने अपनी सारी कहानी बयां कर दी कि क्यों वह अपना जीवन समाप्त करना चाहता था।

उस संत, योगी-पुरुष ने दोनों हाथों से सहारा देकर उसे ऊपर उठाया। और बड़े ही प्यार से समझाया, कहा, 'पुत्र, जीवन देना-लेना सब ईश्वर के हाथ में है। जीवन अमूल्य है। इसका महत्व समझो। खुद के लिए नासही औरों के लिए तुम जियो, तुम्हीं जिंदगी से लगाव हो जाएगा।' कहते हुए उस योगी-पुरुष ने एक चमकता हुआ काँच का छोटासा टुकड़ा शिवजीराम को दिया और कहा, 'यह लो पुत्र, और इसे मैं कहूँगा वैसे चार लोगों को दिखाना। किंतु बेचना मत। चारों के पास जाकर आओ और फिर मुझसे मिलो' कहकर योगी पुरुष वहाँ से चला गया।

शिवजीराम ने वह काँच का चमकीला टुकड़ा लिया और सबसे पहले एक फलवाले के पास गया उसे वह टुकड़ा दिखाया। फलवाले ने कहा, 'इसके बदले में तुम्हें एक संतरा दे सकता हूँ।' लेकिन शिवजीराम ने वह संतरा न लेते हुए वह काँच का टुकड़ा लेकर वापस आ गया।

इसके बाद वह अनाज की दुकान पर गया। दुकानवाले ने कहा, 'इसके बदले में मैं तुम्हें एक बोरी गेहूँ दे सकता हूँ।' लेकिन यहाँ भी शिवजीराम काँच टुकड़ा लेकर वापस आ गया।

तीसरी बार उसे लोहार के पास जाना था। लोहार ने काँच के उस टुकड़े को देखकर कहा, 'अगर मैं इस पर अपना हतौड़ा मार दूँ तो तेरे पास कुछ ना बचेगा।' भोला-भाला शिवजीराम काँच का टुकड़ा लेकर वापिस आ गया।

आखीर में, उसे एक जौहरी के पास जाना था। सो, शिवजीराम उस काँच के टुकड़े को लेकर गांव के जौहरी के पास गया। संयोगवश, शिवजीराम को जौहरी की दुकान पर अपना मित्र किशनचंद मिला। किशनचंद गांव के जौहरी अमीरचंद का बेटा था। जो अब अपने पिता का कारोबार चला रहा था। शिवजीराम और किशनचंद बचपन के साथी थे। दोनों अच्छे दोस्त थे। लेकिन परिस्थितियों ने दोनों को अलग कर छोड़ा था।

शिवजीराम के अपनी दुकान पर देखकर किशनचंद बहुत खुश हुआ। शिवजीराम भी बड़ा आनंदित हुआ। और उसने अपने पास का वह काँच का टुकड़ा किशनचंद को दिखाया। चमकीले काँच का वह टुकड़ा देखते ही किशनचंद की आँखें फटी की फटी रह गईं। उसने शिवजीराम से पूछा,'यह तुम्हें कहाँ से मिला?' शिवजीराम ने अपनी पूरी कथा किशनचंद को बयां कर दी। किशनचंद ने कहा, 'यह तो बेशकीमती हीरा है। इसका मूल्य तो करोड़ों में है। लेकिन मैं इसे नहीं ले सकता। क्योंकि जिसने तुम्हें यह टुकड़ा दिया है वह अवश्य ही कोई तेजस्वी होगा। तुम यह टुकड़ा उनको वापस करदो। अन्यथा मुझे पाप लगेगा।'

शिवजीराम ने अपनी कथा उसे सुनाई और कुछ मदद मांगी। किशनचंद ने कहा, 'देखो शिवजीराम, तुम तेरे अच्छे दोस्त अवश्य हो। किंतु मेरे धन देने से तुम्हें कुछ दिनों की ही मदद हो सकती है। इसकी बजाय तुम अपनी वैद्यक और चिकत्सा के कौशल का उपयोग क्यों नहीं करते? क्या तुझे याद नहीं कि किस तरह तुमने मेरे बेटे को साँप के काटने से बचाया था? उस समय तुम्हारी जड़ी-बूटीयों ने जो जादू दिखाया था उससे मेरा

...शेष पृष्ठ 31 पर...

दुनिया झुकती है।

शेखर र. मालवदे
अधीक्षक (यातायात)

शिवजीराम अंदर से अब पूरा टूट चुका था। अपनी खाली दुकान में भयंकर हताशा में सर पकड़ कर वह बैठा था। दिमाग चलाना उसका काम नहीं था पर अब तो उसका दिमाग बिलकुल ठप्प हो गया था। अनेकों सवालों से उसका मन पूरी तरह से घिर गया था। घर जाने की भी हिम्मत नहीं थी उसमें।

अपने घरवालों के विरोध में जाके उसने पूरी जिंदगी सिर्फ गाँववालों की सेवा का ही सोचा था। एक कौड़ी का फायदा किया नहीं अपने लिये आजतक। जोर जोर से रोने का मन हुआ उसका पर वह रो नहीं पाया। उसके मुँह से कुछ अस्फुट हुंकार आये और वह आँखे बंद करके पड़ा रहा बड़ी देर तक।

कितना समय गया उसे पता नहीं चला। नींद तो आने से रही। घर मुँह दिखाना भी मुश्किल। मस्तिष्क में सिर्फ प्रश्न, प्रश्न और प्रश्न जिसका कोई हल नहीं। कोई दोस्त भी नहीं। जिन्हें अपना समझा उन्हीं गाँववालों ने उसकी पीठ में खंजर भौंक दिया। उसे बड़ी चिढ़ आ रही थी अपने आप पर ...

सोच सोच के वह थक गया। रात के सन्नाटे में अचानक किसीने उसकी दुकान की कुंडी जोर से बजायी। वह चौंक के बोला, 'कौन है?'

'बच्चा ! दरवाजा खोलो।' बाहर से आदेश हुआ।

अंधेरे में टटोलकर उसने माचिस ढूँढ़ी और एक तीली जला ली। उसने उस प्रकाश में एक मोमबत्ती का अधजला टुकड़ा ढुँढा और वह दरवाजे की तरफ बढ़ा। दरवाजा खोलते ही वह थोड़ा चौंक गया। बाहर सफेद लंबी दाढ़ी धारण किये हुए साधु जैसे दिखने वाला एक व्यक्ती खड़ा था। मोमबत्ती के हिलते हुए उजाले में उसे वह ठीक तरहसे दिखाई नहीं दे रहा था। परउसकी शकल उस माहौल में काफी डरावनी लग रही थी।

'क्या चाहिए बाबा?' उसने आशंकित हो कर पूछा 'कुछ खाने पीने को है?' बड़ी दूरसे चलके आया हूँ। शिवजीराम सवाली चेहरे से उस साधु की तरफ देखता रहा। मैं तो पूरी तरह कंगाल हुआ हूँ और फिर भी ये नसीब कैसा तमाशा दिखा रहा है। और एक याचक खड़ा है। उसे हँसते हुए वह देखता रह गया। पर उसे याद हुआ की उसने जो रोटी लायी थी वह ऐसे ही पड़ी है। निराशा में वह अपनी भूख भी भूल गया था। सहसा उसकी मुँह से निकल गया 'महाराज पधारिये'।

उसने बाजू में पड़ी लालटेन उठायी और जला दी। अब उसे उस आगंतुक की चर्या ठीक से दिखाईदे रही थी। उस विचित्र रोशनी में उसकी आँखे चमक रही थी। उसे लगा की वह बेवजह मुस्कुरा रहा है।

शिवजीराम ने रोटियोंका डिब्बा खोलके सामने रखा और घडे में से थोड़ा पानी उसने पास पड़े गिलास में भर दिया। तब तक साधु महाराजने नीचे बिछाई चटाई पर आसन ग्रहण कर लिया था।

वह बड़ा भूखा लग रहा था। बड़ी तेजीसे उसने सारी रोटियाँ, सब्जी और प्याज के साथ साफ कर दिया और गटगट करके पानी पी लिया। बाहर जा कर हाथ धोके अपने वस्त्र से ही मुँह पोछते वह अंदर आया और एक जोर की डकार मारी।

शिवजीराम उसे कुछ भी कहे बिना देखते रह गया। 'खाना थोड़ा ही था' वह हिचकिचाते हुए बोला।

'बच्चा, फिक्र न कर। मेरा पेट भर गया है। बोल बदले में तुम्हें क्या चाहिये। मैं प्रसन्न हूँ। तुम तो बड़े दानी हो।' साधु जोर से हँसते हुए बोला।

महाराज कुछ नहीं बस आपकी कृपा रहे। वह धीमे से शरमाते हुए बोला। उसका निराश चेहरा वो छुपा नहीं सका।

साधु फिर से जोर जोर से हँस पड़ा और उसने हवा में हाथ घुमाया। कमाल की बात यह थी कि जब उसने मुट्ठी खोली तो अंदर चमचमाती हुई हीरे की एक अँगूठी थी। 'यह लो बच्चा' वह बोला।

'नहीं, नहीं, बाबा यह सब मुझे नहीं चाहिए।' शिवजीराम झिझकते हुए बोला।

'तो फिर क्या पसंद करोगे? हीरों का हार? रुपये?' बोलते बोलते उस साधुने फिर से दोनों हाथ हवामें घुमाकर रुपयों की थप्पीसी निकाल रखी सामने।

शिवजीराम अब की बार डर कर पीछे हट गया। 'महाराज मुझे यह सब नहीं चाहिए। मैं तो एक दिवालिया हारा हुआ आदमी हूँ। अपने घरवालोंको मुँह दिखाने की हिम्मत नहीं है मुझमें। अगर मेरे लिये कुछ करना चाहते हो तो मुझे आप अपने साथ ले जाइये अपना शिष्य बनाकर। मैं सन्यस्त होना चाहता हूँ। इस गाँव से/ लोगों से दूर। मैंने इनके लिये क्या कुछ नहीं किया पर बदले में मैं नंगा हो गया। मुझे यहाँ से भागना है।' विवश होकर उसने अपने मन की पूरी बात बता दी। बताने के बाद वह सोच में पड़ गया कि क्या इस अनजान को ये बताना उचित था? पर ये सब उसकी मुँह से सहज ही निकल गया।

साधुमहाराज उसकी ओर देखने लगे। शिवजीराम से उन्होंने पूरी बात जान ली और फिर अपनी थैलीसे चिलम निकालकर जला ली। उसके कश लेते हुए वह सोचने लगे।

'आप महान योगी हैं, आप मुझे इससे छुटकारा दीजिए। ये जग मिथ्या है। माया है। झूठ है। आप मुझे इससे मुक्ती दिलायें।' वह गिडगिडाते हुऐ साधू के पाँव पकड़कर बोला।

'उठ बेटा। अरे मैंने कोई चमत्कार नहीं किया। मैं भी तुम्हारी तरह एक दुनिया का मारा ही था। घर का भागा ही हूँ। ये सब योग विद्या नहीं है। ये तो महज हाथ की सफाई है।'

साधु आगे बोला 'आँसू पोंछो शिवजीराम, चलो मेरे साथ। लेकिन ये मत सोचो की तुम मुझसे कोई योग विद्या सीखोगे। हाँ लागों को उल्लू बनाके तुम्हें योगी-गुरु बाबा बनने का मंत्र मैं तुम्हें जरूर सिखाऊंगा।

'लेकिन महाराज ये तो लोगों को फँसाने का काम होगा।' शिवजीराम बोला।

'हाँ, तो, लोगों ने कहाँ तुम्हें तम्हारे अच्छे पन को सराहा है? नाजायज फायदा ही तो उठाया है। अब तुम्हारी बारी है। मैं हूँ तुम्हारे साथ।' साधूबाबा की वाणी में निश्चय था। दूसरे दिन शिवजी के गाँव से गायब होने की खबर पुरे इलाके में फैल गयी। दो महीने तक चर्चे रहे फिर धीरे धीरे लोग भूल भी गये।

घरवालों ने थोड़े दिन तक शौक मनाया। भाई के लड़केने भी कुछ मोल मजूरी शुरु की। भोजाई तो खुश हुई के ये नकारा देवर चला गया। वैसे भी क्या काम का था। गाँव शिवजीराम को भूल गया ही था कि छह महिनों के बाद साधुओं का एक जत्था गाँव के मंदिर में चला आया। बाबा शिवजीराम और उनके बीस पच्चीस शिष्यगण आकर मंदीर के प्रांगण में बस गये।

बड़ी सी दाढ़ी धारण किये हुए शिवजीराम महाराज आँखें बद करके जप में लगे थे। खबर फैलती गयी और कहाँनियाँ भी फैलती गयीं कि कितने अवतारी पुरुष हैं ये बाबा। हवा से अँगूठियाँ, भस्म से सोने की चैनें तथा फल, फूल निकालते हैं। हर प्रश्न का हल है उनके पास बड़े साक्षात्कारी महाराज है।

जैसे कहानियों की कमी नहीं थी वैसे भीड़ की कमी नहीं। सुनी, अनुसनी, मनगढ़ंत सब कहानियाँ इस महाराज से जुड गयीं। पूरा गाँव का गाँव शिवजी महाराज के चरणो में आ पड़ा।

आस-पड़ोस के गाँव से भी भक्त गण दर्शन करने आ गये। शिवजी महाराज की ख्याति चारों ओर फैल गयी। जितना शिवजीराम ने लोगों के लिये आयु भर किया जितना लोगों को दिया, उससे दसगुना पाया।

एक बात उसने सीखी कि दुनिया के सामने झुको तो दुनिया दबोच लेती है और उसे ठगो तो दुनिया झुकती है। सिर्फ झुकाने वाला चाहिये। ■

...पृष्ठ 29 से जारी

जीवन का मूल्य

घर आज भी हरा-भरा है। कुछ गुण तुम अपने बेटे और भतीजे को भी सिखा दो तो उनकी भी मदद हो जाएगी। घर-परिवार भी चलाने में आसानी हो जाएगी। गाँव को तुम जैसे वैद्य चिकित्सक की बहुत जरुरत है। यह हीरा तो तुम उस तपस्वी को ही वापिस कर दो। इसके बदले में मैं तुम्हें गाँव के बीच एक दुकान के लिए जगह दे सकता हूँ जहाँ तुम अपना वैद्य-हकीम का कार्य शुरु कर सकते हो। मुझे तुम्हारा कर्जा चुकाने का मौका मिला है। और तुम्हें अपना जीवन सँवारने का। इसे यूँ ही व्यर्थ न गँवाओ।

किशनचंद की बातें सुनकर शिवजीराम की आँखे भर आई। उसने किशनचंद का बहुत आभार माना और हीरा (काँच का चमकीला टुकड़ा) लेकर उस तपस्वी, योगी पुरुष के पास उसी राममंदीर में लौट आया।

शिवजीराम ने हीरा उस योगी पुरुष को लौटाते हुए सारी घटनाएँ बयां कर दी। यह कोई काँच का टुकड़ा नहीं बल्कि एक बेशकीमती हीरा है। यह उसे ज्ञात हो चुका था।

उस योगी पुरुष ने कहा, ''पुत्र, इन काँच के टुकड़े की कीमत फलवाले ने एक संतरा, दुकानवाले ने एक बोरी गेहूँ तो लोहार ने उसे पत्थर समझा। लेकिन बालक, हीरे की उसली पहचान तो जौहरी ही जानता है ना। जो किशनचंद ने किया। तुम भी वही हीरा हो, जो लोगों को जीवनदान दे सकता है। अपने अंदर के गुणों को उजागर करो और सत्कर्मों में अपना जीवन व्यतीत करो। तुम्हें पहचानने वाला तुम्हारा सखा ही सच्चा जौहरी है।''

उस तेजस्वी योगी पुरुष की बातें सुनकर शिवजीराम को ऐसा लगा जैसे समझो स्वयं भगवान राम उसके सामने खड़े हैं और उसके पथदर्शक बने हैं। भगवन! कहकर शिवजीराम उस तेजस्वी के चरण छू कर बोला, मेरी आँखें खुल गई, जीवन अमूल्य है, खुदके लिए न जी सके तो औरों के लिए जिओ इसमें ही सच्चा आनंद और ये ही जीवन का सार है।''

मन में जीवन की नई किरनों को साथ ले, शिवजीराम के कदम गाँव की ओर लौट चले। ■

(अब प्रस्तुत है प्रश्नगत कहानी 'शिवजी भैया' का शेष भाग। 'अभिव्यक्ति' के पाठक इस भाग को भी पढ़कर यह निर्णय करें कि जनेप न्यास के कर्मचारियों का कहानी के भाव को समझ कर लिखने का प्रयास कितना सफल रहा।)

इसी बीच, भतीजा रामदयाल अपने पिताकी तरह ही काफी होशियार हो गया और मुम्बई चला गया।

रामदयालके पिताका वहाँके बड़े व्यापारियोंसे अच्छा सम्पर्क था और उसकी ईमानदारीकी साख भी थी। मुम्बई जाकर उसने कॉटन-एक्सचेंजमें अपने पिताके नामके पुराने फर्मको फिरसे चालू कर लिया। संयोग ऐसा बनाकि थोड़े वर्षोंमें ही काम जम गया और उसके पास लाखों रुपये हो गये।

कई बार चाचाको मुम्बई आनेके लिये रामदयाल ने लिखा, परन्तु गाँवमें इतने तरहके काम रहते कि शिवजीराम मुम्बई न जा सका। बाद में द्वारकाधामकी यात्राके समय उसको सपरिवार मुम्बई ठहरनेका मौका मिला। वहाँ अपने भतीजेका वैभव और सुनाम देखकर उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। रामदयालने और उसकी पत्नीने उन्हें सदाके लिये वहीं रहने का आग्रह किया, परन्तु उसका मन महानगरीमें नहीं लगा और थोड़े दिनों बाद ही वापस राजस्थान आ गया। अब शिवजी भैया की जगह सेठ शिवजीराम हो गया। दान-धर्मकी मात्रा बढ़ गई, परन्तु प्रौढ़ हो गया था, इसलिये पहले जितनी भागदौड़ नहीं कर पाता था।

इतने गुणों के बावजूद उसमें एक कमी रही कि घरकी समस्याओंकी तरफ कभी ध्यान नहीं दिया। दोनों लड़कियोंका विवाह तो अच्छे घरोंमें हो गया, परन्तु एकमात्र लड़का लिख-पढ़ नहीं पाया।

कुछ ऐसे लोग भी थे, जिनको शिवजीरामके यश और मान-बड़ाईसे ईर्ष्या होने लगी। उन्होंने मुम्बईमें रामदयालके कान भरने शुरू किये कि इतनी मेहनत करके कमाते तो तुम हो और वाह-वाही तथा सेठाई सब तुम्हारे चाचाजीकी होती है। उसकी स्त्री तो पहलेसे ही भरी बैठी थी, पर पतिके डरसे चुप थी। उसके बहुत कहने-सुननेपर कई वर्षों बाद रामदयाल स्त्री-बच्चों सहित मुम्बईसे अपने गाँव आया। वास्तवमें ही, जो बात लोगोंने कही थी, वह सही निकली। चारों तरफ सेठ शिवजीरामकी प्रशंसा हो रही थी। वे जिसें तरफ से निकल जाते लोग खड़े होकर, राम-राम करते। सुबह-शाम सैकड़ों अभ्यागतोंके लिये अन्न-क्षेत्र चालू था। मौका देखकर रामदयालने चाचा से बँटवारेके लिये कहा। एक बार तो शिवजीरामको बहुत कष्ट हुआ; पर तुरन्त ही सम्हलकर बोले - 'बेटा! कमाया हुआ तो सब तुम्हारे पिताजीका ही है, मैंने तो उम्रभर केवल खर्च ही किया, इसलिये जैसे चाहो कर लो, मुझे इसमें क्या कहना है?'

एक कागजपर सम्पत्तिका ब्यौरा लिखा गया। बड़ी हवेली और मुम्बईका फर्म रामदयालने अपने लिये रखना चाहा। नकद रुपयोंका दो बराबरका हिस्सा हुआ। अपना मकान छोड़कर जानेमें बहुत क्लेश होता है, परन्तु शिवजीरामके चेहरेपर जरा भी शिकन नहीं आयी। उसने कहा-'तुम्हारी मान-बड़ाई और इज्जतके लिये बड़ी हवेलीमें रहना सर्वथा उचित भी है। मैं कल ही छोटी हवेलीमें चला जाऊँगा। अब रही नगद रुपयेकी बात, सो मुझे तो अन्दाज ही नहीं था कि अपने पास इतना सारा रुपया है! मैं इनको कहाँ सम्हाल पाऊँगा? देवदत्त जैसा है, तुम जानते ही हो, इन रुपयोंको तुम अपने पास ही रहने दो। खर्च के लिये जितनी जरूरत होगी, मँगवा लिया करूँगा।' अन्तिम वाक्य कहते हुए उसकी आँखें जरूर गीली हो गयी थीं। रामदयाल सोचने लगा कि न तो चाचाजीने हिसाबकी जाँच की, न हवेली छोड़नेमें आपत्ति की और न मुम्बईके फर्मकी साख (गुडविल) - के बदलेमें ही कुछ चाहा, बल्कि सारे रुपये भी मेरे पास ही छोड़ रहे हैं।

उसे अपने आपपर ग्लानि और लज्जा हो आयी। रोता हुआ चाचाके पैरोंपर गिरकर क्षमा माँगने लगा। कहने लगा - 'लोगोंके बहकावे में आकर मैंने यह नासमझी की। मुझे किसी प्रकारका भी बँटवारा नहीं करना है। बड़े भाग्यसे आप-सरीखे चाचा मिलते हैं। पिताजी तो बचपनमें ही छोड़कर चले गये। अगर आप पढ़ा-लिखाकर मुझे योग्य नहीं बनाते तो भला आज हम सबका क्या होता?'

कुछ दिनों बाद मुम्बई जाते समय अपने छोटे भाई देवदत्तको भी साथ ले गया। वहाँ जाकर उसकी पुरानी आदतें छूट गयीं और वह भी काममें लग गया।

मैंने जब शिवजीरामको देखा था, उस समय वे अस्सी वर्षके वृद्ध थे। संयम और त्यागका जीवन रहा, इसलिये उस समय भी स्वास्थ्य अच्छा था। दान-धर्मके तौर-तरीके बदल गये थे। सदाव्रत और ब्राह्मण - भोजनके साथ-साथ, उनके द्वारा स्थापित स्कूल, अस्पताल और जच्चाघर भी जनताकी सेवा कर रहे थे।

('कल्याण' पत्रिका से साभार)

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास के हिन्दी पखवाड़े में कर्मचारियों तथा अधिकारियों की हिन्दी लेखन क्षमता को निखारने के लिए 'आस्था और अंधविश्वास' जैसे ज्वलंत विषय पर हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में विजेता रहे पहले तीन प्रतिभागियों के लेख पाठकों को मूल रूप से पढ़ने के लिए प्रस्तुत किए जा रहे हैं जिनहें पढ़कर पाठकों की यह धारणा अवश्य ही प्रबल होगी कि हिन्दी जहाँ जैसे परिवेश में प्रयोग की गई, उसने वहाँ वैसा ही रूप ग्रहण कर लिया। हिन्दी भाषियों को भले ही इस हिन्दी में गलतियाँ नजर आएँ पर अन्य भाषा भाषियों के लिए यह हिन्दी गलत नहीं है और उत्तर भारतियों द्वारा बोली और लिखी जाने वाली हिन्दी उन्हें कठिन लगती है। 'अभिव्यक्ति' के पाठक इस बात को सहज ही समझ सकते हैं कि यदि हिन्दी भाषी प्रदेशों के अलावा अन्य सभी प्रदेशों में भी हिन्दी का विकास करना है तो इस स्थिति और भाषा परिवर्तन को हमें बहुत दूर तक स्वीकार करना होगा ।

- सम्पादक

आस्था और अंधविश्वास

श्री संतोष भिवा परब
कनिष्ठ अभियंता

ईश्वर को सर्वोच्च सत्ता मानते हुए उसके अस्तित्व पर विश्वास करना ही आस्था है। ईश्वर की संकल्पना का विचार, आस्तिक श्रद्धापूर्वक करता है, तो नास्तिक बुद्धीवाद से करता है।

ईश्वर एक सत्य है, धारणा है या प्रकल्पना है ये निश्चित कहना कठिन है। आस्तिक उसे भिन्न भिन्न रूप में देखता है तो नास्तिक को उसके आस्तित्व पर ही संदेह है। ईश्वर अगर धारणा है तो ये कल्पना की गम्भीर तथा ऊँची उड़ान है, ऐसा नास्तिक कहते हैं। ईश्वर पर आस्था न रखनेवाले लोग ऐसा कहते हैं कि अगर ईश्वर सत्य या वास्तविकता है तो उसे विज्ञान द्वारा खोजा जाना चाहिए, तर्को द्वारा पहचाना जाना चाहिए तथा तथ्यों द्वारा प्रमाणित किया जाना चाहिए। ऐसे लोग जो ईश्वर को स्पष्ट प्रमाण के आधार पर खोजने का प्रयास करते हैं, असफल हो जाते हैं जबकि जो लोग ईश्वर को श्रद्धापूर्वक मानके उसकी खोज करते हैं वे उसे सृष्टी के प्रत्येक अणु तथा रचना में पा लेते हैं।

आस्था यानि बिना सोचे समझे प्रमाण का आग्रह न धरते हुए किया हुआ विश्वास। आस्था का बस इतना ही अर्थ लेना चाहिए कि जो बुद्धी के समझ में आए और किसी स्पष्ट प्रमाण का आग्रह न धरते हुए तर्कशुद्ध विचारों को समझ के आत्मानुभव और अंतर्मन के स्तर पर ईश्वर को जानना है। ईश्वर के प्रति आस्था रखने वाले कहते हैं कि अगर शाश्वत सुख की चाहत है तो ईश्वर की शरण ग्रहण करनी पड़ेगी।

आस्था अनेक दृष्टी से फायदेमंद होती है। आस्था हममें प्रेम, सहयोग, परोपकार, सहानुभूति और समाजसेवा की भावना को जागृत करती है। आस्था हमें आने वाले संभावित दु:खों से दूर रखती है। आस्था हमें वो नैतिक मूल्य प्रदान करती है जिससे हमें शक्ति, स्थिरता और शांति मिलती है। आस्था हमें अच्छे-बुरे, सही-गलत, नैतिकता-अनैतिकता के बीच में अंतर पहचानने का विवेक प्रदान करती है। आस्था हमें निराशा में भी प्रेरणा देती है। आस्था ही संकट समय मनुष्य को प्रेरित करती है। आस्था ही है जो अपने लक्ष्य को आसान बनाती है। विफलता के मुख्य कारकों को देखा जाए तो आस्था का अभाव एक प्रमुख कारण है। ईश्वर के प्रति आस्था रखनेवाले कहते हैं कि मानवी जीवन की भागमभाग के बीच जीवन की पीड़ाओं और प्रसन्नताओं के बीच, आस्था से हमें हमारे अंदर के मूल आधार से जोड़ने में आसानी होती है। किसी भी तरह की आस्था रखना अच्छा होता है, ऐसा आस्तिकों का कहना है। कुछ लोग ईश्वर, धर्म, पंथ और कुछ प्रथाओं के प्रति आस्था रखते हैं और ये आस्थाएँ उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग होती हैं। इन आस्थावादी लोगों का कहना है कि विश्व में वैज्ञानिक विधियोंने मानवता के कल्याण में जो दायित्व दिया है उतना ही दायित्व आस्थाएँ और उससे जुड़े कर्मकांड देते आये हैं। विश्व में शांति, स्थिरता, सुख और कल्याण है तो उसका अधिकांश श्रेय आस्था को जाता है। आस्था के संदर्भ में प्रसिद्ध कवि लॉर्ड टेनिसन कहते हैं कि ''विश्व में अनेक ऐसी चीजें है जो स्वप्नवत लगती हैं वो आस्था से पायी जाती है।''

आस्था का उद्गम तब हुआ रहेगा जब विश्व में मानव अपने शक्ति और बुद्धी के सामर्थ्य पर दुसरे मानवों के प्रति अमानवीय व्यवहार करने लगा था। ऐसे मानव को ये जताने के लिए ही ईश्वर की प्रकल्पना आयी होगी कि ऐसे सामर्थ्यशाली लोगों से सामर्थ्यवान ईश्वर है और विश्व का नियंत्रण उसके हाथ में है। हम गलती करेंगे तो सजा पायेंगे। मृत्यु और ईश्वर की संकल्पना ने मानव को नियंत्रण में रखा है।

ये आस्था, विश्वास जब अंधा हो जाता है और विवेकहिनता की सारी हदें पार करता है तो अंधविश्वास का रूप लेता है। अंधविश्वास यानि बिना सोचे समझे किया हुआ विश्वास जो आस्थाएँ विज्ञान की कसौटी पर खरी नहीं उतरती हैं, वे अंधविश्वास हैं। वैसे माना जाए तो आस्था और अंधविश्वास के बीच एक छोटीसी लकीर होती है। सच कहें तो अनेक धर्मों, पंथों की आस्थाएँ परस्पर भिन्न ही नहीं बल्कि परस्पर विरोधी भी हैं। इसका यही मतलब है कि ''वैश्विक सत्य ऐसा कुछ भी नहीं। किसी धर्मगुरु के उपदेशों पर, किसी धार्मिक प्रथा पर तथा किसी राजनीतिक सिद्धांतों के प्रति विवेकशून्य धारणा रखना अंधविश्वास है। अंधविश्वास सार्वदेशिक और सार्वकालिक है। भारत में अंधविश्वास पीढ़ी-दर-पीढ़ी चला आ रहा है। बहुत जगह उसने परम्परा या रूढ़ीयों का रूप लिया है। भारतीय जैसे अंधविश्वास से मनोरुग्ण हो गये हैं। विज्ञान से आलोकित देशों में भी अनेक प्रकार की अंधश्रद्धा है। विज्ञान को बढ़ावा मिलने से अंधविश्वास खत्म हो जाएगा, ये मान्यता भी खंडित हो रही है। ज्यादा समृद्धी भी अंधविश्वास लेके आ रही है। अपना रुतबा, अपनी दौलत कायम रखने के लिए जो जितने अमीर, उतने ही अंधविश्वासी दिख रहे हैं। भारतीय तो खेती करने से पहले, विद्यापाठ करते समय यहां तक कि सोते-जागते शगुन-अपशगुन का विचार करते हैं। जैसे कि उनकी सारासार विवेक बुद्धी नष्ट हो गयी हो। अंधविश्वास का जाल भारत में इस तरह से फैला हुआ है इसे तोड़ना मुशिकल ही नहीं नामुमकिन लगता है।

धार्मिक आडम्बर और ईश्वर का भय इस अंधविश्वास के मूल में है। आदिम मानव सृष्टी में हो रही अनेक क्रियाओं घटनाओं का अर्थ नहीं जान पाता था। इसके लिए उसका अज्ञान, अशिक्षा और विज्ञान के तथ्यों की नासमझी कारण था। सृष्टी में होने वाली वर्षा, बिजली, भूकम्प और अनेक विपत्ति को वे भूत-प्रेत, पिशाच आदि का प्रकोप मानता था। लेकिन जैसे जैसे काल आगे बढ़ा वैसे-वैसे इस मानव के क्रियाओं का दायरा बढ़ता गया और वैसे-वैसे अंधविश्वास भी फैलने लगा। ऐसा प्रतीत होता था कि विज्ञान की फैलाव से मानव की आस्थाएँ एवं धारणाएँ फीकी पड़ जायेगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ प्रत्युत अंधविश्वास बढ़ते ही चला गया।

भारत में अंधविश्वास अनेक मार्गों से पनप रहा है। जादू-टोना, तंत्र-मंत्र, वशीकरण, शगुन-अपशगुन, ग्रह-नक्षत्र, श्राद्ध, मृत्यभोज, सतीप्रथा, तांत्रिकों के चमत्कार, मुहूर्त, मणि, ताबीज, भूत-प्रेत, पिशाच, डायन, प्रेतात्मा, कौआ, उल्लू जेसे पक्षी तथा बिल्ली जैसे प्राणियों के व्यवहार के प्रति गलत धारणा कर्मकांड, होत-हवन, यज्ञ, कालसप्र दोष, राशिफल, फलज्योतिष, पशुबलि, आदि सब इस अंधविश्वास की उपज हैं। भारतीय इस अंधविश्वास की जाल में बुरी तरह फंस चुके हैं। आज अनेक भारतीय कर्मकांड में अपना पैसा और समय दोनों बर्बाद करते हैं। ये अंधविश्वास अब अपराध का रूप लेने लगा है उसका ज्वलंत उदाहरण है - नरबलि। आज भी भारत के गाँवों में बच्चों की नरबलि दी जाती है। तांत्रिक, मांत्रिक, बाबा, गुरुओं ने भारतीय समाज मन को घेर दिया है, जिससे समाज की स्वस्थ मानसिकता रोगग्रस्त होकर भयग्रस्त जीवन जीने के लिए मजबूर होने लगी है।

अंधविश्वास का एक उदाहरण देता हूं। 3 फरवरी, 2005 में सभी ज्योतिषियों, पंडितों और पुजारियों ने कहा की कि इस दिन सारी दुनिया नष्ट हो जाएगी लेकिन ऐसा कुछ भी न हुआ। लेकिन ज्योतिषों, पंडितों और पुजारियों के पेट जरूर भर गए क्योंकि अष्टग्रह, योग था। दूसरा उदाहरण है जहाँ जुलाई, 2013 में कर्नाटक सरकार ने बारीश न गिरने की वजह से बारीश गिरने के लिए 34 हजार मंदिरों में पूजा प्रर्थना करने के लिए हर एक पुजारी को रु. 5000/- ऐसे कुल 17 करोड़ खर्च किये। लेकिन इसके बावजूद भी वर्षा नहीं हुई। सरकारी अंधविश्वास का ये अनूठा उदाहरण है। अगर यहीं 17 करोड़ अगर ''क्लाउड सीडिंग'' के लिए खर्च किये जाते तो शायद बरसात हो जाती। पूजा प्रार्थना ना करने से भगवान भी बाजू में स्थित तामिलनाडू में बरसात ना करके बनिये जैसे सिर्फ कर्नाटक में वर्षा करते। हमारे मंदिरों में आज अरबों का धन है, लेकिन इन मंदिरों में स्थति भगवान के भक्त आज भी गरीब और आधा पेट हैं। क्या हमारे भगवान सिर्फ लेना जानते हैं। स्वतंत्रता के 69 साल बाद भी हमारे भक्त गरीब ही रह गये और उनके भगवान अमीर होते गए।

हाल ही में नाशिक में हुए कुंभ मेले में लाखों श्रद्धालुओं ने पापमार्जन के लिए स्नान किया। क्या ऐसे स्नान से पाप धुल

जाऐंगे ? सरकारने इस कुंभ मेले में अरबों रूपये खर्च किये। कुछ लोगों ने इस मेले को धार्मिक परम्परा का नाम दिया तो कुछ इसे सरकारी खर्चे से किया अंधविश्वास को बढ़ावा मानते हैं।

हाल ही में हुई दो घटनाओं ने हमारी आधुनिक भारत की बखिया उधेड़ दी। एक ओर जहाँ अंधविश्वास के खिलाफ लड़नेवाले नरेन्द्र दाभोलकर, एम्.एम्. कलबुर्गी जैसे आंदोलनकारियों की हत्या कर दी गई तो दूसरी ओर मंदिर में धार्मिक अनुष्ठान के लिए हुए नाबालिग लड़की की अस्मत तथाकथित धर्मगुरु ने लूट ली। जब जब किसीने इन तथाकाथित बाबाओं, गुरुओं और तांत्रिकों के विरोध में आवाज उठायी तो उन्हें गोली मार दी गई। अनेक आधुनिक विमर्शों के बावजूद हम धार्मिक विमर्श से हमेशा बचते आ रहे हैं क्योंकि हम उसे संवेदनशील मानते हैं। धर्म की कठोर परीक्षा किये बिना हम हर व्यक्ति के धार्मिक अधिकारों के बारे में कहते हैं और धार्मिक पाखंड़ों को समाज में फैलाने को इन तथा कथित धर्मगुरुओं को छूट दे रहे हैं। धार्मिक आडम्बर से अंधविश्वास पनपने लगा है। मंदिरों की संख्या बढ़ रही है, लेकिन लोगों की आस्था कम हो रही है।

प्राय: हर धर्म में पारलौकिक शक्तियों- जैसे ईश्वर, देवदूत या असुरों का उल्लेख है। इस दृष्टि से देखा जाये तो आस्था और अंधविश्वास में कुछ भी अंतर नहीं दिखाई देता। धार्मिक आडम्बर और ईश्वर के भय से ही अंधविश्वास पनपता है। इसलिए कुछ आंदोनलकारी ऐसा कहते हैं कि ''ईश्वर को ही रिटायर करो''। लेकिन जिस तरह से भारत में सांप्रदायिकता को बढ़ावा मिल रहा है, उससे ये नामुमकिन लगता है।

कुछ लोग आस्था को ज्ञान का विलोम मानते है तो कुछ प्रत्ययवादी दार्शनिक (आस्थावादी) उसका ज्ञान से मेल बिठाने तथा ज्ञान के स्थान पर उसे स्थापित करने का प्रयत्न करते हैं। नास्तिकों का कहना है कि आस्था को मिलने वाला आधार आभासी है, मिथ्या है। इसलिए हमें आस्था को मन के समंदर में हर एक बार और सदा के लिए विसर्जित करना चाहिए। हर एक जिम्मेदार और जागरूक नागरिक का यह कर्तव्य है कि सभी देशवासियों को अंधविश्वास की असलियत बताकर उन्हें अंधविश्वास से मुक्ति दिलाके एक स्वस्थ समाज की रचना करने में योगदान दें।

बीबीसी के एडलस हक्सेस ने सुर्यग्रहण के बारे में कहा है कि सारे भारतीय सुर्य को राहु से मुक्ति दिलाने के लिए जितने इकट्ठा होते हैं, उतने तो शत्रु राष्ट्र के चंगुल से मुक्ति दिलाने के लिए भी नहीं आते। ऐसी टिप्पणी राष्ट्र को झकझोराने वाली है। इसलिए हमें अंधविश्वास के खिलाफ हमें एकत्र होके ये लड़ाई लड़नी होगी। और अंधविश्वास को जड़ से खत्म करना होगा। इसमें ही मानव, समाज और राष्ट्र का उत्थान है। ■

कविता

विष्णु वर्मा
काकोली, जि. फैजाबाद, (उ.प्र.)

आदमी और परिवेश

बदल गया है आदमी, बदल गया परिवेश।
जैसे अवसर देखता, वैसे बदले वेश।।
नहीं रही सद्भावना, नहीं मेल व्यवहार।
नहीं पता किस बात पर, कब हो जाए रार।।
छोटी-छोटी बात पर होती रहती मार।
नहीं किसी की बात पर कोई करे विचार।।
जिसकी थाने तक पहुँच और साथ प्रधान।
उससे डरते गाँवभर, खोलें नहीं जुबान।।
जो दबंग उसको नहीं, लगता कोई खौफ।
जैसे चाहे कर रहे, अपने पूरे शौक।।
नैतिकता बौनी हुई, मानवता लाचार।
जैसे भी मतलब सधे, वही करें व्यवहार।।
जिसको कुछ समझाइए, वही मानता बैर।
बचकर बोलें किसीसे, इसी में अपनी खैर।।
बिना बात के हो रहा, अब तो वाद-विवाद।
मेल जोल फिर किस तरह, कैसे हो संवाद।।
दहशत का माहौल है, खत्म हास-परिहास।
नीरस जीवन हो गया, कुछ ना आए रास।।
आराजकता कर रही, प्रशासन पर चोट।
ना जाने किस क्षण कहाँ हो जाए विस्फोट।।
अच्छी सी कोई जगह, अच्छी कोई बात।
अब तो दुर्लभ इस तरह, जैसे खाई मात।।

आस्था और अंधविश्वास

डॉ. मिलिंद डी. भोसकर
चिकित्सा अधिकारी

''आस्था सुर्य देव का प्रकाश हैतो अंधविश्वास मनुष्य के मन का अंधेरा''

जय जय माँ, राधे माँ...जय जय माँ राधे माँ। बस कुछ दिन पहले ही हर अखबार, टीवी चैनलों एवं अन्य मीडियाओं में बस यही गुंज सुनाई दे रही थी। कुछ तथा कथित आस्था वादी लोग 'राधे माँ' का चुंबन स्वरूप प्रसाद की आस में उनके दरबार में कतार लगाए खड़े थे तो वहीं इसे अंधविश्वास कहकर राधे माँ की अश्लील तस्वीरों पर उंगलियां उठा रहे थे। इसी तरह कुछ दो साल पहले जब पुलिस ने अंधश्रद्धा निर्मुलन कार्यकर्ता श्री नरेंद्र दाभोलकर जी के हत्यारों को पकड़ने हेतु जब ब्लैक मैजिक का सहारा लिया तब उनपर भी उंगलियां उठी।

तो फिर यहां यह प्रश्न उपस्थीत होता है कि आखिर आस्था और अंधविश्वास किसे कहते हैं? और इन में क्या अंतर है? कौन सा मार्ग मनुष्य के लिए सही है? इस प्रश्न का उत्तर जितना सरल आसान हो सकता है उतना कठिन भी। देखा जाए तो आस्था और अंधविश्वास में कुछ ज्यादा अंतर नहीं है, यह दोनों ही बातें एक ही सिक्के के दो पहलू लगते हैं। भगवान के चरणों में फूल चढ़ाना किसी की आस्था का स्वरूप हो सकता है तो वही दुष्ट शक्तियों या बुरी नजरों से बचाव हेतु घर के दरवाजे या वाहन पर निंबू टांगना अंधविश्वास कहलाता है। यह दोनों ही बातें मनुष्य के उस विश्वास पर टिकी हैं कि इस संसार में कोई न कोई ऐसी अदृष्य, अलौकिक, अच्छी या बुरी शक्ति मौजूद है, जो मनुष्य के कर्मों पर अपना अधिकार रख उचित प्रतिक्रिया या फल देती है।

आज भी हमारे आधुनिक भारत में आस्था और अंधविश्वास का खेल चल रहा है। विज्ञान का प्रकाश भी इन पर कुछ ज्यादा प्रभाव नहीं डालता दिखाई देता है, क्योंकि मनुष्य आज मंगल ग्रह तक तो पहुंच गया है, लेकिन आज भी उसे अपने जन्म पत्री में किसी स्थान पर मंगल दोष का होना अस्वस्थ करता है। मंगल ग्रह पर जाने के लिए, मंगल यान विकसित करने के लिए मनुष्य ने अपनी तर्क बुद्धी, ज्ञान और विज्ञान का उपयोग किया यही उसकी मंगल ग्रह तक पहुंचने की आस्था बन गई। लेकिन बिना समझ बूझ, बिना तर्क बुद्धि के, या फिर अज्ञानता वश, मंगल ग्रह दुष्ट शक्तियों का कारक है, और वह अशुभ फल ही देगा यह सोच उसका अंधविश्वास बन गया।

इन जैसी अनेकों धारणाएं हमारे आधुनिक समाज में आज भी मौजूद हैं। बचपन से हमें इन सब के बारे में बताया जाता है और समझाया जाता है एवं यह सब जीवन की सुख शांति के लिए कैसे जरूरी है यह भी जताया है। लेकिन आज भी इन धारणाओं के पीछे का कोई तर्क युक्त सही प्रमाण या सबूत दिखाया या फिर उसकी मौजुदगी का एहसास नहीं कराया जाता।

आस्था और अंधविश्वास की व्याख्या :

इस समझ से सोचे तो, ऐसे कोई भी विश्वास जिस में तर्क, सबूत या कोई गवाह जैसा कोई प्रमाण न हो और जो सर्व मान्य है, सार्वजनिक है और संसारभर में स्वीकृत है, और विशेष कर इन विश्वासों के अनुकर से स्वयं का या किसी अन्य सजीव या निर्जीव का नाश, शोषण या विनाशकारी नहीं होता वह सब विश्वास आस्था के स्वरूप में देखे जाते हैं। इसके विपरित ऐसे विश्वास, धारणा या मान्यताएं जो तथ्यों पर खरे न उतरे और उनकी उत्पति का कारण, अज्ञान, अविद्या, भ्रांतियाँ या रूढीवादी सोच एवं परंपराएं हुआ करती हों और ऐसे विश्वासों के अनुकरण करने से किसी का अंत विनाशकारी या बुरा हो, वह सब अंधविश्वास के दायरे में आते हैं।

तो फिर मनुष्य अपने विकास, प्रगति या अपने मन की शांति के हेतु कौन सा मार्ग अपनाएं। आस्था का? या अंधविश्वास का? इस दुविधा से निकलने के लिए मनुष्य को प्रथम इन दोनों का उद्गम जानना होगा।

आस्था और अंधविश्वास का उद्गम :

किसी भी सभ्य, सुशिक्षित समाज के निर्माण में पहले अंधविश्वास फिर आस्था और आखिर में विज्ञान आता है। मनुष्य अपने सूर्यमंडल का अब तक का विभिन्न शक्तियों से युक्त एक सर्वश्रेष्ठ प्राणी है। उसमें सोच विचार करने कि अद्भुत क्षमता है। मनुष्य अपनी बुद्धि से ज्ञान संपादन कर सकता है। लेकिन इसी मनुष्यके पास बुद्धि के साथ उसके मन की शक्ति भी मौजूद है, जो निरंतर उसकी बुद्धि पर अपना असर छोड़ती है।

सब जानते हैं कि मनुष्य का जीवन भूत, वर्तमान और भविष्य काल से व्याप्त है। भूत वर्तमान का और वर्तमान भविष्य का आधार है। मनुष्य के अपने भूतकाल से वर्तमान तक का मार्ग स्पष्टता से दिखाई पड़ता है लेकिन वर्तमान में यही मनुष्य हर

पल एक चौराहे पर खड़ा होता है, जहां से उसे अपने भविष्य के सही मार्ग के चुनाव में कठिनाई महसुस होती है। क्योंकि भविष्य में जाने के लिए उसके पास अनेक विकल्प मौजूद होते है। मनुष्य के अपने इसी भविष्य को जानने की इच्छा या उसे ठीक करने की लालसा में ही आस्था और अंधविश्वास के उद्गम छिपा है।

तो फिर इसी मनुष्य को अपने भविष्य को संवारने हेतु हर पल किसके दिशा निर्देशों पर निर्भर होना पड़ता है। वह अपने स्नेही मित्रों या किसी ज्ञान गुरु पर निर्भर रहता है।

कुछ लोग अपने भविष्य को अपनी बुद्धि के प्रकाश से ज्ञान संपादन कर मन की शक्ति से धर्म के मार्ग पर चलकर अपने भविष्य को पाते हैं। ऐसे बुद्धि जीवी लोग आस्थावादी कहलाते हैं।

तो दूसरी तरफ कुछ लोग अज्ञानता वश, मन की दुर्बलता के कारण, किसी के गलत दिशा निर्देशों पर, अधर्म के मार्ग को अपनाकर अपन स्वार्थी भविष्य संवारते हैं। यह लोग अंधविश्वासी कहलाते हैं।

आस्था और अंधविश्वास का स्वरूप एवं परिणाम:

समाज में फिर यह अंधविश्वासी लोग कम समय में अपने स्वार्थ और इच्छा पूर्ति हेतु अंधविश्वास का आसान रास्ता दिखाने वाले पाखंडी बाबाओं या गुरुओं के बीच फंस जाते हैं। इन पाखंडी बाबाओं के आदेश पर कभी यह लोग धन संपत्ति पाने के लिए नरबली देना, संतति पाने के लिए बच्चे की बली देना, तो कभी गुप्तरोग को मिटाने के लिए कुंवारी कन्याओं का बलात्कार करना - वशीकरण हेतु मंत्र तंत्र, काला जादूटोना, जैसे धारणाओं को अपनाते हैं।

इन सब अंधविश्वासों का यह परिणाम हुआ कि समाज में गुनाहों की संख्या बढ़ गई क्योंकि अंधविश्वासी लोग अपनी इच्छा पुर्ति हेतु बलिदान स्वरूप में दूसरों को हानी पहुंचाते हैं।

तो दूसरी तरफ आस्थावादी लोग धर्म को अपनाकर सत्य के मार्ग पर चलते हैं। वे अपनी इच्छा पुर्ति के लिए अलग-अलग भगवानों से मन्नतें मांगते हैं। कठिन से कठिन उपवास करते हैं। मंदिर की सैंकड़ों सिदियां पैदल चढ़ते हैं। हाथ पर कपूर जलाते हैं। इन जैसी अनेक आस्थावादी मान्यताएं समाज में आम सी दिखाई पड़ती हैं। इन सब से मनुष्य को अपनी मन की शांति हेतु थोडी बहुत राहत तो मिलती है और विशेषकर किसी दुसरे को ज्यादातर हानि नहीं पहुंचती।

इस आस्था का यह परिणाम हुआ कि इन आस्थावादी लोगों ने पथ-पथ पर अनेक भगवानों के सैकड़ो मंदिर, मसजिद, गुरुद्वारे और गिरजाघर खड़े कर दिए। इन धर्म स्थलों में लाखों करोड़ों रुपए दान में आते हैं। जिस पर धर्म के ठेकेदार आज कब्जा कर बैठे हैं। लेकिन यह धन दौलत समाज के पिछड़े वर्ग के उत्थान या फिर गरीबों की भूख मिटाने के काम में नहीं लाई जाती।

जिस ''राम'' ने अपने परिवार की सुखशांति हेतु वनवास को अपनाया, उसी राम लल्ला के जनम स्थान पर ''राम मंदिर'' बनाने की हठ कर कुछ कट्टर आस्थावादी लोगों ने धर्म के नाम पर ''बाबरी मसजिद'' तक गिरा दी, जिस कारण पूरे देश में धार्मिक असंतुलन फैलकर सैकड़ों निर्दोष मासूम लोगों की जान गई।

तो फिर मेरी नजर से देखा जाए तो आस्था और अंधविश्वास में कुछ ज्यादा अंतर नहीं है।

मनुष्य के मन के अंधेरे का हल

देखा जाए तो आज मनुष्य को ना ही आस्था के मार्ग से और ना ही अंधविश्वास के मार्ग से शांति मिल पा रही है। उसका मानसिक जीवन इन दोनों के बीच फंसकर रह गया है। इस आधुनिक समय में मनुष्य ने विज्ञाकी की मदद से उसके अनेक प्रश्नों के उत्तर खोज निकाले हैं, लेकिन विज्ञान भी मनुष्य के मन में छिपे इस आस्था और अंधविश्वास के अंधेरे को नहीं दूर कर सका।

इस अंधकार को गर कोई मिटा सकता है तो वह खुद मनुष्य ही है। मनुष्य को अपने कर्मों पर ध्यान देकर सत्य के मार्ग पर चलना होगा। धर्म स्थलों में दान न देकर समाज के पिछड़े वर्ग को संभालना होगा। अपने भविष्य की व्यर्थ चिंता छोड़ आज या हर दिन में खुश रहना होगा। जो मिले उसी में संतुष्ट होना होगा।

यदि मनुष्य इन बातों को अपनाएगा तो उसे न ही आस्था की जरुरत होगी और न ही अंधविश्वास की। अगर उसे आस्था रखनी ही है तो उसे अपने समाज के लोगों और अपने देश के प्रति आस्था रखनी होगी। ■

एक पंजाबी के घर कोई मिलने वाला आया तो पंजाबी संदूक से बंदूक निकालकर लाया और उसने हवा में 02 फायर कर दिए। मिलने वाला आदमी भी भौचक्का सा देखता रह गया।
डरते डरते पूछा - भाजी तुसी फायर क्यों किते। पंजाबी - चाय वाले को 02 चाय बोली है।

आस्था और अंधविश्वास

श्रीमती भारती ठाकुर
लिपिक

जाकी रही भावना जैसी प्रभु मूरत देखी तिन तैसी विश्व में नजाने कितने ही धर्म है। कोई ईश्वर में विश्वास करता है, कोई अल्लाह में तो कोई गॉड में। कोई आरती करता है, कोई नमाज पढ़ता है तो कोई प्रेयर करता है। क्या ईश्वर, अल्ला, गॉड सब अलग हैं? नहीं। बल्कि वो एक ही शक्ति है जो ब्रम्हांड से उत्पन्न हुई है। सब की प्रार्थनाएं एक होकर ब्रम्हांड में विलीन हो जाती है। सच्चे मन से की गई प्रार्थना हमें भगवान से एकरूप कराती है। ईश्वर को याद करके या फिर प्रार्थना करके हमारे मन को जो शांति मिलती है, वो शांति का अहसास ही हमारी आस्था है।

आस्था शब्द का आधार ही विश्वास है। अपने आप में हमारा विश्वास, सच्चे हृदय से भगवान में विश्वास।

हिन्दु अध्यात्म विश्व का सबसे बड़ा ज्ञान है। पूरा विश्व उसे सबसे पुरातन मानता है और उसका आधार लेता है। मगर अचरज की बात यह है कि सबसे ज्यादा अंधविश्वासी तो भारत में ही भरे पड़े हैं। इसका कारण है खुद के प्रति अविश्वास, असफलता का डर। असफल इंसान ही अंधविश्वास में फँसता है।

दरवाजे पर भिखारी आकर आपको तरक्की के नुस्खे बताकर जाता है और आप इसे मान लेते हैं। ये कभी नहीं सोचते कि अगर उसे भविष्य के बारे में इतनी जानकारी होती तो क्या वो खुद का भविष्य न सँवारता?

बिल्ली ने रास्ता काटा तो आप ये मानकर चलते हैं कि आपका काम नहीं बनेगा। पहले करके तो देखो। पहले से ही मान लेते हैं कि काम नहीं बनेगा। नकारात्मक भावना के साथ उस काम की ओर बढ़ते हैं और काम नहीं बनता। बेचारी बिल्ली खामखाँ बदनाम होती रहती है। न जाने कितने सैंकड़ो सालों पहले किसी एक ने इसका अनुभव किया होगा, और हम आज भी उसे मानकर चल रहे हैं। हमारी नकारात्मक सोच ही हमें अंधविश्वास की ओर ले जाती है। हम खुद पर से विश्वास खोने लगते हैं और किसी पाखंडी की शरण में जाते हैं, उसके चंगुल में फँसते हैं। ऐसे पाखंडी अपनी दुकान खोलकर ही बैठे हुए होते हैं, कि कब कोई दुख और परेशानी से घिरा हुआ इंसान उनकी शरण आए और उनके चंगुल में फँस जाए।

आसाराम बापू, निर्मल बाबा, राधे माँ और न जाने कितने ही स्वयंघोषित संत महात्मा हमारे देश में हैं जो परेशानियों में घिरे लोगों की आस्था के साथ खिलवाड़ करते हैं। अपने आप को ईश्वर का रूप बताते हैं और बहू-बेटियों के इज्जत के साथ खिलवाड़ करते हैं। राधे माँ तो अपने मुँह से कुछ बोलती नहीं, जो कुछ भी वो बोलना चाहती है वो तो उनका ग्लैमर ही बोलता है। जो औरत अपने सजने सँवरने में इतना ध्यान देती है, लोगों की गोद में झूलती नजर आती है उसके भी लाखों की संख्या में लोग भक्त हैं। अंधविश्वास की भी हद होती है। मानसिक रूप से विकलांग लोग ही उनकी शरण में जा सकते हैं। और जो लोग (गुरु) मानसिक विकलांग लोगों को अपने इर्द-गिर्द सँभाले हुए बैठे हैं। उनकी इस विकलांगता का फायदा उठाते हैं और उनकी विकलांगता को पोषित करते हैं, क्या ऐसे स्वयंघोषित धर्मगुरु सुदृढ़ समाज का निर्माण कर पाएँगे?

आजकल हम सुनते हैं कि आस्था के साथ खिलवाड़ हो रहा है। इसके लिए जिम्मेदार हम खुद हैं। हम खिलौना बन जाते हैं तभी तो कोई हमारे साथ खिलवाड़ करता है। सावन का महीना शुरु हुआ नहीं कि लोगों के झुंड के झुंड केदारनाथ धाम के लिए निकल पड़ते हैं। एक साथ इतने लोग एक जगह इकट्ठा होते हैं, कि न रहने के लिए जगह मिलती है, न चलने के लिए रास्ता। बरसात के मौसम में इतना भी नहीं सोचते कि कुछ आपत्ती आ गई तो अपने आपको कैसे सुरक्षित रख पाएँगे। बस निकल पड़ते हैं। और कहते हैं, ''जो कुछ भी होगा भगवान की मर्जी से होगा।'' सभी धार्मिक स्थलों के हालात एक जैसे ही हैं। कोई टूरिस्ट बिजनेस वाला आपको ऑफर देता है, होटल में रहने के लिए डिस्काउंट देता है और आप निकल पड़ते हो।

अगर आप भगवान के सम्मुख होना चाहते हैं तो क्या जरूरी है कि आप अपनी जान की परवाह न करते हुए किसी तीर्थस्थलमें ही भगवान के दर्शन करें। जो शांति, जो सुकून आपको अपने घर में शांति से भगवान के सामने ध्यान करने से मिलेगा क्या उतनी शांति आपको इस भीड़ में मिलेगी। आस्था का संबंध है मन की शांति से। जिसका मन अशांत है उसे तो स्वर्गलोक में भी शांति नहीं मिलेगी।

जिसका अपने आप में विश्वास है वही भगवान में सच्ची श्रद्धा रखता है। और वहीं इंसान समाज के हित में काम करने की शक्ति रखता है। भगवान तो चराचर में बसे हुए हैं, हर प्राणिमात्र में समाए हुए हैं। हम में खुद में समाए है। अपने अंदर के भगवान को जो मैला होने से बचाकर रखता है वही सच्चा साधक है।

आस्था वह शब्द है जिसके उच्चारण से ही मन को चैन मिलता है, आत्मा शुद्ध हो जाती है। और अंधविश्वास वो साँप है जो हमें उँचाईयों को निगलकर अंधकार की खाई में ले जाता है। इसलिए हमारे जीवन में अंधविश्वास के लिए कोई भी जगह नहीं होनी चाहिए।

भगवान हमारे मन में समाए हुए हैं, उन्हें कहीं भी ढूँढ़ने की जरूरत नहीं है। वो निराकार-निर्गुण है। मन की आँख और आस्था के अहसास से देखोगे तो ईश्वर को आप अपने सम्मुख ही पाओगे। ■

जवाहरलाल नेहरू पत्तन न्यास द्वारा निगमित सामाजिक उत्तरदायित्व के ही एक भाग के रूप में उसके आसपास के विद्यालयों के विद्यार्थियों के लिए ''भविष्य में धरती को रहने योग्य कैसे बनाएँ?'' विषय पर हिंदी निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। इस प्रतियोगिता में 18 विद्यार्थियों ने भाग लिया। विजेता रहे विद्यार्थियों के निबंध मूल रूप से पाठकों को पढ़ने के लिए उपलब्ध कराए जा रहे हैं ।

- सम्पादक

भविष्य में धरती को रहने योग्य कैसे बनाएँ ?

श्री मुकुल मिलिंद ऐगलीकर

जनेप सेंट मेरी विद्यालय कक्षा-9 जनेप न्यास के मा. उपाध्यक्ष, श्री नीरज बंसल से पुरसकार प्राप्त करते हुए।

''बिना पृथ्वी के मानव जाति घर बिना मानवता के समान है।''

- एस. जी. रेनबोल्ट

कितने सच्चे हैं ये शब्द। धरती मानवी जीवन का सबसे बड़ा आधार है। लेकिन आज हम देख सकते हैं कि धरती की स्थिती कितनी बिगड रही है। शास्त्र के अनुसार अभी भारत में वर्षा ऋतु है, लेकिन महाराष्ट्र के विदर्भ में पानी की एक बूँद तक नहीं दिखाई देती। और आसाम जैसे पूर्व के राज्यों में बाढ़ आई है। दोनों राज्य भारत देश में ही हैं, लेकिन एक में अकाल तो एक में बाढ़। अगर ऐसा ही चलता रहा तो क्या होगा भविष्य में हमारे धरती माँ का ? चलो मान लिया कि हमें भविष्य की चिंता न करते वर्तमान में ही जीना चाहिए, मगर किस हद तक ? हम अपने जीवन के लिए जीवन के आधार को ही नष्ट करें ? क्या यह ठीक है ? बिल्कुल नहीं। अगर आज हम धरती का गलत फायदा उठाएँगे तो कल हमारे बच्चे और आनेवाली पीढियाँ कहाँ रहेंगी ? इसलिए भविष्य में धरती को रहने योगय बनाना, यही आज के समय की माँग है।

आज धरती के सामने सबसे बड़ी चुनौती है प्रदूषण। हम अगर कोई शुभकार्य करते है तो स्पीकर पर जोर-जोर से गाने बजाने लगते हैं। भारतीय संघ क्रिकेट मैच जीता, तो पटाखे फोड़ने लगते हैं। खुद के और दूसरों के स्वास्थ्य की पर्वा न करते हुए धूम्रपान करते हैं, सरकार ने दिये हुए कूड़ेदान में कूडा न फेंककर नदी-नालों में फेंकते हैं। इन छोटी-छोटी चीज़ों से भी प्रदूषण भारी मात्रा में बढ़ता है। इस प्रदूषण की वजह से ओजोन परत जो धरती को सूर्य की हानिकारक किरणों से सुरक्षा देती है, उस गैस में छिद्र आ रहे हैं। प्रदूषण की वजह से लोगों को अनेक बीमारियाँ हो रही हैं। यह प्रदूषण कम करना भविष्य में धरती को रहने योग्य बनाने में पहला कदम है। जोर-जोर से गाने न बजाने से, कूड़ा कुडादान में ही फेंकने से तथा पटाखे कम फोड़ने से प्रदूषण कम हो जाएगा। पेड़ लगाना प्रदूषण कम करनेके लिए अत्यंत आवश्यक है। पेड़ हवा का शुद्धिकरण करते हैं। वे प्रदूषण कम करनेमें सहायता करते हैं।

धरती दिन-ब-दिन तपती जा रही है। इसे हम ग्लोबल-वॉर्मिंग भी कहते हैं। यह बहुत धोखादायक है। इस तपन की वजह से हिमालय के बर्फीले पहाड़ पिघल रहे हैं। इतना ही नहीं, विश्व का सबसे ठंडा प्रदेश यानी कि ॲन्टार्क्टिका भी पिघल रहा है। इसकी वजह से दुनिया के समुंदरों की गहराई बढ़ती जा रही है। कितनी भयानक समस्या है यह। मगर इस समस्या का भी हल है। धरती का तापमान हवा में कार्बन डाई ऑक्साइड बढ़ने से बढ़ता है। इसलिए पेड लगाने से जो वहा में ऑक्सीन की मात्रा बढ़ाएगा वातावरण ठंडा रहेगा। वैसे ही गाडियों के इंजन में सुधार करना जरूरी है। क्लोरोफ्ल्युरोकार्बन यह गैस विसर्जित करने वाली वस्तुओं का कम उपयोग करना चाहिए।

सृष्टी से हमें कुछ चीजें बड़ी आसानी से मिल जाती हैं। जल, वायु, पेड़ ये कुछ उदाहरण हैं। ये चीजें हमें सृष्टी की ओर से मुफ्त में दी जाती हैं। इसलिए हम इनका मूल्य नहीं पहचानते। सुबह नहाते और दाँत साफ करते समय हम बेहिसाब पानी बरबाद करते हैं। वायु प्रदूषित करते हैं। ज्वलन, ईंधन तथा घर के लिए हम पेड़ काटते हैं। यह बिल्कुल ठीक नहीं है। जिनके बिना हम एक साँस तक नहीं ले सकते, उन्हीं को हम बरबाद कर रहे हैं।

अब आपके यह समझ में आया ही होगा कि भविष्य में धरती को रहने योग्य बनाने के लिए सृष्टी का बचाव करना अत्यंत आवश्यक

है। इसके लिए सबसे महत्वपूर्ण बात जो कभी न खत्म हो ऐसे वस्तुओं का ईंधन के लिए उपयोग करना है। जैसे कि सूर्य की किरणें, वायु, आदि। सूर्य किरण तथा वायु दो ऐसी चीजें हैं जो कभी न खत्म होंगी। मगर कोयला कभी भी खत्म हो सकता है। इसलिए अगर कोयले की जगह सूर्य किरण तथा वायु का बिजली बनाने के लिए उपयोग करेंगे, तो और उत्तम होगा। वैसे ही गाडियों में पेट्रोल, डीज़ल की जगह सी. एन.जी. जैसी गैसों का उपयोग करना चाहिए। खेती करते समय जमीन का भी प्रदूषण होता है। खाद अधिक या कम डालने से जमीन कमजोर हो जाती है। इसकी तरफ ध्यान देना और खेती की तकनीकों में सुधार लाना, यह समय की माँग है। पृथ्वी पर प्राणियों का मानव जाति का तथा पेड़ों का प्रमाण कायम रखना यह अत्यंत आवश्यक है।

यह हुआ सृष्टी का, मगर हम मानवों का क्या? आज पूरे विश्व में आतंकवाद फैला है। कभी ईराक में बम्ब फटता है, कभी अमेरिका में कोई किसी को बंदूक से मार देता है, तो कभी भारत में आतंकवादी को जिंदा पकड़ा जाता है। यह आतंकवाद क्या है? हम मानवों ने ही बनाई हुई चीज़। आज विश्व में मानवों के बीच भ्रातृभाव ही नहीं रहा। भारत की पाकिस्तान के साथ दुश्मनी है, तो उत्तर कोरिया की दक्षिण कोरिया के साथ। यह दुश्मनी, लड़ाई मिटाना अत्यंत जरूरी है। मानवों के बीच बंधुता का भाव निर्माण होना चाहिए। वरना धरती किस आधार पर टिकेगी?

मेरे कहने का मतलब यही है, कि हम मानव होशियार जरूर है। लेकिन इस होशियारी का हम धरती का विनाश करने में उपयोग कर रहे हैं। यह करना नहीं चाहिए। आखिर धरती है, इसलिए ही हम हैं ना। इसलिए अगर हम प्रदूषण कम करेंगे, सृष्टी की सुरक्षा करेंगे और बंधुता से रहेंगे तो भविष्य में धरती रहने योग्य जरूर बनेगी। जैसे इस कविता में सुंदर वर्णन किया गया है -

धरती हमारी माता है
माता को प्रणम करो।
बनी रहे इसकी सुंदरता
ऐसा भी कुछ काम करो।।
आओ हम सब मिलजुल कर
इस धरती को ही स्वर्ग बनाएँ।
देकर सुंदर रूप धरा को
कुरूपता को दूर भगाएँ।।
नैतिक जिम्मेदारी समझ कर
नैतिकतासे काम करें
गंदगी फैला भूमि पर
माँ को न बदनाम करें।।
माँ तो हम सब की रक्षक
क्यों बन रहे हम इसके भक्षक?
जन्म भूमि है पावन भूमि
बन जाएँ इसके संरक्षक।।

प्रेरक प्रसंग

पत्थरकी मूर्तिमें भी भगवान है

स्वामी विवेकानन्द को पूरा विश्व जानता है। फरवरी, सन् 1891 ई. में वे राजस्थान में अलवर में थे। वहाँ के दीवान बहादुर शम्भूनाथजीने स्वामी विवेकानन्द के समक्ष मूर्तिपूजा में अविश्वास प्रकट करते हुए कहा कि पत्थरको पूजनेसे भगवान् नहीं मिलते। पत्थरकी मूर्ति महज पत्थर है।

इसपर स्वामी विवेकानन्दजीने दीवान बहादुर, शम्भूनाथजी के कमरे में टँगे हुए उनके महाराज के चित्र को दीवालपर से उतारकर कहा - 'यहाँपर महाराज नहीं हैं। यह केवल उनका चित्र है। आप इसपर थूक दीजिये।' बार-बार कहने के बाद भी महाराज के चित्रपर थूकने की हिम्मत दीवान बहादुरकी नहीं पड़ी।

फिर स्वामीजीने कहा - 'जिस तरह आप अपने महाराज के चित्रको महाराज ही मानते हैं, उसी तरह हिन्दू-धर्म पत्थर की मूर्तिको भी भगवान् ही मानता है और इसे आप भी मानें।'

स्वामीजी का अकाट्य उत्तर सुनकर दीवान बहादुर उनके चरणों में गिर पड़े।

- केदारनाथ 'सविता'

मन

क्रोध, घृणा और ईर्ष्या को रखने की कचरा - पेटी नहीं है बल्कि वह तो प्रेम, प्रसन्नता और मधुर स्मृतियों को सँजोकर रखने की धनपेटी है।

– स्वामी विवेकानन्द

भविष्य में धरती को रहने योग्य कैसे बनाएँ ?

कु. अमरजीत सुदर्शन राम

रोटरी इंग्लिश मिडियम स्कूल, उरण कक्षा - 10 जनेप न्यास के मा. उपाध्यक्ष, श्री नीरज बंसल से पुरसकार प्राप्त करते हुए।

अक्सर हम यह समाचार सुनते हैं कि उत्तरी ध्रुव की ठंडी बर्फ कई किलोमीटर तक पिघल गई है। सुर्य की पराबैगनी किरणों को पृथ्वी तक आने से रोकने वाली ओजोन परत में छेद हो गया है। इसके अलावा कई भयंकर तूफान, सूनामी और कई प्राकृतिक आपदाओं की खबरें आप तक तो पहुँचती ही होंगी। हमारे पृथ्वी गृह पर जो कुछ भी हो रहा है उसकी जिम्मेदार समस्त मानव जाती है। जो ग्लोबल वार्मिंग के रूप में आज हमारे सामने है। भविष्य की चिंता किए बिना हरे वृक्ष काटे गए जिसका भयावह परिणाम भी आज देखने के लिए मिल रहा है। सूर्य की पराबैगनी किरणों को पृथ्वी तक आने से रोकने वाली ओजोन परत का इसी तरह से क्षुरण होता रहा तो वह दिन दूर नहीं जब पृथ्वी से जीव-जन्तुओं तथा वनस्पति का अस्तित्व ही समाप्त हो जाएगा। लोग अंधे हो जाएंगे। लोगों की त्वचा झुलसने लगेगी और त्वचा कैंसर के रोगियों की संख्या बढ़ जाएगी। समुद्र का जलस्तर बढ़ने के कारण तटवर्ती इलाके समुद्र की चपेट में आ जाएंगे।

धरती खो रही है अपना प्राकृतिक रूप :

धरती अपना प्राकृतिक रूप खो रही है। जहाँ देखो वहाँ कूडे के ढेर व बेतरतीव फैले कचरे ने इसका सौंदर्य नष्ट कर दिया है। विश्व की बढ़ती जनसंख्या, औद्योगीकरण तथा शहरीकरण के साथ-साथ ठोस अपशिष्ट पदार्थों द्वारा उत्पन्न वातावरण प्रदूषण भी विकराल होता जा रहा है। ठोस-अपशिष्ट पदार्थों के समुचित निपटान के लिए पर्याप्त स्थान की आवश्यकता है। ठोस अपशिष्ट पदार्थों की लगातार वृद्धि के कारण इनके निपटान की समस्या न केवल औद्योगिक स्तर पर विकसित देशों के लिए वरन कई विकासशील देशों के लिए भी सिरदर्द बन गया है। उदाहरण के लिए अकेले न्यूयार्क में प्रतिदिन 2500 ट्रक भार के बराबर अपशिष्ट पदार्थों का उत्पादन होता है।

वातावरण में जहर घोल रहा है पॉलीथीन :

आधुनिक युग में सुविधाओं के विस्तार ने सबसे अधिक पर्यावरण को ही चोट पहुँचाई है। लोगों की सुविधा के लिए ईजाद की गई पॉलीथीन ही मानव जाती का सबसे बड़ा सिरदर्द बन गई है। नष्ट न होने के कारण यह भूमि की उर्वरक क्षमता को नष्ट कर रही है। यह भू जल स्तरकम कर रही है। उसमें जहर घोल रही है। पॉलीथीन को जलाने से निकलने वाला धुआँ ओजोन परत को नुकसान पहुँचा रहा है। जो ग्लोबल वार्मिंग को सबसे बड़ा कारण है। पॉलीथीन कचरे से प्रतिवर्ष लाखों पशुपक्षी मौत का ग्रास बन रहे हैं। भोजन के धोखे से इन्हें खा लेने के कारण प्रतिवर्ष 1,00,000 समुद्री जीवों की मौत हो जाती है। इन्हें निगलने से होने वाली मवेशियों की मौत की खबरें तो आपने पढ़ी-सुनी होंगी। जमीन में गाढ़ देने के बाद भी पॉलीथीन थैले अपने अवयवों में टूटने के लिए 1,000 साल से अधिक लेते है।

ग्लोबल वार्मिंग :

पृथ्वी की औसत तापमान में वृद्धि ही ग्लोबल वार्मिंग कहलाता है। वैसे तो पृथ्वी के तापमान में बढोत्तरी की शुरुवात 20वीं शताब्दी के आरंभ से ही हो चुकी है। माना जाता है कि पिछले सौ सालों में पृथ्वी के तापमान में 0.18 डिग्री की वृद्धि हो चुकी है। तो 21वीं शताब्दी तक 11-6.4 डिग्री सेंटीग्रेड पृथ्वी का तापमान बढ़ जाएगा। हमारे पृथ्वी पर ऐसे कई केमिकल्स कंपाऊंड हैं जो तापमान को बैलेंस करते हैं। वे ग्रीन हाउस गैसेज़ कहलाते हैं।

मौसम चक्र हुआ अनियमित :

पृथ्वी के जलवायु परिवर्तन के लिए कोई नहीं बल्कि समस्त मानव जाती ही जिम्मेदार है। सुविधा भोगी जीवनशैली में सामाजिक सरोकारों को पीछे छोड़ दिया। जैसे- जैसे हम विकास के सोपन चढ़ रहे हैं। वैसे-वैसे नए-नए खतरे उत्पन्न हो रहे हैं। घटती हरियाली और बढ़ता प्रदूषण नई-नई समस्याओं को जन्म दे रहा है। जिके कारण पृथ्वी या प्रकृति के मौसम की अनियमितता हो गई है। अब सर्दी, गर्मी और वर्षा के आने का कोई निश्चित समय

नहीं है। तापमान में वृद्धि होने के कारण वर्षा की मात्रा कम हो रही है। जिसके कारण भू-जल स्तर कम हो रहा है। अगर समय रहते इस पर कोई उपाय नहीं किए गए तो समस्याएं विकराल रूप ले लेंगी। इसलिए हम सब को एक जुट होकर पृथ्वी को बचाने के उपाय करने होंगे इसमें प्रशासन, सामाजिक संगठन, स्कूल, कॉलेज सहित सभी को भागीदारी निभानी होगी।

क्या करें :

1) बाजार जाते समय अपने साथ कागज, जूट या कपड़े का थैला ले जाएँ।
2) हम सप्ताह में कितनी पॉलीथीन का उपयोग करते हैं उसका हिसाब रखें और इस संख्या को कम से कम आधा करने का लक्ष्य बनाएं।
3) 11 जनवरी, 2010 को भारत के प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह ने जवाहर लाल नेहरू राष्ट्रीय सौर मिशन ''सौर भारत'' योजना की शुरुवात की। उन्होंने अपने भाषण में राष्ट्र से आग्रह किया कि वे आगे आएं और सिलिकॉन वॅ ली की तर्ज पर कई वॅलीयों का निर्माण करें। उन्होंने कहा ''सौर ऊर्जा के उपयोग को बढ़ाना नवीकरणीय उर्जा के स्वच्छ स्त्रोंतो पर आधारित टिकाऊ विकास की पद्धति पर चलने और उसके लिए जिवाश्म ईंधनों से निर्भरता हटाने की हमारी रणनीती का केंद्रीय घटक है। मुझे पूरी उम्मीद है कि सौर मिशन से भारत सौर उर्जा के क्षेत्र में न केवल विश्व नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित होगा बल्कि सौर उर्जा के उत्पादन तथा उसकी प्रौद्योगिकी के उत्पादन में भी नेतृत्व करेगा।''

पर्यावरण एवं वन मंत्रालय :

देश के प्राकृतिक संसाधनों के संरक्षण से संबंधित नीतियों और कार्यक्रम के कार्यान्वयन को सुनिश्चित करने के लिए प्राथमिकता के साथ प्रतिबद्ध है। इन प्राकृतिक संसाधनों में झील और नदियाँ, जैव विविधता, वन एवं वन्य जीवन, यहां के जानवरों के कल्याण के लिए प्रदूषण में कमी तथा निवारण भी शामिल है।

जैव विविधता बनाए रखने एवं परिस्थिति के रखरखाव के लिए बन 'अपरिहार्य' भूमिका निभाते हैं। ये 'कार्बन सिंक' पर प्रभाव डालते हैं। कार्बन सिंक एक प्राकृतिक या कृत्रिम संग्रहण क्षेत्र है जहाँ कार्बन वाले रासायनिक यौगिकों को जमा किया जाता है। प्राकृतिक कार्बन सिंक कार्बन डाईआक्साइड का अवशोषण करता है। और पौधों तथा शैवालों को प्रकाश संश्लेषण की प्रक्रिया में मदद करता है। इसका मतलब धरती माँ को अच्छा बनाने के लिए वनीकरण एक महत्वपूर्ण कदम है। सरकार एवं उसके मंत्रालय ने भविष्य को ध्यान में रखते हुए पर्यावरण को साफ एवं स्वच्छ बनाए रखने की पूरी कोशीश की है। जैविक खेती, वर्षा जल संचयन, उद्योगों के नियम को बढ़ावा देना परिस्थितीकी राष्ट्र निर्माण की दिशा में बढाए गए प्रमुख कदम हैं। हम भारत के लोग कुछ बुनियादी नियमों का पालन कर इस नेक उद्देश्य में अपना योगदान दे सकते हैं।

घर पर -

1) पानी बर्बाद न करें। नहाने के लिए शावर की जगह बाल्टी का प्रयोग करें। नहाने के पानी को पौधे सींचने में प्रयोग करें। समय-समय पर उपरी टैंक या नल में हो रहे रिसाव की जाँच करें।
2) बाजार जाते समय अपने साथ कपड़े, बूट या कागज का थैला लेकर जाएं। प्लास्टिक के इस्तेमाल से बचें।
3) कचरे को यहाँ वहाँ न फेंके। सिर्फ निर्धारित कचरे के डिब्बे में ही इसे डालें।

सड़क पर -

1) सार्वजनिक परिवहन का इस्तेमाल करें। पैदल या साइकिल से जाना आदर्श होगा।
2) नियमित रूप से अपने वाहनों के प्रदूषण स्तर की जॉच कराते रहें।
3) साइलेंसर में जमा कार्बन साफ रखें।

जल प्रदूषण की रोकथाम -

1) वाशींग मशीन, डिशवाशर तभी चालू करें जब वह पूरी तरह से भरी हो।
2) बाहर कपडे सुखाने की सुविधा हो तो ड्रायर के उपयोग से बचें।
3) पॉलीथीन जानलेवा है यह जलबहाव को अवरुद्ध कर देता है।
4) सिंचाई के लिए छिड़काव पद्धति अपनाएं।

ध्वनी प्रदूषण की रोकथाम -

1) अपने वाहनों तथा उसके साइलेंसर की जॉच करवाते रहें।
2) लाउडस्पीकर तथा ध्वनि विस्तारक प्रणाली को बन्द कर दें ताकि आपके पड़ोसियों को परेशानी न हो।
3) बेवजह हार्न न बनाएँ।

उर्जा संरक्षण -

1) जहां तक संभव हो प्राकृतिक रोशनी का प्रयोग करें।
2) घर से बाहर जाते समय सभी बत्तियाँ बन्द कर दें।
3) ऊर्जा बचाने के लिए (सीएफएल) का उपयोग करें।

वातावरण को बचाने के नुस्खे तथा उपाय -

वातावरण के प्रतिदिन प्रदूषित होने के कारण कभी चिलचिलाती गर्मी तो कभी बैमोसम बरसात का सामना करना पड़ता है। इसे रोकने के लिए हमें ज्यादा से ज्यादा पेड लगाना चाहिए। उपयोग न होने पर टीवी, पंखे, कूलर आदि को बंद रखें। रेड लाइट होने पर स्कूटर आदि वाहनों को बंद रखें। पानी बर्बाद न करें। बिजली के उपकरणों को स्टैंड बाय मोड में न रखें।

अगर हम अपनी आनेवाली पीढ़ी को साफ और स्वच्छ वातावरण देना चाहते हैं तो हमें अभी से ही प्रयास करना होगा की ज्यादा से ज्यादा पेड़ लगाएं। पानी बचाएँ, बिजली बचाएँ। पर्यावरण को दूषित करना मतलब आनेवाली पीढ़ी के लिए समस्याएँ खड़ी करना है।

हमारी प्रार्थना है कि - ''काले वर्षन्तु पर्जन्य: पृथ्वी शस्य शयालिनी। देशेयं क्षेभरहित: सज्जना: सन्तु निर्भया:।।''

कविता

अगर बेटा वारस है

अगर बेटा वारस है, तो बेटी पारस है।
अगर बेटा वंश है, तो बेटी अंश है।।
अगर बेटा आन है, तो बेटी शान है।
अगर बेटा मान है, तो बेटी गुमान है।।
अगर बेटा संस्कार है, तो बेटी संस्कृति है।
अगर बेटा आग है, तो बेटी राग है।।
अगर बेटा दवा है, तो बेटी दुआ है।
अगर बेटा भाग्य है, तो बेटी विधाता है।।
अगर बेटा शब्द है, तो बेटी अर्थ है।
अगर बेटा गीत है, तो बेटी संगीत है।।

संकलन कर्ता: **जगदीश जनार्दन घरत**
कनिष्ठ सहायक

प्रेरक प्रसंग

सौ करोड़ रुपयों का दान

डोंगरेजी महाराज कथा से ही करीब एक अरब रुपये दान कर चुके होंगे, वे ऐसे कथावाचक थे। गोरखपुर के कैंसर अस्पताल के लिये एक करोड़ रुपये उनके चौपाटीपरके अन्तिम प्रवचन से जमा हुए थे।

उनकी पत्नी आबू में रहती थी, जब उनकी मृत्युके पाँचवें दिन उन्हें खबर लगी, तब वे अस्थियाँ लेकर गोदावरी में विसर्जित करने मुम्बई के सबसे बड़े आदमी रति भाई पटेल के साथ गये थे। नासिक में डोंगरजीने रति भाईसे कहा कि 'रति, हमारे पास तो कुछ है नहीं, और इसका अस्थि-विसर्जन करना है। कुछ तो लगेगा ही, क्या करें?' फिर कहा-'हमारे पास इसका मंगलसूत्र एवं कर्णफूल हैं, इन्हें बेचकर जो रुपये मिलें, उन्हें अस्थि-विसर्जनमें लगा देते हैं।'

यह बात बताते हुए रति भाईने कहा, 'जिस समय हमने सुना, हम जीवित कैसे रह गये, आपसे कह नहीं सकते। बस, हमारा हार्ट फेल नहीं हुआ। जिन महाराज श्री के इशारेपर लोग कुछ भी करने को तैयार रहते थे, वह महापुरुष कह रहा है कि स्त्रीकी अस्थियों के विसर्जनके लिये पैसा नहीं है और हम सामने खड़े सुन रहे हैं? हम फूट-फूटकर रो पड़े। धिक्कार है हमें और धन्य है भारतवर्ष, जहाँ ऐसे वैराग्यवान् महापुरुष जन्म लेते हैं।'

भविष्य में धरती को रहने योग्य कैसे बनाएँ ?

कु. ओम प्रह्लाद तांडेल

रोटरी इंग्लिश मिडियम स्कूल, उरण कक्षा - 9 जनेप न्यास के मा. उपाध्यक्ष, श्री नीरज बंसल से पुरस्कार प्राप्त करते हुए।

''धरती हमारी माता है,
माता को प्रणाम करो।
बनी रहे इसकी सुंदरता,
ऐसे भी कुछ काम करो।

आमतौर पर कहा जाता है कि जीने के लिए रोटी, कपड़ा और मकान की जरूरत पड़ती है। हम धरती पर रह रहे हैं, क्योंकि यहाँ के सिवा कहीं और जीवन संभव है ही नहीं। अब यहाँ अगर हमें जीवन मिल रहा है, सांसें मिल रही हैं, यादगार पल मिल रहे हैं, तो क्या हमारा कोई दायित्व नहीं बनता, हमारे इस आशियाने को ऐसे ही बनाए रखने का ?

प्रकृति ने हमारे लिए एक माँ कि तरह सुखद, सुरक्षित एवं स्वस्थ वातावरण का निर्माण किया है। हमें उसकी रक्षा करते हुए, उसका उपभोग भी करना चाहिए। कहाँ गया है, ''रक्षेय प्रकृति पांतुलिका'' अर्थात प्रकृति सभी प्राणियों कि रक्षा करती है। लेकिन हम मानव अपने स्वार्थ और भौतिक सुखों की हौड़ में प्रकृति माँ को दिए इस वरदान की उपेक्षा कर, उसे दूषित करने में लग गए हैं। जैसे-जैसे मानव विकास की ओर बढ़ता गया, वैज्ञानिक आविष्कार होते गए, वैसे-वैसे पर्यावरण प्रदूषण का खतरा भी बढ़ता गया।

हम में से सभी का यह कर्तव्य है, कि थोडे से प्रयास द्वारा हम अपने खूबसुरत पृथ्वी को रहने योग्य बनाएँ और जो कुछ भी हमारे लिए न्यूनतम संभव है उसे जरूर करें। इस क्रम में पर्यावरण को तात्कालिक सुरक्षा देने के लिए सबसे जरुरी है गृह खाद। खाद निर्माण कुछ और नहीं बल्कि कार्बनिक और बायोग्रेडेबल पदार्थ जैसे - खाद्य और फलों के छिलके, स्क्रैप, चिकन मछली आदि की हड्डीयों से पोषक युक्त खाद बनाना है ताकि इनका इस्तेमाल पौधों में और बगीचों में किया जा सके।

खाद निर्माण एक प्राकृतिक प्रक्रिया है। सूक्ष्म जीवों द्वारा यह समय के साथ अपने आप ही होता है। घर में कम्पोस्टिंग की प्रक्रिया किसी बड़े बर्तन में या मिट्टी के हंडे में या घर पर कम्पोस्ट बनाए जाने वाले गड्ढों में किया जा सकता है। इसके निर्माण में कोई दुर्गन्ध पैदा नहीं होती और इस तरह आप, पर्यावरण सुरक्षा का एक योद्धा बनने की खुशी और गर्व पा जाते हैं।

वैश्विक ताप के इस युग में मौसम का मिजाज निरन्तर खराब होता जा रहा है। पृथ्वी दिन प्रतिदिन गरम होती जा रही है। हमारे उर्जा के स्त्रोत भी कम होते जा रहे हैं। लगातार जल भी कम होता जा रहा है। यह ग्रीन हाऊस गैस, जो मानव द्वारा बनाए गए उद्योगों एवं शहरी यातायात से उत्पन्न हुई है। इसके कारण 'ओजोन' स्तर लगातार क्षीण होता जा रहा है। नतीजा यह है कि पृथ्वी दिन-प्रतिदिन लगातार गर्म होती जा रही है। यह ऐसी प्रक्रिया है जो 'अप्रत्याशित' है। इन हालातों में व्यक्तिगत वाहनों की जगह सामुदायिक परिवहन वाले साधनों का इस्तेमाल करना चाहिए।

प्रकृति के नजारे सदाबहार नहीं होते कभी-कभी यह प्रकृति ही तबाही का कारण बन जाती है। पानी का उपयोग कम करें, और नल की लीकेज पर भी ध्यान दें। इस तरह पानी की बर्बादी को रोका जा सकेगा। बिजली बनाने के लिए पानी का उपयोग किया जाता है। अगर हम सौर ऊर्जा का प्रयोग करें और पानी का उपयोग कम करें तो पानी बना रहेगा और पृथ्वी भी हरी-भरी दिखाई देगी। पॉलीथीन यह एक ऐसी गंदगी है जो जलने के बाद भी वातावरण को हानि पहुँचाती है और न जलने के बाद सतह को। इसलिए हमें इसका उपयोग नहीं करना चाहिए। पुराने फोन्स को अपने पास संभाल कर न रखें क्योंकि पुराने फोन्स पड़े-पड़े ही रेडिएशन (विकिरण) फैलाते है। इसलिए उन्हें बाहर फेंक दें।

आमतौर पर गली-गली नुक्कड-नुक्कड कूड़े के ढेर लगे रहते है और कुछ लोग उस गंदगी को इकट्ठा कर जला देते है। इससे वातावरण में वायु प्रदूषण फैलने का खतरा बढ़ जाता है। इसलिए हमें उस गंदगी को पुनर्चक्रण को भेज देना चाहिए। बारिश का पानी नालियों में बह जाता है और हम उसकी परवाह नहीं करते। अगर बारिश का पानी बचाया जाए तो वो हमारे काफी काम आ सकता है और गरमियों के दिनों में पानी की किल्लत से बचा जा सकता है। धरती को बचाने ऐसे ही संवार कर रखनेके लिए

पेड़-पौधे लगाना जरूरी है। इसलिए अपने घर से ही पौधे लगाने की शुरुआत कीजिए। सुंदर व शुद्ध वातावरण के लिए पेड़-पौधे लगाना बहुत जरूरी है।

पर्यावरण से प्रदूषण से मुक्त होना संभव नहीं हुआ तो क्या हुआ। हम उसे निकालने की कोशिश आवश्य करेंगे। हमें सभी को जागरूक करना होगा। वसुंधरा बचाओ, इस नारे के साथ पर्यावरण की प्रवृत्ति में तेजी लानी होगी और पृथ्वी को हरा-भरा करने और रखने का प्रण करना होगा। प्रदूषण को कम करनेके लिए हमें मशीनों पर अंकुश रखना होगा। इस तरह हम प्रदूषण से छुटकारा पा सकते है।

''काल करे सो आज कर, आज करे सो अब
पल में परलय होइगी, बहुरि करेगा कब।''

वृक्ष धरती के हाथ हैं। धरती माता इन्हीं वृक्षरूपी हाथों के द्वारा हमें जल वायु तथा सुंदर व शुद्ध वातावरण प्रदान करती है। वृक्ष हमारी प्राकृतिक संपदा है। वक्षों को काटकर हम अपनी जीवनडोर काटते हैं। वृक्ष हमारी धरती की बहुमूल्य संपदा है। यदि हम अपनी पृथ्वी की भलाई चाहते तथा अपने आने वाली पीढ़ी के प्रति चिंतित हैं और हमारे मन में उनके भविष्य के प्रति दूरदर्शिता है तो हमें हमारे वृक्षरूपी धनों का संरक्षण करना चाहिए। वरना प्रकृति का विनाशक रूप हमारी खूबसूरत पृथ्वी हो तबाह कर देगा।

प्रकृति हमें सचेत करने के लिए मानो यह चेतावनी दे रही है -

''अरे ओ पापी मानव, क्यूँ पाप किए जा रहा है। जिस आँचल ने तुझको पाला, उसे फाड़ता जा रहा है। अभी यदि तू नहीं मानेगा, तो आगे पछताएगा। अपने ही हाथों से तू अपनी चिता जलाएगा।''

अब जब रहना ही है इस धरती पर तो क्यों न बीड़ा उठाया जाए इस धरती को रहने योग्य रखने का।

''कुदरत ने जो दिया धरा को,
सब उसका सम्मान करो।
न छेड़ो इन उपहारों को,
न कोई बुरा काम करो।
आओ हम सब मिलजुलकर,
इस धरती को ही स्वर्ग बनाएँ।
देकर सुंदर रूप धरा को,
कुरूपता को दूर भगा दें।
नैतिकता से काम करें।

और इस तरह हम भविष्य में धरती को रहने योग्य बना सकते हैं।

प्रेरक प्रसंग

बालक जार्ज वाशिंगटन की सच्चाई

जार्ज वाशिंगटन अमेरिका के एक किसान का लड़का था। वह जब छोटा था, तब एक दिन उसके पिता ने उसे एक कुल्हाड़ी दी। उसे लेकर जार्ज बगीचे में खेलने लगा। बगीचे में जो पेड़ देखता, वह उसी पर कुल्हाड़ी चलाता और हँसता। उसके पिता ने बड़ी कठिनता से प्राप्त करके एक फल का वृक्ष लगाया था। जार्जने उस पर भी कुल्हाड़ी चला दी। इस प्रकार कुल्हाड़ी से खेलकर वह खुशी-खुशी घर लौटा।

इधर उसका पिता बगीचे में पहुँचा तो उसने उस फल के पेड़ को कटा देखा। उसे बहुत दु:ख हुआ। उसने मालियों से पूछा, पर किसी ने भी पेड़ काटना स्वीकार नहीं किया। तब घर आकर जार्ज से पूछा। जार्जने कहा-'पिताजी! मैं खेल रहा था और पेड़ोंपर कुल्हाड़ी चला-चलाकर यह अजमा रहा था कि मुझसे पेड़ कटते हैं कि नहीं। उस पेड़ पर भी मैंने ही कुल्हाड़ी मारी थी और वह उसी से कट गया था।'

पिता ने कहा-'बेटा! तुझे इस कामके लिये तो मैंने कुल्हाड़ी नहीं दी थी-परंतु तेरी सच्ची बात पर मैं बहुत खुश हूँ। इससे मैं तेरा कसूर माफ करता हूँ। तेरी सच्चाई देखकर मुझे बड़ी ही प्रसन्नता हुई है।'

यही जार्ज वाशिंगटन बड़ा होकर अमेरिका का प्रख्यात प्रेसिडेंट हुआ था।

फुहार

एक बार एक हरियाणवी ताऊ बैंक में पैसा जमा करने गया ।

ताऊ : ले बेटा ये रुपए मेरे खाते में डाल दे ।

कॅशियर : ताऊ ये नोट तो नकली हैं ।

ताऊ : तन्ने के मतलब है, जावेंगे तो मेरे खाते में ।

एक लड़के को परीक्षा में कोई सवाल नहीं आता था तो उसने हर सवाल के नीचे

लाइन लगा दी और लिखा - ''स्क्रैच करके उत्तर पढ़ लो।''

एक औरत का पति खो गया, वह अपनी सहेली के साथ एफ.आई.आर. करने गई ।

पति के हुलिए में लिखा - ***Very handsome - blue eyes - six feet tall - wearing jeans.***

उसकी सहेली ने टोका, तेरा पति तो ठिगना, गंजा और भैंगा है । तू यह क्या लिखवा रही है?

औरत ने कहा... जो गया सो गया... आएगा तो ढंग का ।

एक व्यक्ति होटल में मुर्गा खाने गया लेकिन मुर्गे का अंग्रेजी शब्द भूल गया ।

वेटर : "What would you like to have Sir?"

व्यक्ति : "01 Plate Egg's Father."

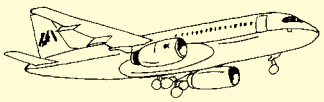

एक व्यक्ति पहली बार प्लेन में बैठा । जैसे ही प्लेन का अगला टायर ऊपर उठा वह पायलट को मारने लगा और बोला - ''साले, मैं पहले ही डरा हुआ हूँ और तू स्टंट दिखा रहा है।''

चिंटू : तेरा इतिहास का पेपर कैसा हुआ?

पप्पू : बहुत बुरा ..... गधों ने मेरे जन्म से पहले के प्रश्न पूछ रखे थे ।

एक पत्नी अपने पति को पीट रही थी ।

पड़ोसन बोली : क्यों मार रही हो बेचारे को ...?

पत्नी बोली : बेचारे नहीं हैं ये ।

इन्हें फोन किया था तो एक लड़की बोली ..

जिस व्यक्ति से आप संपर्क करना चाहते हैं वह अभी व्यस्त है ....!!!

एल. के. जी का लड़का : तू मुझसे शादी कलेगी?

लड़की : नी

लड़का : कल्ले न

लड़की : नी मे नी कलूंगी

लड़का : कल्ले, तेको टॉफी दूंगा ।

लड़की : इसीलिए तो नी कलनी, मेरी किसी और से कुरकुरे में बात हो गई है।

पत्नी : प्लीज़ बाइक तेज न चलाओ, मुझे डर लग रहा है ।

पति : अगर तुझे भी डर लग रहा है तो तू भी मेरी तरह आँखें बंद कर ले ।

पति पत्नी को पिकनिक पर श्मशान घाट ले गया।

पत्नी : यह कहाँ लेकर आ गए?

पति : अरे पगली, लोग मरते हैं यहाँ आने के लिए !!!

हम तो उसे इम्प्रेस करने के लिए गुनगुना रहे थे .... और वह पगली पास आकर बोली ..... तेरी आवाज अच्छी है कुल्फी बेचा कर .....

पत्नी : मैं घर छोड़कर जा रही हूँ।

पति : मैं भी निर्मल बाबा के पास जा रहा हूँ।

पत्नी : मुझे माँगने के लिए?

पति : नहीं। बताने के लिए कि कृपा आनी शुरू हो गई है।

गृहपत्रिका 'अभिव्यक्ति' (मार्च, 2015) का अंक मिला। गृहपत्रिका की विभिन्न गतिविधियों को हाईलाइट करने वाली विषयवस्तु बहुत सुंदर है। स्टाफ की व्यक्तिगत प्रतिभाएं अच्छी लगीं। श्री दत्तात्रेय श्रीगिरि के चित्र बहुत अच्छे लगे, 'नम्र बनो, कठोर नहीं' से अच्छी सीख मिलती है, प्रेरक प्रसंग - 'लौटाया धन' और 'बेटों वाली विधवा' प्रेरणादायक हैं।

धीरज डोले
राजभाषा अधिकारी,
टेलिकॉम फैक्टरी, मुंबई -400 088

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी गृहपत्रिका 'अभिव्यक्ति' के तैंतीसवें अंक में लिखे गए सभी लेख विशेषतया 'सम्पादकीय लेख', 'स्वास्थ्य' एवं 'मालवीय जी और हिंदी' बाबत दी गई जानकारी बहुत ही महत्वपूर्ण तथा प्रेरणादायक हैं।

सिद्धेश्वर डोंबे
सहायक निदेशक
वस्त्र आयुक्त का क्षेत्रीय कार्यालय,
सी.बी.डी. बेलापुर, नवी मुंबई

आपकी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का 33वाँ अंक प्राप्त कर अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। पत्रिका का हर भाग गहराई से अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि आपने पत्रिका के छापने में तन मन धन से प्रयास किया है। पत्रिका का आकर्षण फोटोग्राफी आदि इतनी सुंदर है कि मन को देखते ही बना है। हमें आशा है कि हमारे सभी सदस्य गण भी इसी प्रकार पत्रिका छापने का कार्य प्रारंभ कर देंगे जिससे कि पत्रिका के माध्यम से हम न केवल एक दूसरे को जानने समझने का शुभ अवसर प्राप्त कर पायेंगे बल्कि राजभाषा हिंदी के लागू करने का स्वप्न साकार करने में हमें पूर्णतया सफलता प्राप्त होगी।

सी. एल. यादव
(राजभाषा अधिकारी)
कार्यालय महाप्रबंधक दूरसंचार,
जिला-जामनगर

गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' प्राप्त हुई। धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित आलेख जने पत्तन में अंतरराष्ट्रीय स्तर का समुद्री प्रशिक्षण केंद्र, प्रतिरक्षी तंत्र हमारा सुरक्षा कवच, मावलीय जी और हिन्दी, बूंदों की संस्कृति रोचक एवं सूचनापरक लगे। आपके द्वारा अभिव्यक्ति का नियमित प्रकाशन हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में निश्चित ही एक सार्थक एवं सराहनीय प्रयास है। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु आपको शुभकामनाएं।

- डॉ. राकेश शर्मा
हिन्दी अधिकारी
राष्ट्रीय समुद्र विज्ञान संस्थान,
दोना पावला, गोवा - 403 004

'अभिव्यक्ति' पत्रिका में प्रकाशित प्रेरणात्मक एवं आकर्षक सामग्री और विषयपरक जानकारी पठनीय और ज्ञानवर्धक है, जो राजभाषा हिन्दी के प्रचार-प्रसार का एक सशक्त माध्यम होने की जिम्मेवारी भी बखूबी भी निभा रही है। 'अभिव्यक्ति' पत्रिका का सम्पादन, उसकी साजसज्जा एवं छपाई उच्च स्तरीय व सराहनीय है, जिसके लिए आप सहित आपके सभी सहयोगी बधाई के पात्र हैं।

- श्रीमती रजिया सुल्तान
पूर्व पार्षद, संरक्षक - सम्पादिका

गृह पत्रिका 'अभिव्यक्ति' के 33 वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। संस्थान में सम्पन्न विविध शासकीय तथा सामयिक क्रियाकलापों को अपने में समाहित करने में पत्रिका पूर्णतया सफल हुई है। प्रकाशित सभी रचनाएं उत्कृष्ट हैं किन्तु श्रीमती नेहा परितोष निगम द्वारा लिखित 'बूंदों की संस्कृति' विशेष रूप से पठनीय लेख बन पड़ा है। पत्रिका का संपादन एवं पृष्ठ सज्जा उत्कृष्ट है। पत्रिका के प्रकाशन से संबद्ध समस्त कार्मिकों को हार्दिक बधाई तथा आगामी अंकों की उत्तरोत्तर प्रगति हेतु शुभेच्छा।

वरुण यादव
(सहायक कार्यशाला प्रबंधक)
मशीनी औजार आदिरूप फैक्टरी,
अम्बरनाथ - 421 502

'अभिव्यक्ति' का मार्च, 2015 का अंक पाकर बहुत प्रसन्नता हुई। महामना मालवीय जी एवम् पूर्व प्रधानमंत्री श्री अटलबिहारी बाजपेयी को याद करते हुए प्रभारी अध्यक्ष का सन्देश प्रेरणादायक है। सम्पादकीय तो सराहनीय है ही। लेख एवम् कविताएं अच्छी हैं। साहित्य सम्राट प्रेमचन्द की कहानी - 'बेटों वाली विधवा' आज भी प्रासंगिक है। पढ़ते समय मन को झकझोर देती है। जो माँ बेटों को जन्म से बड़े होने तक अपना सब कुछ देकर पालन-पोषण करके बड़ा करती है वही बेटे अपने पैरों पर खड़े होते ही माँ के प्रति अपनी जिम्मेदारियों से भागने के साथ माँ से अमानवीय आचरण करते हैं। स्वास्थ्य विषयक जानकारी देने वाले लेख -'प्रतिरक्षी तंत्र हमारा सुरक्षा कवच' एवम् 'कोलेस्ट्राल' बहुत उपयोगी हैं। प्रेरक प्रसंग 'लौटाया धन' हमें ईमानदार रहकर कर्तव्य पालन करने की सीख देता है। न्यास के कार्य कलाप प्रशंसनीय हैं। 'अभिव्यक्ति' के द्वारा राजभाषा हिन्दी

का प्रचार प्रसार करने में सम्पादक जी का प्रयास सराहनीय है। इसके उत्तरोत्तर उन्नयन की मैं शुभकामना करता हूँ।

- विष्णु वर्मा
ग्राम ककोली, जिला-फैजाबाद (उ.प्र.)

आपके संस्थान की हिंदी पत्रिका 'अभिव्यक्ति' का तैंतीसवां अंक प्राप्त हुआ। सर्वप्रथम कवर पृष्ठ ने ही आनंदित और प्रभावित किया। आपके पोर्ट ट्रस्ट को मिले टॉलिक पुरस्कारों के लिए सभी को बधाई एवं शुभकामनाएं। पत्रिका में आपके संस्थान के विभिन्न क्रियाकलापों और उपलब्धियों को बहुत अच्छी तरह प्रस्तुत किया गया है। ईआरपी को हिंदी में जोड़ने का भी महत्वपूर्ण कार्य किया गया है। सामाजिक सरोकार के विषय जागरूकता, पर्यावरण, मूल्यांकन, गणतंत्र दिवस समारोह, समुद्री प्रशिक्षण, जैसी गतिविधियों को भी प्रस्तुत कर इन्हें महत्व प्रदान किया गया है। आपके कार्मिक भी रचनात्मक प्रतिभा से सम्पन्न हैं। प्रतिरक्षी तंत्र हमारा सुरक्षा कवच, कोलेस्टेराल, मालवीय जी और हिन्दी, अटल जी की प्रतिनिधि कविताएँ तथा अन्य रचनाओं ने भी प्रभावित किया। पत्रिका एक अच्छा दस्तावेज बनकर प्रस्तुत हुई है। आपको तथा पत्रिका से जुड़े सभी सहयोगियों को बधाई एवं शुभकामनाएं।

- डॉ. एस. बी. प्रभुदेसाई
उप महाप्रबंधक (राजभाषा)
गोवा शिपयार्ड लिमिटेड
वास्को-द-गामा, गोवा - 403 802

'अभिव्यक्ति' का मार्च, 2015 अंक पाकर बेहद प्रसन्नता हुई। जवाहरलाल नेहरू पोर्ट का रंगीन चित्र पत्रिका की सार्थकता को प्रमाणित करता है। आवरण पृष्ठ के ऊपर अंतरराष्ट्रीय समुद्री प्रशिक्षण व सतर्कता जागरुकता की झालकियाँ पत्रिका को आकर्षक बना रही हैं। संदेश में देश की दो महान विभूतियों महामना मदन मोहन मालवीय तथा अटल बिहारी वाजपेयी को भारत रत्न दिये जाने व हिन्दी व राष्ट्र सेवा में इनका योगदान को बेहद सरल व सरस भाषा में चित्रित करके प्रभारी अध्यक्ष, श्री नीरज बंसल जी ने अपने विवेक व कलम का कमाल दिखाया है। संपादकीय में हिन्दी को राजभाषा का दर्जा देने व देवनागरी लिपि को मान्यता प्रदान करने व सभी कार्यालयों में हिन्दी में कामकाज करने से हिन्दी राजभाषा का स्थान स्वयम् ही ले सकेगी। पत्तन समाचार पढ़कर मन गदगद हो गया। पत्तन न्यास में गणतंत्र दिवस समारोह का चित्रमय वर्णन बेहद अच्छा लगा। एथलेटिक चैम्पियनशिप प्रतियोगिता, समुद्री प्रशिक्षण केन्द्र की झलकियाँ बहुत अच्छी लगीं। पत्तन में ईआरपी सैप का कार्यान्वयन सराहनीय व लाभप्रद कार्य है। विष्णुवर्मा की रचना ठोकर व अटल जी की कविताएँ पढ़कर मन आनंन्द से भर गया। मुंशी प्रेमचन्द की कहानी 'बेटों वाली विधवा' मार्मिक व हृदय स्पर्शी कहानी है। प्रेरक प्रसंग, हंसगुल्ले, आपकी पत्रिका को संजीवनी देने का कार्य कर रहे हैं। पत्रिका का यह अंक स्तरीय जानकारीप्रद, प्रेरणाप्रद, ज्ञानप्रद, सराहनीय व संग्रहणीय है।

- विजयसिंह बलवान
जटपुरा (जहाँगीराबाद) बुलन्द शहर (उ.प्र.)

'अभिव्यक्ति' का अंक : 33 मार्च, 2015 प्राप्त हुआ, धन्यवाद। यह अंक सामाजिक, सांस्कृतिक, स्वास्थ्य, विज्ञान, नैतिकता का पक्षधर एवं वैचारिक जागरूकता का प्रहरी है। पत्रिका के प्रकाशन, संपादन प्रस्तुतीकरण में उच्च स्तरीय समृद्धि परिलक्षित होती है। समय के साथ सोच-विचार में बदलाव, उसी प्रकार लोक जागरण हेतु लोकहित में प्रकाशित महत्वपूर्ण सामग्री पाठक को एक समाधान का अहसास दिलाती है। जने पत्तन में अंतरराष्ट्रीय स्तर का समुद्री प्रशिक्षण केंद्र जानकारी युक्त होते हुए स्वास्थ्य संबंधी डॉ. प्रशांत केलकर का लेख 'प्रतिरक्षी तंत्र हमारा सुरक्षा कवच' तथा डॉ. मिलिंद भोसकर का 'उच्च रक्तचाप में लापरवाही के दुष्परिणाम' संग्रहणीय एवं बोधप्रद हैं। 'बेटों वाली बिधवा' कहानी मानवीय जन-जीवन की यथार्थ अनुभूति से परिचित कराती है। पत्रिका के माध्यम से कार्य के प्रति दृढ़ संकल्प एवं आत्मविश्वास दृष्टिगोचर होता है। उत्तरोत्तर उन्नति, प्रगति हेतु मनपूर्वक शुभेच्छा।

प्रा. डॉ. प्रकाश वि. जीवने
नागपुर - 440027

पिता : बेवकूफ.....शुक्ला जी की बेटी को देख, फर्स्ट आई है स्कूल में।
लड़का : और कितना देखें ? उसे देख - देखकर तो फेल हो गए।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह की झलकियाँ

जनेप न्यास तथा महाराष्ट्र मैरीटाइम बोर्ड द्वारा बनाए जाने वाले *सेटेलाइट पोर्ट* के समझौता ज्ञापन के *हस्ताक्षर समारोह* की झलकियाँ

मुद्रक: ACUMEN मुंबई. मो: 9819858987